विष्य

त्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

मारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं,
भय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

हाबाद—विजय दशमी—२ अक्टूबर, १९३० | संख्या १, पूर्ण संख्या १

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' के प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !
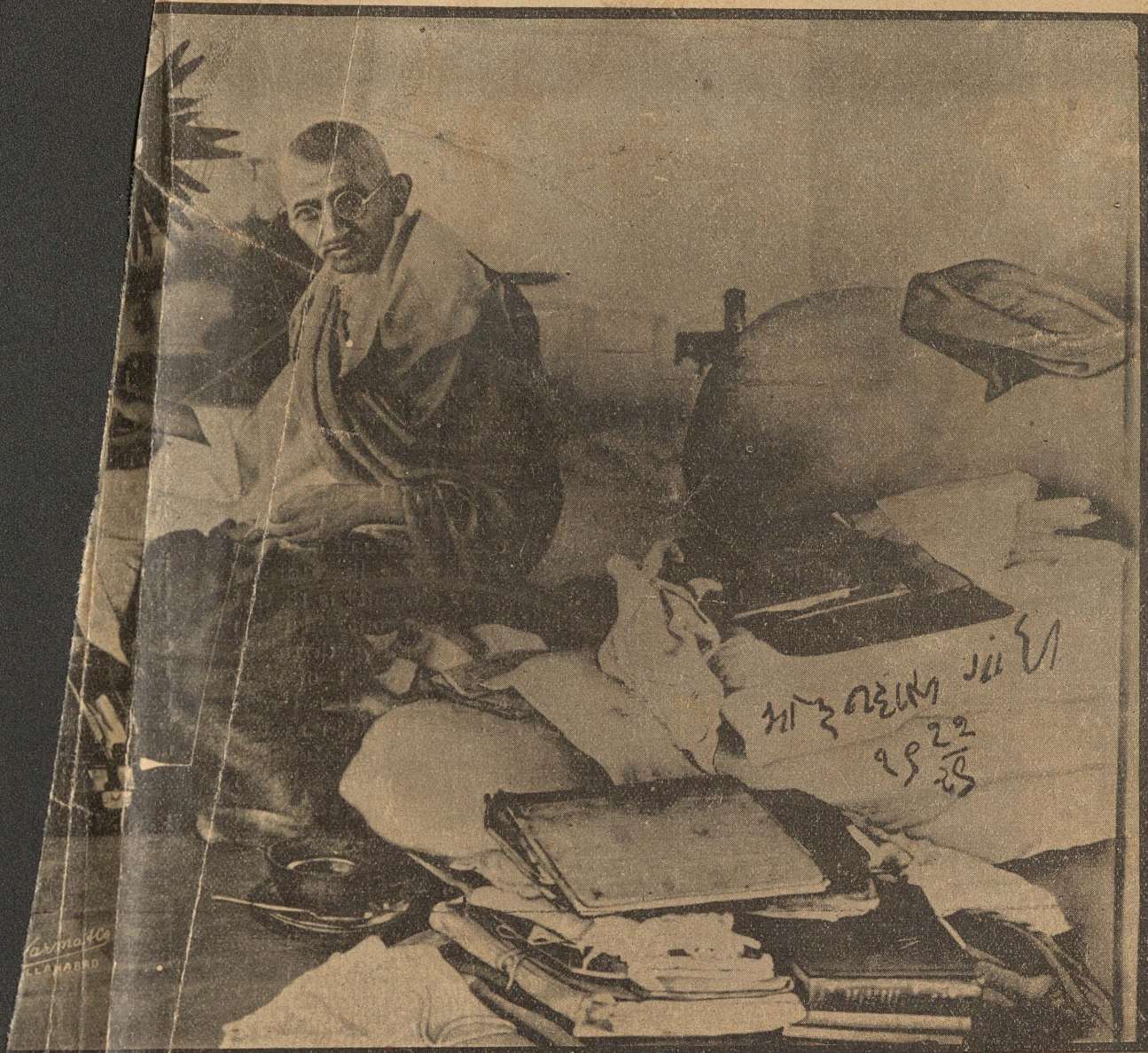
ो चीज़ों की बस क़द्र हो अपने दिल में ! तार खद्दर का हम मिस्ल रगों हो जाये !!
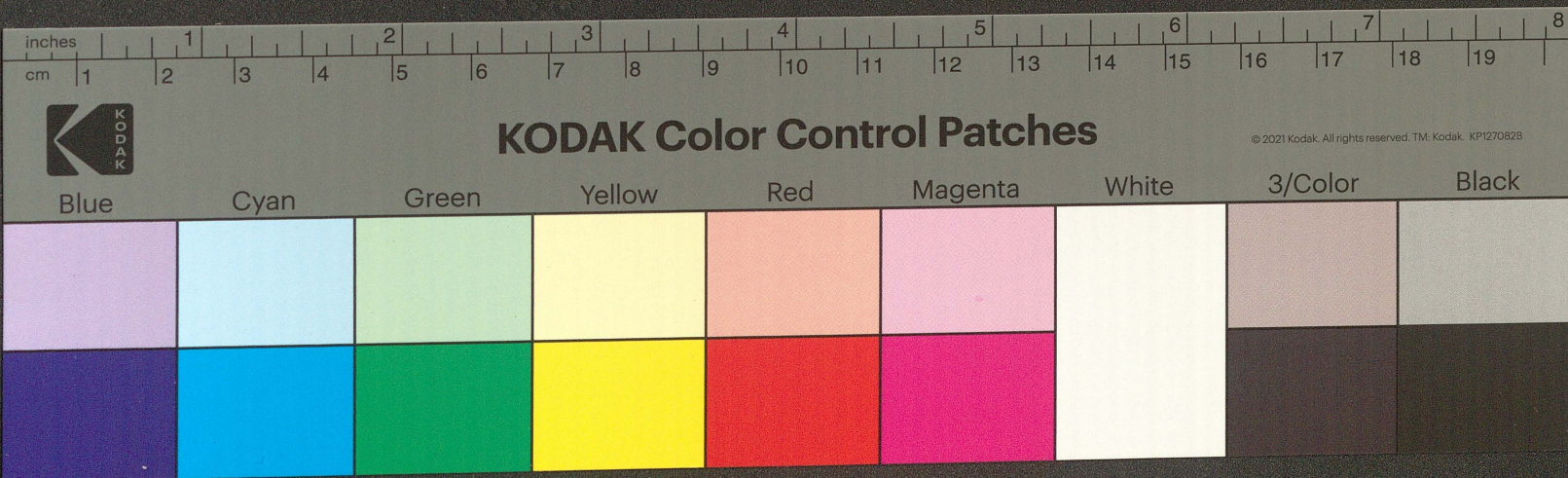
आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says:

Dear Mr Saigal

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & Visit to the Temple are particularly charming pictures, life like & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given & will continue to give me a great deal of pleasure.

Yours Sincerely

B J Dalal.

The only Point where Newspapers, Leaders and Indi

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six monthly
Rs. 3/8

The 'CHAN

A magazine which has raised consciousn

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

***

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

***

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

***

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

***

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

***

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

***

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

***

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

***

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

***

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

***

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

***

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

M

the
and
be a

Mun
Le

I
The w
thrice
do it.
the rig
it does
antists
imitator
trust it
the fact
education
I sincere
preservati
woman-hoo
usefulness.

Prof. M. F
Urdu, Al

I am gla
edition of th
I wish this m
I understand
devoted to the
India. In ou
there is no cau
I do hope that
garb will bring
people who are
and are averse

Dr. Sir Tej Baha
D., Ex-Law M
ment of India :

I wish it every

Mr. M. M. Verma,
Education, Bika

I need har
been following the ca
nal with keen interes
tremely refreshing ou
which it is sure to
most important of
Reform in India . . .

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशित विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशन होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ || इलाहाबाद—विजय दशमी—२ अक्टूबर, १९३० || संख्या १, पूर्ण संख्या १

'भविष्य' का आदर्श और कार्यक्रम

"भविष्य" का जन्म ऐसे समय में हो रहा है, जब कि हमारा देश एक बहुत ही सङ्कटमय और साथ ही महत्वपूर्ण युग में होकर गुज़र रहा है। अपने जन्म-सिद्ध अधिकार 'स्वराज्य' के लिए बहुत समय तक प्रार्थना, चेष्टा और आन्दोलन करने पर भी जब भारतवासियों को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त न हुई तो उन्होंने विदेशी शासन से सम्बन्ध तोड़ कर पूर्ण स्वतन्त्र होने का निश्चय कर लिया और इसके लिए सविनय आज्ञाभङ्ग अथवा सत्याग्रह का सहारा लिया। गवर्नमेण्ट ने भी अपनी सत्ता की रक्षा करने का दृढ़ सङ्कल्प प्रकट किया और लड़ाई छिड़ गई। शीघ्र ही यह संग्राम देश के कोने-कोने में व्याप्त हो गया और जोशीले नवयुवक ही नहीं, वरन् वृद्ध, बालक और महिलाएँ तक इसके रङ्ग में रँग गईं। आज भारत का शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा, जो इस संग्राम से अनजान हो और जिस पर इसका किसी न किसी रूप में असर न पड़ा हो। भारतवासी ही नहीं, विदेशी भी इसके प्रभाव से नहीं बच सके हैं और आज आप संसार के किसी भी राजनीति की चर्चा करने वाले पत्र को उठा लीजिए, भारतीय सत्याग्रह-संग्राम का कुछ न कुछ हाल उसमें आपको मिल ही जायगा। दिन पर दिन इस संग्राम की गम्भीरता और भीषणता बढ़ती जाती है और कुछ समय पश्चात् हमको किस परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, इसकी कल्पना तक कर सकना कठिन है।

समाचार-पत्रों और प्रेसों को इस सङ्कटकाल में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। गवर्नमेण्ट समझती है कि पत्रों और प्रेसों द्वारा ही आन्दोलन बढ़ता है और इनको दबा देने से वह अपङ्ग हो जायगा! इस धारणा के वशीभूत होकर वह न्याय-अन्याय का विचार ताक़ पर रख कर तरह-तरह के दमनकारी उपायों द्वारा समाचार-पत्रों का गला घोंट देना चाहती है या उनको इस प्रकार दबा हुआ और भयभीत रखना चाहती है कि उनकी आवाज़ भी न सुनाई दे!

ऐसे आपत्ति-काल में किसी नवीन समाचार-पत्र के प्रकाशित करने का उद्योग करना, यदि पूरा पागलपन नहीं, तो जान बूझ-कर आग में कूदना ज़रूर है। इस कार्य की कठिनाइयों और ख़तरों का अनुभव वे ही कर सकते हैं, जिन्होंने कभी इस कण्टकाकीर्ण क्षेत्र में पैर रक्खा है और इसके कड़वे फलों को चक्खा है। पर साथ ही यह भी सच है कि पत्रों की आवश्यकता जितनी अधिक ऐसे समय में हुआ करती है, उतनी कभी नहीं होती। यह उत्तरदायित्व को समझने वाले पत्रों का ही कर्तव्य है कि ऐसे हलचल के समय में, जब कि आँखों के सामने नित्यप्रति रोमाञ्चकारी घटनाएँ घटती हैं और हृदय को दहला देने वाले दृश्य देखने में आते हैं, तब साधारण लोगों को सुधबुध बिसार देने से बचावें। उन्हें न तो भय से भयभीत होकर मनुष्यत्व को तिलाञ्जलि देकर भेड़ और बकरी बनने दें और न क्रोध तथा रोष से पागल होकर जङ्गली पशु! ऐसे विकट अवसरों पर निष्पक्ष और निर्भीक नीति वाले समाचार-पत्र ही जनता के ज्ञान और विवेक की रक्षा कर सकते हैं और उसे आत्म-गौरव के विरुद्ध कोई काम करने से बचा सकते हैं।

"भविष्य" के जन्म का यही कारण और उद्देश्य है। यह जनता को सत्य और न्याय पर डटे रह कर अपने जन्मसिद्ध अधिकारों के लिए वीरतापूर्वक संग्राम करना सिखलाएगा। आत्म-सम्मान दुनिया में बहुत बड़ी चीज़ है और सैकड़ों वर्षों की ग़ुलामी के फलस्वरूप भारतवासी इस गुण से प्रायः शून्य होगए हैं, और बात-बात में दब जाना तथा अपमान को चुपचाप बर्दाश्त कर लेना उनका स्वभाव बन गया है। इसी आत्म-सम्मान की कमी से वे अपनी मातृभूमि को पराधीन देख कर व्याकुल नहीं हो जाते और न उनको विदेशियों के शासन में रहना अपमान-जनक प्रतीत होता है। "भविष्य" भारतीय जनता में आत्म-सम्मान का वह प्रचण्ड भाव जाग्रत करने की चेष्टा करेगा, जो कि लोगों की आत्मा को तलमला दे और ग़ुलामी की दशा को उनके लिए असह्य बना दे! हमारे यहाँ दूसरी बड़ी कमी राष्ट्रीयता के भाव की है जो आत्म-सम्मान-शून्य लोगों में प्रायः पाई जाती है। इसके कारण हम जैसा चाहिए सङ्गठित रूप से काम नहीं कर सकते और साधारण से साधारण बातों में ही हममें फूट पड़ जाती है।

पर इन बातों से यह न समझ लेना चाहिए कि "भविष्य" भारतवासियों को किसी तङ्ग दायरे में बन्द कर देना चाहता है अथवा वह उनको—'हमी सब कुछ हैं—हमारी सभ्यता ही सर्वश्रेष्ठ है—दुनिया के सब देश हमारे शिष्य हैं'—का पाठ पढ़ाना चाहता है! हम राष्ट्रीयता के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीयता के भी क़ायल हैं, और हमारा विश्वास है कि विश्वव्यापी शान्ति और कल्याण की रक्षा तथा संसार में रहने वाले समस्त मनुष्यों और जातियों की—जिनमें हम भी शामिल हैं—उन्नति और वृद्धि के लिए यह परमावश्यक है कि दुनिया के विभिन्न देशों में मेल-मिलाप बढ़े और भाईचारे का बर्ताव होने लगे। जिस प्रकार हम अपने ऊपर विदेशी शासन होने से व्याकुलता अनुभव करते हैं, उसी प्रकार हम संसार के किसी भी देश पर विदेशी शासन का रहना निन्दनीय और घृणित समझते हैं। इसलिए केवल उन देशों को छोड़ कर, जो अपने स्वार्थ-साधन के लिए हमारे साथ अन्याय और अत्याचार का बर्ताव करते हैं और हमको तरह-तरह से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, हम समस्त राष्ट्रों के साथ—चाहे वे एशियाई हों, चाहे यूरोपियन और चाहे अमेरिकन—एकता, समता और भ्रातृभाव का बर्ताव करने के अभिलाषी हैं।

भारतवर्ष की सबसे बड़ी समस्या दरिद्रता की है। जिनको हम अपना अन्नदाता कहते हैं अथवा जो हमारे हाथ-पैर हैं, उन किसान-मज़दूरों की ही अकथनीय दुर्दशा है!! रात-दिन परिश्रम करते रहने पर भी सुखपूर्वक रहना तो दूर, वे सूखा अन्न और मोटा कपड़ा भी पर्याप्त मात्रा में नहीं पाते। उनकी गाढ़ी कमाई का कुछ हिस्सा लुटेरे छीन लेते हैं और कुछ ठग लोग उड़ा लेते हैं और उनको तथा उनके स्त्री-बच्चों को अक्सर रोटियों के भी लाले पड़े रहते हैं! उनकी मलिन सूरत, हड्डियाँ निकले हुए बदन और फटे-पुराने चिथड़ों को देख कर, और साथ ही उनकी आकृति से प्रकट होने वाले घोर निराशा और उदासी के भाव को देख कर शायद ही ऐसा कोई पाषाण-हृदय होगा जिसकी आँखों में आँसू न आ जायँ। इन देश के 'सर्वस्व'—आज दर-दर ठुकराए जाने वाले लोगों की—सेवा करना "भविष्य" अपना सब से बड़ा कर्तव्य समझेगा। वह उन लोगों का निडर होकर विरोध करेगा, जो इन सीधे और शान्त लोगों को लूटते और ठगते हैं। इन पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों की करुण-कहानी का नग्न-चित्र वह संसार के सामने उपस्थित करेगा और प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा वह उनको, उनके वास्तविक रूप और अत्याचार का निशान मिटा देने को तैयार करेगा।

हमारा देश केवल आर्थिक विषमता से ही पीड़ित नहीं है, वरन् यहाँ की सामाजिक विषमता भी बड़ी दुःखदायक है। इसके कारण भारतमाता की कई करोड़ सन्तानों को बिना किसी अपने दोष के, पशुओं से भी अधम और कष्टपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है! हमारे यहाँ के अधिकांश कुलीन और उच्च जाति के समझे जाने वाले लोग उनके साथ जैसा निर्दयता और अन्याय का बर्ताव करते हैं, उसे देख कर ख़ून गरम हो उठता है! उन अभागों को इतना अधिक दबाया और कुचला गया है कि आत्म-सम्मान का भाव उनमें तिल भर भी शेष नहीं रहा है और वे अपने साथ होने वाले गर्हित और घृणित व्यवहार को स्वाभाविक-सा समझने लग गए हैं! सच पूछा जाय तो हम अपने अछूत-नाम-धारी भाइयों के साथ जैसा मनुष्यता-विहीन और असभ्यतापूर्ण बर्ताव करते हैं, उससे हमारे स्वराज्य अथवा स्वाधीनता के दावे का महत्व बहुत कुछ घट जाता है; जब हम अपने देश-भाइयों के साथ इस प्रकार का जघन्य बर्ताव कर सकते हैं तो अन्य देशों के निवासी हमारे साथ जो कुछ करें, थोड़ा है। यदि हम वास्तव में स्वराज्य के योग्य बनना चाहते हैं, तो हमको शीघ्र से शीघ्र इस कलङ्क से छुटकारा पाना होगा। हम इस पर विशेष ज़ोर इसलिए देते हैं कि अन्य कामों की तरह इसमें बाहरी बाधाएँ अधिक नहीं हैं और यह ख़ास कर हमारा मानसिक परिवर्तन हो जाने और मूर्खता-जन्य अहङ्कार को त्याग देने से ही बहुत कुछ पूरा हो सकता है। "भविष्य" इस पिशाचिनी प्रथा के विरुद्ध सदैव खड्गहस्त रहेगा और जात-पाँत के ढोंग की सदा पोल खोलता रहेगा। उसका उद्देश्य समस्त मनुष्यों के बीच सामाजिक एकता का प्रचार करना रहेगा और जातिगत तथा वंशगत उच्चता के सम्मुख वह कभी सर झुकाने को तैयार न होगा।

अछूतों के समान ही हमारे समाज का एक और अङ्ग महिला-वर्ग—सामाजिक बन्धनों में जकड़ा हुआ, लाचारी और बेकसी की हालत में पड़ा है ! उनकी स्थिति ऐसी असहाय और परतन्त्रतापूर्ण हो गई है कि वे अधिकांश में हमारे गले का बोझ बनी हुई हैं और उनके कारण हमारी उन्नति की गति में पग-पग पर रोड़ा अटकता है। यह जानते हुए भी कि वे राष्ट्र के बच्चों की जननी हैं और उनके दुर्दशाग्रस्त और कुसंस्काराच्छन्न रहते हुए यहाँ का पुरुष-समाज कभी श्रेष्ठ और उन्नत नहीं बन सकता, हमने उनको अवनति के गढ्ढे में डाल रक्खा है, और उससे बाहर निकलने में सहायता और उत्साह देना तो दरकिनार, ज़्यादातर लोग भारतीय सभ्यता की रक्षा इसी में समझते हैं कि उनको जहाँ की तहाँ पड़ी रक्खा जाय ! उनके सुधार की छोटी-छोटी बातों के लिए लोग शास्त्रों और स्मृतियों की ओर दौड़ते हैं, मानो ये उनको दासता के बन्धन में रखने वाले दमनकारी क़ानून हैं और पुरुष हमेशा इसी फ़िक्र में रहते हैं कि महिलाओं के किस विद्रोहजनक कार्य को इन धार्मिक दण्ड-संग्रहों (प्रोसीजर कोड) की दफ़ा द्वारा रोका जाय ! 'भविष्य' की नीति इस सम्बन्ध में क्या रहेगी, यह जनता को बतलाना हमारे लिए ज़रूरी नहीं है। इस सम्बन्ध में "चाँद" ने पिछले आठ वर्षों से जो काम किया है, वही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हम इस प्रश्न को कितनी गम्भीर निगाह से देखते हैं और महिला-समाज के उत्थान के लिए हम कितने व्यग्र हैं।

राजनीतिक स्वतन्त्रता और सामाजिक स्वतन्त्रता के समान ही "भविष्य" का लक्ष्य विचार-स्वतन्त्रता के प्रचार पर भी रहेगा। क्योंकि गुलाम-मनोवृत्ति के लोगों का राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर सकना कठिन है और अगर किसी तरह वह मिल भी जाय तो उससे लाभ उठा सकना बहुत कम सम्भव है। यह विचार-स्वतन्त्रता की कमी का ही फल है कि हमारे देश में मत-मतान्तरों के इतने झगड़े फैले हुए हैं और उनके कारण हमारी राजनीतिक उन्नति में बड़ी बाधा पड़ रही है। हिन्दू-मुसलमान, जो एक ही खेत का अन्न खाते हैं और एक ही कुएँ का पानी पीते हैं, अगर मन्दिर या मसजिद अथवा गीता और क़ुरान के नाम पर लड़ें तो क्या यह विचार-स्वतन्त्रता के अभाव का सूचक नहीं है ? कोई भी विचारशील मनुष्य इस बीसवीं शताब्दी में, जब कि मानव-जीवन आर्थिक सूत्र द्वारा बँध कर एक रूप होता जा रहा है और उससे भी आगे बढ़ कर साम्यवाद के द्वारा मनुष्यों के समस्त भेद-भावों के लोप हो जाने की सम्भावना हो रही है, किस तरह धर्म-कर्म के इन थोथे झगड़ों के लिए माथा फोड़ सकता है ? सच तो यह है कि ऐसे लोग जानते ही नहीं कि 'धर्म' क्या चीज़ है और मनुष्य को किस प्रकार उसका पालन करना चाहिए।

"भविष्य" की आकांक्षा है कि भारतवासी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक—सभी क्षेत्रों में उन्नति करें और इन क्षेत्रों में जो दोष, जो दुर्गुण, जो कुप्रथाएँ आ घुसी हैं उनको बाहर निकाल दें। इस उद्देश्य की पूर्ति में वह अपनी समस्त शक्ति और साधनों को लगा देगा। उसका जन्म राष्ट्रीय कल्याण के लिए हुआ है और इसी के लिए—अगर आवश्यक हो तो—उसका अन्त भी होगा। सत्य और न्याय—निर्भीकता और निष्पक्षता उसके मूल-मन्त्र होंगे, और इन पर दृढ़ रहता हुआ देश और जनता की अधिक से अधिक सेवा करना ही वह अपना एकमात्र कर्तव्य समझेगा। हम उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अपने इन गम्भीर उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता और बल प्रदान करे। इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक से प्रेम और सहयोग की भी हम पूर्ण आशा रखते हैं।

—रामरखसिंह सहगल, सञ्चालक "भविष्य"

—पं० मोतीलाल जी नेहरू जेल से छोड़े जाने पर स्वास्थ्य-सुधार के लिए मसूरी गए हैं। वहाँ डॉक्टर टी० बी० बूचर उनका इलाज कर रहे हैं। पहिले पण्डित जी बहुत-कुछ अच्छे थे, पर २२ सितम्बर से फिर उन पर मलेरिया का आक्रमण हुआ है। डॉक्टर का कहना है कि उनकी हालत तो ख़राब है, किन्तु विशेष चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

—अतरौली (अलीगढ़) में कॉङ्ग्रेस की तरफ़ से एक अदालत क़ायम की गई है। इसमें जो पहिला अभियोग आया उसमें प्रतिवादी को अपराधी पाया गया और उस पर एक रुपया जुर्माना किया गया। कहते हैं कि लोगों ने उसके फ़ैसले के इस सस्ते ढङ्ग को ख़ूब पसन्द किया है।

—इटावे में राव नरसिंह राय, और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के बीच समझौता हो जाने के कारण वहाँ के गवर्नमेण्ट इण्टरमिडिएट कॉलेज पर से धरना उठा लिया गया है और जो विद्यार्थी कॉलेज से निकाल दिए गए थे वे अब फिर से कॉलेज में भरती कर लिए गए हैं। कॉलेज के कम्पाउण्ड में राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया गया है और विद्यार्थी स्वतन्त्रता से राष्ट्रीय गीत गाते हैं।

—कुछ दिन हुए सहगल जी ने इङ्गलैण्ड जाने के लिए पासपोर्ट पाने की प्रार्थना की थी। सहगल जी ने यह पासपोर्ट 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' पुस्तक के हाईकोर्ट वाले फ़ैसले के विरुद्ध प्रिवी कौन्सिल में अपील करने और जल-वायु परिवर्त्तनार्थ माँगा था और स्वयं इलाहाबाद के पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट ने उस पर सिफ़ारिश की थी। अब २४ सितम्बर को इलाहाबाद के कलक्टर ने पत्र लिख कर सहगल जी को सूचित किया है कि "गवर्नर-इन-कौन्सिल ने उन्हें पासपोर्ट न देने का फ़ैसला कर लिया है।"

—कानपुर में श्री० हरनारायण टण्डन, रामस्वरूप दीक्षित आदि २१ सत्याग्रही स्वयंसेवकों को ३-३ मास की और श्री० गङ्गासहाय पाण्डे को छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—पीलीभीत से श्री० मकुन्दलाल अग्रवाल लिखते हैं कि वे सालों से अदृश्य और नाशकारी प्रेतों की करतूतों से बहुत दुःखी हैं। एक साल पहिले उन्होंने एक तीन साल के लड़के को कुएँ में फेंक कर मार डाला था और एक तीन माह के बच्चे को एक तिमञ्ज़िले मकान के छप्पर के ऊपर छोड़ दिया था, परन्तु किसी प्रकार उसकी जान बच गई। आँखों से देखते-देखते खाने-पीने की चीज़ें, बर्तन और रुपया ग़ायब हो जाता है, ओलों की नाईं दिन-रात ईंटें बरसते रहते हैं और दरवाज़े खटखटाए जाते हैं। पिछले एक सप्ताह में तो उन्होंने खूँटियों पर टँगे हुए और स्टील ट्रङ्कों में रक्खे हुए एक हज़ार वस्त्र जला कर राख कर दिए। श्री० अग्रवाल ने इस सम्बन्ध में कुछ जानने वालों से रक्षा की याचना की है।

—पिलखुआ (मेरठ) में एक २७ वर्ष के नवयुवक ब्राह्मण ने नहर में कूद कर आत्म-हत्या कर ली। वह एक कपड़े की दुकान में नौकर था और उसने दुकान के दो सौ रुपए किसी जातीय काम में ख़र्च कर दिए थे। जब उनके लिए सख़्ती के साथ तक़ाज़ा किया गया तो उसने अपनी जान दे दी।

—रिवाड़ी में १६ तारीख़ को रात के ११ बजे पुलिस के ७० सिपाहियों ने कॉङ्ग्रेस का ऑफ़िस घेर लिया और ३ बजे तक उसकी तलाशी लेते रहे। वहाँ पर जितने काग़ज़ात, किताबें, झण्डे आदि मिले उन सबको वे उठा ले गए। पुलिस ने कई ताले भी तोड़ डाले।

—भूपाल के नवाब अलीगढ़ मुसलिम यूनीवर्सिटी के चान्सलर चुने गए हैं।

—श्री० सुभाषचन्द्र बोस और श्री० जे० एम० सेन गुप्ता २३ तारीख़ को जेल से छोड़ दिए गए। श्री० सुभाषचन्द्र ने कलकत्ता-कॉरपोरेशन के मेयर का पद ग्रहण कर लिया है।

—मुसलमानों के सुप्रसिद्ध नेता, कलकत्ता यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सलर और असेम्बली के सदस्य डॉ० सुहरावर्दी ने एक विज्ञप्ति में गोलमेज़ परिषद् लन्दन में न होकर, दिल्ली में होने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया है। उनका कहना है कि यदि कॉन्फ्रेन्स दिल्ली में न हो तो उसकी तारीख़ बढ़ा देना चाहिए। उनकी सलाह से कॉन्फ्रेन्स के डेलिगेट भारत की संस्थाओं के प्रतिनिधि नहीं हैं।

—दमदम (कलकत्ता) की जेल में कम भोजन मिलने के कारण क़ैदियों में बड़ा असन्तोष फैला है। क़ैदियों ने कोठरियों के भीतर जाने से इनकार किया, जिससे वार्डरों को बल-प्रयोग करना पड़ा और तीन क़ैदियों को चोटें आईं।

—हाल ही में कलकत्ता-कॉरपोरेशन ने संसार के अद्वितीय भारतीय तैराक श्री० पी० के० घोष का स्वागत किया है। आप लगातार ६७ घण्टे तक कलकत्ते के कार्नवालिस स्क्वायर वाले तालाब में तैरते रहे। संसार में आज तक ६० घण्टे से अधिक कोई पानी में नहीं रहा।

—बङ्गाल सरकार ने एक दुभाषिया दैनिक समाचार-पत्र श्रीयुत एच० टर्नर बैरेट आई० सी० एस०, प्रेस-ऑफ़ीसर के सम्पादकत्व में प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया है। उसकी एक प्रति की क़ीमत एक पैसा रक्खी गई है। पत्र में कलकत्ते के पिकेटिङ्ग और उसके प्रभाव सम्बन्धी समाचार रहते हैं।

—पञ्जाब प्रान्तीय गज़ट में प्रकाशित १६ सितम्बर की एक विज्ञप्ति के अनुसार पञ्जाब-गवर्नमेण्ट ने सम्पूर्ण प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमेटियों को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया है। इसके अनुसार पञ्जाब के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध शहरों की कमेटियों के ऑफ़िसों और उनके कार्यकर्ताओं के घर की तलाशियाँ ली गई हैं; और प्रायः सभी स्थानों से पुलिस काग़ज़-पत्र, बुलेटीन, रिपोर्ट और अन्य आवश्यक सामान उठा ले गई है। गवर्नमेण्ट का विरोध करने के लिए कॉङ्ग्रेस ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया है। एक-एक आदमी सत्याग्रह करेगा, जो 'युद्ध-समिति' का डिक्टेटर कहलाएगा।

—२४ सितम्बर का समाचार है कि रलियाराम नाम के कपड़े के दुकानदार ने विदेशी कपड़ा बेचने के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस कमेटी की शर्तों को स्वीकार नहीं किया और इसलिए उसकी दुकान की पिकेटिङ्ग की जा रही है। अब तक १४ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। औरतों का एक दल रलियाराम के घर के सामने जाकर 'स्यापा' करने लगा। वहाँ भी पुलिस ने नौ औरतों और छः मर्दों को

पकड़ा। दो महिला-कार्यकर्त्री २३ तारीख़ को पकड़ी जा चुकी हैं।

—लाहौर कॉङ्ग्रेस कमेटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट श्री० ग़ुलाम मुहम्मद को आठ महीने की सख़्त क़ैद और २५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई। स्वयंसेवक दल के कप्तान हामिसदीन को २ हज़ार रुपए की ज़मानत न देने पर एक साल की सज़ा दी गई।

—लाहौर में श्री० महाराजदीन कुम्हार प्रान्तीय कौन्सिल की मेम्बरी के उम्मेदवार थे। वे मलिक मुहम्मद-दीन के मुक़ाबले में हार गए। मलिक को ४१३० और कुम्हार को ५३४ वोट मिले। इस हार से कॉङ्ग्रेस दल में बड़ा असन्तोष फैला है।

—दिल्ली के तीसरे डिक्टेटर और सुप्रसिद्ध बैरिस्टर श्री० आसफ़अली को छः माह की सादी क़ैद की सज़ा सुना दी गई। वे 'ए' क्लास में रक्खे गए हैं। श्री० ब्रज-कृष्ण चाँदीवाल, एम० के० देव और धर्मवीर भी उन्हीं के साथ सत्याग्रह आश्रम में गिरफ़्तार किए गए थे। उन्हें तीन-तीन मास की सज़ा हुई। २१ कॉङ्ग्रेस वालण्टि-यरों को तीन-तीन माह की सख़्त सज़ा और पचास-पचास रुपया जुर्माना हुआ। २५ नाबालिग़ वालण्टियर चेतावनी देकर छोड़ दिए गए।

—पाठक यह भूले न होंगे कि बारडोली ताल्लुक़े के किसानों ने यह निश्चय किया था कि जब तक महात्मा गाँधी या सरदार वल्लभ भाई पटेल उनसे लगान देने के लिए न कहेंगे, तब तक वे लगान न देंगे और यदि गवर्नमेण्ट उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही करेगी तो वे अपने गाँव छोड़ कर रियासतों में चले जायँगे। अपने इस निश्चय के अनुसार ताल्लुक़े के सारमान, केदाद, बड़ानेर और बालोद गाँवों के निवासियों ने अपनी चल-सम्पत्ति सहित गाँव छोड़ना प्रारम्भ कर दिया है। कहा जाता है कि डिप्टी पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट की कार्यवाहियों के कारण ही, जो वहाँ राजनैतिक परिस्थिति के कारण नियुक्त हुए हैं, लोगों ने अपने गाँवों का छोड़ना प्रारम्भ किया है।

—१७ सितम्बर को बम्बई में सी० आई० डी० महकमे के लोगों ने पुलिस की सहायता से ज़ब्त साहित्य का पता लगाने के लिए बहुत से घरों और ऑफ़िसों पर धावा किया। इस सम्बन्ध में पुलिस ने मलावार-हिल पर रहने वाले दो अमेरिकनों की भी तलाशी ली। अमेरिकनों को छोड़ कर, सबके यहाँ से वह कुछ छपे पत्रों के साथ प्राइवेट पत्र भी ले गई।

—कराची शहर से श्री० गोबरगड़ा नाम का स्कूल का चपरासी बम्बई कौन्सिल का मेम्बर चुना गया है। उसे २८५७ वोट मिले और उसके विरोधी को, जो वकील और म्युनिसिपैलिटी का सदस्य है, केवल ६२८ वोट मिले।

—हैदराबाद (सिन्ध) में श्री० दालू मोची को ३३७२ और उसके विरोधी, मि० परमानन्द को जो सर-कारी वकील हैं, ४३९ वोट मिले। श्री० दालू मोची बम्बई-कौन्सिल के सदस्य घोषित कर दिए गए।

—सीमा प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमेटी के प्रेज़िडेण्ट डॉक्टर घोष, जो पेशावर जेल में अपने दो वर्ष के कठिन कारावास का दण्ड भोग रहे थे, बीमारी के कारण पेशावर की लेडी रीडिङ्ग अस्पताल में लाए गए हैं। वहाँ उनका स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

—काश्मीर-नरेश ने [illegible] राज्य को राष्ट्रीय आन्दोलन की छूत से बचाने के लिए आज्ञा निकाली है कि वहाँ ब्रिटिश इण्डिया के आन्दोलन के सम्बन्ध में कोई सभा या भाषण न हों, राज्य के नौकरों को चेतावनी दी गई है कि वे अपने लड़कों को राजनीतिक आन्दोलन से अलग रक्खें। साथ ही विद्यार्थियों को राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने तथा राष्ट्रीय नारे लगाने से रोका गया है।

—बीकानेर के सुप्रसिद्ध दानी सेठ रामगोपाल तथा रावबहादुर शिवरतन मोहता ने जोधपुर के महाराजा साहब को एक लाख रुपया अनाथ और दीन स्त्रियों के आश्रय के लिए एक भवन स्थापित करने को दिया है। महाराजा साहब ने इस दान को धन्यवाद सहित स्वी-कार कर लिया है और इसके उपयोग के लिए योजना तैयार की जा रही है।

—झाँसी के स्वदेशी प्रेस से ५०० रुपए की ज़मानत माँगी गई है। वहाँ के बलवन्त-प्रेस से भी ज़मानत माँगी गई है।

—लाहौर के 'तमन्ना' नामक उर्दू दैनिक पत्र से २००० रुपये की ज़मानत माँगी गई है।

—बम्बई प्रान्त के पनवेल नामक स्थान में २५ सितम्बर को जङ्गल-सत्याग्रह के कारण बड़ा भारी उपद्रव हो गया, जिसमें ८ मनुष्य मारे गए और ६० घायल हुए। मरने वालों में एक मैजिस्ट्रेट, दो पुलिस के सिपाही और एक सरकारी चौकीदार भी है। कहा जाता है कि जिस समय पुलिस ने गोली चलाई उस समय वे लोग सत्या-ग्रहियों के दल में ही मिले थे और गोली लगने से मारे गए। पुलिस वाले जब तक गोली-बारूद ख़तम न होगई, गोलियाँ चलाते रहे। अब तक इस बात का पता नहीं चल रहा है कि गोली चलाने की आज्ञा किसने दी थी!

—२६ सितम्बर को कौन्सिल-चुनाव के सम्बन्ध में मुरादाबाद में भीषण दङ्गा हो गया, जिसमें पुलिस ने गोली चलाई। ४६ घायल व्यक्ति अस्पताल में भेजे गए, जिनमें से एक मर गया।

—विभिन्न प्रान्तों में सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध में जितनी गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं, उनकी संख्या इस प्रकार है:—

बिहार	...	...	८,१३१
पञ्जाब	...	...	५,७००
संयुक्त प्रान्त	...	...	४,७११

—ख़बर है कि फ़ीरोज़पुर (पञ्जाब) की जेल में १८४ राजनैतिक क़ैदी अनशन कर रहे हैं।

—मुसलमानों के एक ख़ास नेता कहलाने वाले सर फ़ज़ली हुसैन ने राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स के मुसलमान प्रतिनिधियों के नाम प्राइवेट पत्र भेजा है, जिसमें ज़ोर दिया गया है कि कॉन्फ़्रेन्स में वे एकमत होकर कार्य करें और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के झगड़ों को बीच में न घुसने दें। उन्होंने ज़्यादा ज़ोर इस पर बात पर दिया है कि हिन्दुओं से किसी प्रकार का समझौता न किया जाय। ऐसा करने से मुसलमान अङ्गरेज़ी गवर्नमेण्ट की सहानु-भूति को खो बैठेंगे, जो हिन्दुओं की दोस्ती की अपेक्षा विशेष क़ीमती है। हिन्दुओं के सामने मुसलमानों के लिए विशेष प्रतिनिधित्व और सरकारी नौकरियों में एक सुरक्षित भाग रखने की शर्त पेश की जाय और यदि वे उसे स्वीकार न करें तो सरकार के साथ मिल कर काम किया जाय। चुनाव अलग-अलग सम्प्रदायों के आधार पर ही होना चाहिए।

—कानपुर में कौन्सिल-चुनाव में बहुत कम लोगों ने वोट दिए। एक स्वयंसेवक गिरफ़्तार किया गया।

—आगरे में प्रेमा मेहतर को कौन्सिल के लिए खड़ा किया गया और कॉङ्ग्रेस वालों ने उसके लिए वोट दिलवाए।

—मुरादाबाद का २७ तारीख़ का समाचार है कि कौन्सिल-चुनाव के अवसर पर गोली चलाने से २०० व्यक्ति घायल हुए हैं। कॉङ्ग्रेस प्रेज़िडेण्ट की धर्मपत्नी श्रीमती खन्ना भी भयङ्कर रूप से घायल हुई हैं।

—बन्नू (सीमा-प्रान्त) की एक दुकान में २६ सित-म्बर को एक बम फूटा, जिससे एक स्त्री घायल होकर मर गई।

—इङ्गलैण्ड में २० सितम्बर को एक भयङ्कर तूफ़ान आया। हवा की चाल फ़ी घण्टा ८० मील थी, हज़ारों पेड़ उखड़ गए, खेती का नुक़सान हुआ और रेल-गाड़ियाँ रुक गईं।

—२० सितम्बर को स्टोमार्केट (सफ़ोक) में बेकारी पर भाषण देते हुए मि० लॉयड जॉर्ज ने कहा है कि वे उस गवर्नमेण्ट का साथ देने के लिए तैयार हैं जो बुद्धि-मत्ता, शीघ्रता और दृढ़तापूर्वक बेकारी की समस्या हल करने के लिए तैयार हो, जो अशान्त संसार में शान्ति स्थापित करे और जो भारत की वर्तमान स्थिति को न्याय-पूर्वक और दृढ़ता से सम्हाल सके।

—रूटर का समाचार है कि कैनेडा के प्रतिनिधि की १३ सितम्बर को लन्दन पहुँचने की असमर्थता के कारण 'इम्पीरियल कॉन्फ़्रेन्स' पहली अक्टूबर के लिए स्थगित कर दी गई है।

—'कॉमन-वेल्थ ऑफ़ इण्डिया लीग' की कौन्सिल ने श्री० पीटर फ़्रीमेन के सभापतित्व में यह प्रस्ताव पास किया है कि सुलह के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस नेताओं की ५ शर्तें उचित हैं। उसने उनके आधार पर गवर्नमेण्ट से, भारत से समझौता करने की भी प्रार्थना की है। भारत के अधिकारों का प्रचार करने पर भी बहुत ज़ोर दिया गया।

—श्री० रेनाल्ड्स ने, जो महात्मा गाँधी का पत्र वायसराय के पास लेकर गए थे, लन्दन की विद्यार्थी-सभा में भाषण देते हुए कहा है कि—"मैं यहाँ से मज़दूर-दल का भक्त होकर गया था, परन्तु उसके प्रति घृणा लेकर वापस लौटा हूँ।" उन्होंने अब वहाँ मज़दूरों में भारत के सच्चे रूप का प्रदर्शन करने का निश्चय किया है।

—'सण्डे एक्सप्रेस' लिखता है कि लिबरल लीडर लॉयड जार्ज और प्रधान मन्त्री मेकडानल्ड में तनातनी हो गई है। यदि बेकारी की कॉन्फ़्रेन्स असफल हुई, जिसकी पूरी-पूरी सम्भावना है, तो लिबरल-दल कन्सर्वेटिव-दल से मिल जायगा और दोनों मिल कर पार्लामेण्ट की बैठक होने पर गवर्नमेण्ट को परास्त करेंगे। नवम्बर में नया चुनाव होगा।

—रूस में ४८ व्यक्तियों को, जिन्होंने जाल रच कर जनता की भोजन-सामग्री को रोकने और अकाल की दशा उत्पन्न करने की चेष्टा की थी, प्राण-दण्ड दिया गया है।

—ट्रान्सवाल (दक्षिण अफ़्रीका) के भारतवासियों ने श्री० सी० एफ़० एण्ड्रयूज़ को सहायतार्थ बुलाया है। वे ट्रान्सवाल 'एशियाटिक लैण्ड टेन्योर बिल' के आन्दो-लन में सहयोग देंगे।

—इटली के भाग्य-विधाता मुसोलिनी के प्रधान सहकारी सीन्योर टुरेटी ने फ़ैसिस्ट दल के मन्त्री पद से इस्तीफ़ा दे दिया है।

—इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स और जर्मनी की तीन सर्व-प्रधान बैङ्कों के अध्यक्ष शीघ्र ही एक स्थान पर एकत्र होकर सलाह करने वाले हैं कि संसारव्यापी व्यापार की शिथिलता को दूर करने के लिए क्या योजना की जाय।

—टर्की के मन्त्रिमण्डल ने, जिसके प्रधान इस्मत-पाशा हैं, इस्तीफ़ा दे दिया है। इसका कारण वहाँ की एसेम्बली में एक प्रस्ताव का, जिसके अनुसार गवर्नमेण्ट को नोटों का सुरक्षित धन ख़र्च करने का अधिकार दिया गया है, पास होना है। इस्मत पाशा ने नवीन मन्त्रि-मण्डल का सङ्गठन किया है।

* * *

'चाँद' पर गवर्नमेन्ट का नया प्रहार!

एक हज़ार की ज़मानत और माँगी गई !!

विगत १८ सितम्बर को 'चाँद' के प्रकाशक श्री० रामरखसिंह सहगल को यू० पी० गवर्नमेण्ट के चीफ़ सेक्रेटरी कुँवर जगदीशप्रसाद की तरफ़ से प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ज़मानत देने के लिए फिर नीचे लिखा नोटिस मिला—

"चूँकि गवर्नर-इन कौन्सिल को यह मालूम हुआ है कि 'चाँद' (इलाहाबाद) में, जिसके आप प्रकाशक हैं, ऐसी बातें प्रकाशित हुई हैं, जो सन् १९३० के प्रेस-ऑर्डिनेन्स (धारा ४, उप-विभाग १) के अनुसार आपत्तिजनक हैं। इसलिए उसी ऑर्डिनेन्स के (धारा ८, उप-विभाग ३) द्वारा प्राप्त अधिकार का उपयोग करके गवर्नर-इन कौन्सिल आपको आज्ञा देते हैं कि आप इस नोटिस को पाने के दो दिन के भीतर इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के यहाँ एक हज़ार रुपए की नक़द या 'गवर्नमेण्ट सीक्योरिटीज़' में ज़मानत जमा कर दें।"

पाठकों को स्मरण होगा कि पिछले जुलाई मास में गवर्नमेण्ट ने सहगल जी से ४,००० रुपए की ज़मानत माँगी थी—दो हज़ार 'चाँद' से और दो हज़ार 'फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज, (चाँद-प्रेस) से। बाद में 'चाँद' की ज़मानत की आज्ञा रद्द कर दी गई और प्रेस की ज़मानत घटा कर १ हज़ार कर दी गई थी, जो जमा की जा चुकी है।

इस नोटिस को पाने के बाद ही सहगल जी ने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट को लिखा कि वे उन लेखों को बतलाने की कृपा करें, जिनके कारण ज़मानत माँगी गई है; क्योंकि वे 'चाँद' के उस अङ्क में किसी प्रकार की आपत्ति-जनक सामग्री ढूँढ़ने पर भी नहीं पा सके हैं। इसके सिवाय जब से प्रेस-ऑर्डिनेन्स जारी हुआ है, तब से 'चाँद' में उसके विरोध में किसी प्रकार के सम्पादकीय लेख या टिप्पणी आदि भी प्रकाशित नहीं होती। इसके उत्तर में डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने सहगल जी को दूसरे दिन आने को लिखा। दूसरे दिन सहगल जी ने मि० क्रम्फ़र्ड से साक्षात किया। उनसे मालूम हुआ है कि गवर्नमेण्ट ने 'चाँद' के अगस्त-सितम्बर वाले संयुक्ताङ्क में प्रकाशित 'स्त्रियों के आदर्श' शीर्षक कविता (श्री० अनूप शर्मा, बी० ए०) और 'सत्याग्रह-संग्राम और स्त्रियाँ' शीर्षक समाचार को आपत्तिजनक क़रार देकर यह ज़मानत माँगी है!

एक सुप्रसिद्ध बैंक के अंगरेज़ मैनेजर की ग्रेट ब्रिटेन को चेतावनी!

भारत को स्वराज्य दिए बिना व्यापार नहीं चलाया जा सकता !!

इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध 'स्पेक्टेटर' पत्र में भारत-स्थित एक बैङ्क के प्रतिष्ठित मैनेजर का पत्र प्रकाशित हुआ है, जो उसने अपने एक मित्र के नाम भेजा था। उसका सार यह है :—

"इस देश में साइमन-कमीशन की रिपोर्ट की सभों ने ही धज्जियाँ उड़ाई हैं। मैं जितने लोगों से मिला हूँ, मैंने जिन-जिन का वक्तव्य पत्रों में पढ़ा है, किसी ने उसका आदर नहीं किया। यहाँ के "टाइम्स ऑफ़ इण्डिया" पत्र तक ने थोड़ी प्रशंसा के साथ, उसकी निन्दा की है; और यहाँ के प्रतिष्ठित अङ्गरेज़ तो बिलकुल ही चुप बैठे हैं !!

"कुछ लोग कलकत्ता में अवश्य ऐसे हैं, जो रिपोर्ट के पक्ष में हैं, परन्तु मालूम होता है कि वे गत शताब्दी के वायु-मण्डल में विचरण कर रहे हैं। नरम दल के हर एक नेता—जिन्ना, शास्त्री, ठाकुरदास, सप्रू आदि तक ने उसको कड़े से कड़े शब्दों से ठुकराया है; और मैं उनसे पूर्ण-रूप से सहमत हूँ। उसमें कुछ भी सार नहीं है—और यदि यह रिपोर्ट कुछ भी देती है तो यही, कि दिए हुए सामान्य हक़्क़ों को भी छीनना चाहती है !! भारत को कुछ शर्तों के साथ पूर्ण-औपनिवेशिक स्वराज्य देना ही होगा; उससे कम में उसे सन्तोष न होगा; और यदि अङ्गरेज़ों के दिल में अब भी यह भ्रम घुसा हुआ है कि जनता आन्दोलन में भाग नहीं ले रही है, तो वे थोड़े दिनों के लिए गुजरात में रहें और अपनी आँखों से वहाँ की स्थिति सावधानी से देखें !!

"जब अपने सिद्धान्तों के लिए लोग प्रसन्नतापूर्वक जेल जाने लगे हैं, तब तो हमें अवश्य ही चेत जाना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम शीघ्र ही इसका इलाज करें। यदि हम वास्तव में इङ्गलैण्ड की साख रखना चाहते हैं और भारत को साम्राज्य के अन्दर रखना चाहते हैं तो हमें शीघ्र ही इस बात की घोषणा कर देनी चाहिए कि 'गोल-मेज़ परिषद' में औपनिवेशिक स्वराज्य पर ही बहस होगी !!

"यदि हम भारत को अपने घर की मालकिन बना देंगे तो वही हमारी पुत्री बनी रहेगी! भारत के नेता जिस लगन से अपने देश के उद्धार में रत हैं, इङ्गलैण्ड के लोगों को उसका बिलकुल पता नहीं है; परन्तु इस लगन के साथ ही उन्हें अङ्गरेज़ों से बिलकुल द्वेष नहीं है। मेरे साथ यहाँ के सभी विचारों के लोग सहृदयता का व्यवहार करते हैं; और गाँधी के आन्दोलन की इस उबलती हुई कड़ाही में भी मैं सुरक्षित हूँ! यदि वे किसी बात के लिए झगड़ते हैं, तो केवल अपने देश की बागडोर अपने हाथों में लेने के लिए! गाँधी से लेकर अछूत तक—हर एक अपने हक़्क़ों की इज़्ज़त के लिए दृढ़ता-पूर्वक लड़ने को तैयार है और बीसवीं शताब्दी के इस उन्नति और विकास के युग में कोई भी ऐसा दिखाई नहीं पड़ता, जो ३० करोड़ भारत-वासियों को उनके जन्म-सिद्ध अधिकारों से वञ्चित रख सके !!!"

भारत का अहिंसात्मक संग्राम

एक अमेरिकन विद्वान मिशनरी की राय

(हमारे विशेष सम्वाददाता द्वारा)

भारत के एक प्रान्त में निवास करने वाले एक सुप्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान मिशनरी ने अपने देश-भाइयों के नाम एक गश्ती पत्र लिखा है, जिसकी ३,००० कॉपियाँ लगभग सभी प्रसिद्ध अमेरिका-निवासी विद्वानों के नाम भेजी गई हैं! वे कहते हैं :—

"× × × भारत की परिस्थिति का सच्चा-सच्चा हाल देना इस समय बहुत कठिन कार्य है। परन्तु यहाँ समस्त देश में क्रान्ति हो गई है। इङ्गलैण्ड ने भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने की जो प्रतिज्ञाएँ समय-समय पर की हैं, लॉर्ड इर्विन उन पर दृढ़ हैं। इङ्गलैण्ड में लोगों का एक दल ऐसा है, जिसे दस वर्ष पहिले या एक पीढ़ी पहिले के भारत का ज्ञान भले ही हो, परन्तु वह वर्तमान भारत से बिलकुल अनभिज्ञ है; और जो उसे अभी भी पराधीन, असमर्थ और इङ्गलैण्ड के माल का बड़ा भारी ग्राहक समझता है! भारत को पाशविक बल के ज़ोर से दबा कर रखना अब भूतकाल की बात हो गई है। भारत-वासियों के हृदय से दासत्व की भावना निकलती जाती है और उन्होंने स्वतन्त्र होने का पूर्ण रूप से निश्चय कर लिया है, चाहे उसका मूल्य उनको अपने प्राण देकर ही क्यों न चुकाना पड़े !!

"अपने इस संग्राम में भारत जिस शक्ति का प्रयोग कर रहा है, वह है अस्त्र-शस्त्र-रहित निहत्थे भारतीयों का आत्मबल! जब डाकगाड़ी के रवाना होने का समय हो, सम्भव है उसी समय दो-तीन सौ खद्दरधारी पुरुष उसके सामने आ जायँ और रेल की पटरी पर हाथ-पैर फैला कर लेट जायँ। यदि ऐसे समय ड्राइवर उन सबके ऊपर से कहीं गाड़ी चला दे, तो आन्दोलन की ज्वाला शान्त होने की अपेक्षा, द्विगुण वेग से प्रज्वलित हो उठे और दो-तीन सौ के स्थान में शायद उतने ही हज़ार आदमी आगे आ जावें! रुख़ से तो ऐसा प्रतीत होता है कि रेलों को रोकना कुछ दिनों में एक साधारण सी बात हो जावेगी !! ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान होने के लिए उत्सुक हो उठे हैं। गाँधी के अनुयायियों का उद्देश्य यह मालूम पड़ता है कि वे समस्त सार्वजनिक कामों और गवर्नमेण्ट का सञ्चालन तथा उन व्यक्तिगत कामों को भी, जिन्हें वे अच्छा नहीं समझते, असम्भव बना देना चाहते हैं! ब्रिटिश वस्तुओं का वहिष्कार धड़ाधड़ हो रहा है। भारत के बहुत से मिल-मालिकों और व्यापारियों के सामने कठिन आर्थिक समस्या उपस्थित हो गई है और हज़ारों की संख्या में श्रमजीवी बेकार हो गए हैं !! जो लोग पिकेटरों की आज्ञा उल्लङ्घन करते हैं, उनका सामाजिक वहिष्कार किया जाता है—कोई भी मनुष्य—भङ्गी, नाई, धोबी आदि—उनका कार्य नहीं करता; और उनके पास भोजन सामग्री तक नहीं पहुँचने पाती। उनका विश्वास है कि यदि वे अपना यह कार्य-क्रम उचित समय तक जारी रख सकेंगे तो गवर्नमेण्ट की सञ्चालन-गति रुक जायगी और उसका भारत पर शासन करना असम्भव हो जायगा! यद्यपि वे स्वयं निहत्थे हैं, तो भी वे इस बात का दावा करते हैं कि वे गवर्नमेण्ट की फ़ौजी शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेंगे। गवर्नमेण्ट बहुत कुछ उत्तेजित किए जाने पर भी कम से कम फ़ौज और पुलिस की शक्ति का उपयोग कर रही है !!

(शेष मैटर छठे पृष्ठ पर देखिए)

क्या भारत में हिंसात्मक क्रान्ति का सूत्रपात हो रहा है ?

—२५ अगस्त को कलकत्ते के डलहौज़ी स्क्वायर में पुलिस-कमिश्नर सर चार्ल्स टेगार्ट पर दो बम फेंके गए। टेगार्ट साहब की मोटर टूट गई और ड्राइवर को भी चोट आई, पर वह स्वयं बाल-बाल बच गए। दो और मोटर गाड़ियाँ भी, जो वहाँ मौजूद थीं, टूट गईं। पास ही पटरी पर एक आदमी ख़ून में लथपथ पड़ा मिला। उसके पास दो बम और एक भरा हुआ पिस्तौल था। पीछे मालूम हुआ कि उसका नाम अनुजसेन गुप्त है। वहीं पर एक दूसरा आदमी घायल दशा में गिरफ़्तार किया गया। इसका नाम दीनेशचन्द्र मज़ूमदार है और यह लॉ-कॉलेज का विद्यार्थी है। इसके पास से भी एक बम और एक पिस्तौल बरामद हुआ। इस पर ख़ास अदालत में मुक़द्दमा चलाया गया और १८ सितम्बर को उसे आजन्म कालेपानी की सज़ा दे दी गई।

—२६ अगस्त को कलकत्ते के जोड़ाबगान थाने पर रात के नौ बजे एक बम फेंका गया। इससे दो आदमी घायल हुए। फेंकने वाले का आज तक पता नहीं लग सका।

—२७ अगस्त को सुबह साढ़े नौ बजे कलकत्ते के ईडन गार्डन थाने पर किसी ने बम फेंका। इससे एक सिपाही और पी० डब्लू० डी० के तीन क़ुलियों को चोट लगी। एक क़ुली का दाहिना हाथ उड़ गया, बाएँ हाथ में गहरी चोट आई, और चेहरा जल गया।

—टेगार्ट साहब पर बम चलाने के सम्बन्ध में पुलिस ने कलकत्ते में बहुत सी तलाशियाँ लीं, जिनके फल-स्वरूप पाँच व्यक्ति पकड़े गए। कहा जाता है, ये पाँचों चटगाँव के शस्त्रागार पर हमला करने वालों में से हैं। कैनिङ्ग होस्टल की भी तलाशी ली गई और ५ विद्यार्थी और अन्य दो व्यक्ति पकड़े गए। कुल २० आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं। कहा जाता है कि इन तलाशियों में पुलिस को एक ऐसा रजिस्टर मिला है जिससे षड्यन्त्रकारियों के एक भयङ्कर दल का पता चलता है। यह दल कलकत्ता और बङ्गाल के अन्य स्थानों में राजनीतिक अपराध करने की कोशिश कर रहा था।

—कलकत्ते के पुलिस-कमिश्नर पर बम चलाने के सम्बन्ध में लाहौर में कई मकानों की तलाशी ली गई और राजेन्द्र तथा शिवलाल नाम के दो युवक गिरफ़्तार किए गए।

—२९ अगस्त को सुबह ९॥ बजे ढाका के मिटफ़ोर्ड अस्पताल में बङ्गाल के इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस मि० एफ़० जे० लोमैन और ढाका के पुलिस सुप० मि० हडसन पर गोली चलाई गई। मि० लोमैन ३१ अगस्त को मर गए और हडसन साहब अभी तक अस्पताल में पड़े हैं। २२ सितम्बर को वे ढाका से कलकत्ता लाए गए हैं। वहाँ उनकी एक्स-रे (× Roy) से परीक्षा होगी। इस सम्बन्ध में पुलिस विनयकृष्ण बोस नाम के मेडिकल स्कूल के एक विद्यार्थी को गिरफ़्तार करना चाहती थी, पर वह अपने स्थान पर न मिला। उसकी गिरफ़्तारी के लिए ५,००० रु० इनाम की घोषणा की गई है। जहाँ पर यह दुर्घटना हुई थी, वहाँ पर दो स्लीपर मिले थे। बोर्डिङ्ग हाउस के प्रबन्धकर्ता और एक विद्यार्थी ने उनको विनयकृष्ण का बतलाया है।

—३० अगस्त की शाम को मैमनसिंह के ख़ुफ़िया पुलिस के इन्सपेक्टर पवित्रकुमार बोस के घर पर बम फेंका गया। वह घर पर नहीं था, पर उसके दो भाई, जो वहाँ मौजूद थे, साधारण घायल हुए। उसी दिन दूसरा बम तेजेशचन्द्र गुहा के मकान पर फेंका गया, जो कि आबकारी का सब-इन्सपेक्टर है; पर इससे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

—राजशाही के पुलिस सब-इन्सपेक्टर देवेन्द्रनाथ चौधरी के घर पर एक बम फेंका गया, जिससे बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। उसी समय एक बङ्गाली युवक अभयपद मुकर्जी वहाँ से भागता हुआ मिला जो गिरफ़्तार कर लिया गया। उसके पिता के घर की तलाशी भी ली गई, पर कोई सन्देहजनक चीज़ न मिली। दो व्यक्ति और भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—३१ अगस्त को कलकत्ते में हाज़रा रोड पर श्रीमती शोभारानी दत्त नाम की १८ वर्ष की नवयुवती को पुलिस ने गिरफ़्तार किया। वे अपनी मोटर में कहीं जा रही थीं। यह गिरफ़्तारी हाल की बम-दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में हुई है। शोभारानी मि० पी० एन० दत्त की भतीजी हैं, जो कलकत्ते के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट थे।

—२ सितम्बर को रात के ३ बजे कलकत्ता की पुलिस ने चन्द्रनगर के एक मकान को घेर लिया। चन्द्रनगर कलकत्ते के पास ही फ़्रान्स वालों के अधिकार में है और इसलिए वहाँ की फ़्रान्सीसी पुलिस भी मौजूद थी। यह मकान बिल्कुल एकान्त में है और चारों तरफ़ जङ्गल से घिरा है। इसमें एक मीनार भी बनी है, जिस पर से चारों तरफ़ की निगरानी की जा सकती है। पुलिस कलकत्ते से आधी रात के पश्चात् टेगार्ट साहब की अधीनता में रवाना हुई। वे बहुत छिप कर मकान की तरफ़ गए, पर तो भी वहाँ के रहने वालों को उनका पता लग गया और वे गोली चलाने लगे। कुछ देर बाद पुलिस ने मकान पर क़ब्ज़ा कर लिया और लोकनाथ बल, आनन्द गुप्ता और गनेश घोष नाम के तीन व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया। इन सबके पास भरी हुई पिस्तौलें थीं। माखन घोषाल नाम का एक चौथा व्यक्ति घायल होकर तालाब में गिर गया और डूब कर मर गया। इनके सिवाय शशधर आचार्य नाम का एक व्यक्ति और दो स्त्रियाँ भी उस मकान में पाई गईं और गिरफ़्तार कर ली गईं। तलाशी लेने पर मकान में गोली-बारूद बनाने के कुछ औज़ार मिले। इस मकान को शशधर आचार्य ने, जो ईस्ट इण्डियन रेलवे में टिकट-चेकर का काम करता है, भाड़े पर लिया था। जो तीन व्यक्ति सशस्त्र पकड़े गए हैं वे चटगाँव शस्त्रागार वाले मामले के मुखिया बतलाए गए हैं और उन पर चटगाँव की ख़ास अदालत में अन्य अभियुक्तों के साथ मुक़दमा चलाया जा रहा है।

—१० सितम्बर को कलकत्ते के जोड़ाबगान में पुलिस ने एक बम-फ़ैक्टरी का पता लगाया, जहाँ पर उसे एक तैयार बम, नौ बमों के ख़ाली खोल और बहुत सा मसाला मिला। उस घर में पुलिस ने तीन पुरुषों और एक स्त्री को गिरफ़्तार किया। ये सब बङ्गाली हैं। एक पुरुष का नाम अतुलचन्द्र गाङ्गुली है और स्त्री का सत्यमणि दत्त। स्त्री के पति का नाम सुरेन्द्रनाथ दत्त बतलाया जाता है। जब तलाशी हो रही थी, एक पुरुष साग-भाजी की टोकरी लेकर मकान में आया। वह फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया गया और तलाशी लेने पर उसकी टोकरी में आठ बम छुपे मिले। सत्यमणि दत्त की गोद में एक बच्चा भी है। ये तमाम लोग पूर्वी बङ्गाल में बारीसाल ज़िले के निवासी बतलाए जाते हैं।

—जोड़ाबगान की बम-फ़ैक्टरी के सम्बन्ध में और कई मकानों की तलाशियाँ ली गईं और पाँच व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए। इनमें बम-फ़ैक्टरी वाले मकान का स्वामी सुरेन्द्रनाथ दत्त भी सम्मिलित है। १४ तारीख़ को उसके मकान की दुबारा तलाशी ली गई और सबसे नीचे के घर में चार तैयार बम एक पीपे में रक्खे पाए गए। सुरेन्द्रनाथ इत्र-तेल आदि का व्यापार करता है और उसका नीचे का घर बोतलों, पीपों और लकड़ी के बक्सों से भरा पड़ा है।

—कलकत्ते की पुलिस ने १६ सितम्बर को शहर के उत्तरीय विभाग में कितने ही मकानों की तलाशियाँ लीं और बहुत से लोगों को, जिनमें तीन स्त्रियाँ भी हैं, गिरफ़्तार किया। ये सब गिरफ़्तारियाँ हाल की बम-दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में हुई हैं। १६ तारीख़ को भी कितने ही बोर्डिङ्ग हाउसों, विद्यार्थी-गृहों, खद्दर की दूकानों और निजी घरों की तलाशियाँ ली गईं और दो आदमी गिरफ़्तार भी कर लिए गए हैं।

—११ सितम्बर का कलकत्ते का समाचार है कि बहादुर बगान लेन में रहने वाले श्री० गणेशचन्द्र सेन की छै नली पिस्तौल किसी ने कैश बक्स में से चुरा ली। उसके साथ कुछ रुपया और ज़ेवर भी रक्खा था, पर उनको हाथ तक नहीं लगाया गया। उसी दिन उनके मित्र एस० सी० मुकर्जी की, जो ग्रैण्ड होटल में रहते हैं, पिस्तौल भी किसी ने ग़ायब कर दी।

—बाँकुड़ा (बङ्गाल) में नवनीधर घटक नाम का मेडिकल स्कूल का एक विद्यार्थी बम-काण्डों से सम्बन्ध रखने के अभियोग में गिरफ़्तार किया गया है। स्कूल के बोर्डिङ्ग हाउस की तलाशी भी ली गई।

—कलकत्ते में आजकल पिस्तौलों की चोरियाँ बहुत हो रही हैं। पुलिस को दस दिन के भीतर इस प्रकार की छै घटनाओं की रिपोर्ट मिली है। इससे पहले इस प्रकार की घटनाएँ महीने भर में दो-तीन से ज़्यादा नहीं होती थीं। पुलिस ने तमाम हथियार रखने वालों से ताकीद की है कि वे अपने हथियारों को होशियारी के साथ ऐसी जगह रक्खें जहाँ नौकर लोग सहज में न जा सकते हों। उनको खुली हुई जगह में रखना ख़तरे की बात है। क्योंकि आजकल बाज़ार में इनके लिए काफ़ी दाम मिलते हैं और इस लालच से नौकर अक्सर उनको उड़ा देते हैं।

—२० सितम्बर का समाचार है कि जैसोर (बङ्गाल) की मगुरा तहसील में पुलिस सुपरिन्टेन्डेण्ट और कितने ही कॉनिस्टेबिल कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस की तलाशी ले रहे थे। उसी समय एक भयङ्कर धड़ाका हुआ और तमाम मकान जलने लगा। पुलिस वाले किसी तरह जान बचा कर निकल आए। सन्देह किया जाता है कि वह धड़ाका तेज़ाब और अन्य विस्फोटक पदार्थों में आग लगने से हुआ था।

—१ सितम्बर का समाचार है कि लाहौर में पुलिस ने पाँच नवयुवक सिक्खों के मकानों की तलाशियाँ लेकर चार बम और बहुत से कारतूस बरामद किए। पाँचों व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए।

—५ सितम्बर का लाहौर का समाचार है कि सुबह के वक़्त पुलिस के कितने ही कर्मचारी रावी नदी के पुल के पास पहुँचे। उनके साथ १५ वर्ष का एक लड़का भी था। उसके बतलाने पर पुलिस ने पानी के भीतर से चौदह बम बरामद किए। फिर उसी लड़के के बतलाने से उन्होंने सुतारमण्डी बाज़ार में नन्दलाल नामक व्यक्ति

के घर की तलाशी ली और वहाँ से एक पीतल का बर्तन, एक गिलास, एक पीपा और कई दूसरी चीज़ें उठा ले गए। शीशमहल रोड पर भी एक घर की तलाशी ली गई और एक पिस्तौल तथा चार बम बरामद किए गए। कहा जाता है कि एक सिक्ख नवयुवक और एक स्कूल में पढ़ने वाला हिन्दू लड़का मुख़बिर बन गए हैं और उन्होंने पुलिस को इन बातों का पता दिया है। नन्दलाल को, जो एक उर्दू दैनिक पत्र में कॉपी लिखने का काम करता है, गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—१० सितम्बर को रात के साढ़े तीन बजे पुलिस का एक बहुत बड़ा दल लायलपुर में पहुँचा और बहुत से हिस्सों में बँट कर शहर के विभिन्न भागों में मकानों की तलाशियाँ लेने लगा। दिन के आठ बजे तक पुलिस ने १६ मकानों की तलाशियाँ लीं और १२ व्यक्तियों को पकड़ा; ये सब व्यक्ति एक ड्रैमेटिक क्लब के मेम्बर हैं। गोपाल दास कपूर नामक एक व्यक्ति चिनोट से गिरफ़्तार करके लाया गया। उसके हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी थीं। ये सब गिरफ़्तारियाँ हाल में होने वाले बम-काण्डों के सम्बन्ध में हुई हैं।

—मालूम हुआ है कि पञ्जाब की पुलिस को एक नए और भयङ्कर षड्यन्त्रकारी दल का पता लगा है। इसका अड्डा लायलपुर में बतलाया जाता है। इस दल का नेता एक हिन्दू नवयुवक है जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता है और बेतार से ख़बरें भेजने के यन्त्रों और उसके सिद्धान्तों के साधने में भी वह ख़ूब होशियार है। पञ्जाब-सुफ़िया-पुलिस के तमाम अफ़सर कोशिश करने पर भी उसे नहीं पकड़ सके हैं। इस षड्यन्त्र में सभी श्रेणियों के व्यक्ति शामिल हैं। पुलिस का ख़्याल है कि लायलपुर के उसी नवयुवक ने वायसराय की गाड़ी को उड़ाने की कोशिश की थी। यह आदमी बड़ा भयङ्कर षड्यन्त्रकारी समझा जाता है और बम तथा डकैतियों की जो अनेकों दुर्घटनाएँ हाल में हुई हैं उनका प्रबन्ध करने वाला और ख़र्च देने वाला वही समझा जाता है। अब तक इस सम्बन्ध में बीस गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं, क़रीब बारह आदमी भागे हुए हैं, जिनमें कई औरतें भी हैं।

—'पायोनियर' के लाहौर स्थित सम्वाददाता ने १३ सितम्बर को समाचार भेजा है कि पुलिस ने जिस नवीन षड्यन्त्रकारी दल का पता लगाया है वह कुछ दिनों से लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों को छुड़ाने की तदबीर कर रहा था। पर जब उस दल के कुछ लोग बहावलपुर रोड के मकान में बम बना रहे थे तो एक बम फूट गया और उनकी स्कीम का भेद खुल गया। इस दल का दूसरा व्यक्ति, भगवतीचरण, जो भगतसिंह का सहकारी समझा जाता है, कुछ साथियों को लेकर रावी नदी के पास जङ्गल में गया। वहाँ पर वे बमों की परीक्षा करना चाहते थे। कहा जाता है कि बम भगवतीचरण के हाथ में ही फूट गया और वह उसी जङ्गल में रात के समय मर गया। इस घटना का हाल मालूम होने पर पुलिस ने उस स्थान की तलाशी ली और बहुत कुछ मेहनत करके ज़मीन के भीतर से एक लाश ढूँढ़ कर निकाली, यह लाश जल्दी में एक छोटा सा गड्ढा खोद कर दबा दी गई थी और बैठी हुई हालत में थी।

—अमृतसर में आर्यमुनि गुप्ता, सुशील कुमार सेन, नगीनचन्द्र, राजसिंह और सूजा नाम के पाँच व्यक्तियों पर षड्यन्त्र रचने और राजनैतिक डकैतियाँ डालने की चेष्टा करने का अभियोग चल रहा है। हीरेन्द्र कुमार नाम के मुख़बिर ने बतलाया है कि नगीनचन्द्र के पास तीन पिस्तौलें और एक तलवार थी। उन्होंने तरनतारन के बैङ्क में डाका डालने की तैयारी की थी।

—८ दिसम्बर को बनारस में दुर्गाबाड़ी के सामने एक बम का धड़ाका हुआ। कहा जाता है कि बम एक लकड़ी के बक्स में सड़क के किनारे रक्खा था। एक बुढ़िया मालिन ने, जो फूलों की टोकरी लिए हुए उस रास्ते से जा रही थी, उसको उत्सुकता वश उठा लिया। बम नीचे गिर कर फूट गया और बुढ़िया के दोनों हाथ उड़ गए। वह अस्पताल में भेजी गई और वहीं कुछ समय बाद मर गई। इस सम्बन्ध में पुलिस ने १६ सितम्बर को मन्नूलाल नामक व्यक्ति को, जो हरहा गाँव का निवासी है, गिरफ़्तार किया है। उसकी पेशी ४ अक्टूबर को होगी।

—फ़ीरोज़ाबाद (आगरा) से एक बम फटने का समाचार आया है। यह दुर्घटना मोटर लॉरियों के अड्डे के पास हुई और इसके फल से हरीशङ्कर नाम का एक कम्पाउण्डर तथा एक अन्य युवक घायल हुए हैं। दोनों अस्पताल पहुँचाए गए। हरीशङ्कर के प्राण रास्ते में ही निकल गए, दूसरा युवक हिरासत में रक्खा गया है। इस सम्बन्ध में कई जगह तलाशियाँ हुई हैं और एक विद्यार्थी पकड़ा गया है।

—१५ सितम्बर को रात के दस बजे कराची की कोतवाली में एक बम फेंका गया, जो गार्ड-रूम के पास फटा। किसी को चोट नहीं लगी।

भारत के हिंसात्मक क्रान्तिकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में गवर्नमेण्ट की तरफ़ से ११ सितम्बर के कम्यूनिक में जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ है उसका एक अंश नीचे दिया जाता है:—

"इस सप्ताह में क्रान्तिकारियों की तरफ़ से कोई उपद्रव नहीं हुआ और उनके विरुद्ध जिन उपायों से काम लिया गया है उनमें काफ़ी सफलता मिली है......।

पञ्जाब में भी, जहाँ कि पिछले कुछ महीनों से क्रान्तिकारियों का ज़ोर बढ़ रहा था, पुलिस ने हाल में कितनी ही गिरफ़्तारियाँ की हैं और ऐसे प्रमाण प्राप्त किए हैं, जिनसे आशा है कि क्रान्तिकारी दल का सङ्गठन बहुत कुछ तोड़ा जा सकेगा और पिछले साल जो कितने ही ख़ास-ख़ास उपद्रव हुए थे उनका भेद खुल सकेगा। पर यह आशा करना कि इन सफलताओं से यह आन्दोलन अच्छी तरह क़ाबू में आ जायगा, ठीक नहीं। क्योंकि पिछले कुछ महीनों से युवकों के नाम जो असंयत अपीलें प्रकाशित हुई हैं और हत्याकारियों को राष्ट्रीय योद्धा बना कर जो सम्मान प्रदान किया गया है, इसके कारण क्रान्तिकारी दल को नए रँगरूट (सदस्य) बहुत बड़ी संख्या में मिल गए हैं और यह बात वास्तव में बड़े ख़तरे की है।"

—१६ सितम्बर को कलकत्ते की आगरपारा रोड की, हरटोकी बागान पट्टी में पुलिस ने लड़कियों के तीन मेसों (होटलों) पर धावा किया और गोया बागान मेस की कुमारी रेखुका सेन और एक बी० ए० पास छात्रा को पुलिस-एक्ट की ५४ दफ़ा में गिरफ़्तार कर लिया। इनकी गिरफ़्तारी उत्तरीय कलकत्ते में बम पकड़े जाने के सम्बन्ध में हुई है। कुमारी रेखुका सेन की ज़मानत की दरख़्वास्त पर कोई ऑर्डर नहीं सुनाया गया।

—लाहौर में भारद्वाज सिनेमा के अहाते में जो बम पाया गया था उस सम्बन्ध में 'प्रताप' के एक कर्मचारी को गिरफ़्तार किया गया है। इसी सम्बन्ध में वहाँ की एक तस्वीरों की दूकान की भी तलाशी ली गई। पुलिस अपने साथ भगतसिंह और सतीन सेन की तस्वीरें लेती गई।

—मुन्शीगञ्ज (बङ्गाल) के औदशाही हाई स्कूल में एक बम फेंका गया। कहा जाता है कि वह स्कूल के शिक्षक और यूनियन बोर्ड के प्रेज़ीडेण्ट श्री० अविनाशचन्द्र बनर्जी पर फेंका गया था। बम के फटने से नवें दर्जे का आशुतोष गुह नाम का विद्यार्थी घायल हुआ। उसकी दो अँगुलियाँ काट देनी पड़ी हैं। वह सन्देह में गिरफ़्तार किया गया है और एक हज़ार की ज़मानत पर छोड़ा गया है।

—२१ सितम्बर को कायड़ीग्राम (मुर्शिदाबाद) में मन्नादासी नाम की स्त्री बम फटने से बुरी तरह घायल हुई है। समाचार है कि बम पहले भूपतिभूषण त्रिवेदी के मकान पर फेंका गया था, पर फटा नहीं। वहाँ से मन्नादासी उसे उठा कर अपने घर ले आई और खोलने लगी। एकाएक वह फट पड़ा। आवाज़ सुन कर गाँव वाले दौड़े आए और उन्होंने मन्नादासी को घायल पड़े देखा।

—अमृतसर में पूरनसिंह नाम का मोटर ड्राइवर क्रान्तिकारी पर्चे बाँटता पकड़ा गया। पर्चे टैक्सी की अगली बैठक के नीचे रक्खे हुए थे। पूरनसिंह का कहना है कि उनको कोई मुसाफ़िर छोड़ गया था।

—२३ सितम्बर को खुलना (बङ्गाल) के पुलिस के थाने में एक बम फेंका गया जिससे एक हेड कॉन्स्टेबिल भयङ्कर रूप से घायल हुआ। फेंकने वाला भाग गया।

—दासपुर (मिदनापुर) के सब इन्सपेक्टर की हत्या वाले मामले में ख़ास अदालत ने १२ लोगों को आजन्म काले पानी और ५ को २-२ वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। आरम्भ में ३३ व्यक्तियों पर मुक़द्दमा चलाया गया था जिनमें ७ फ़ैसला होने से पूर्व और ९ फ़ैसला होने पर सबूत की कमी से छोड़ दिए गए।

* * *

(४ थे पृष्ठ का शेषांश)

"×××यहाँ के अधिकांश कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों पर पिकेटिङ्ग हो रही है। पिकेटिङ्ग करने वाले स्वयंसेवक खद्दर पहिने राष्ट्रीय झण्डा फहराते रहते हैं। यदि कुछ विद्यार्थी और अध्यापक उनके जत्थे के बीच में से ज़बर्दस्ती निकल जाते हैं तो वे देशद्रोही कहलाते हैं! यदि अध्यापक और उनके साथ कुछ विद्यार्थी अन्दर पहुँच कर पढ़ाई प्रारम्भ करते हैं तो स्वयंसेवक अन्दर पहुँच कर शोर मचाते हैं (बिगुल बजाते हैं) और पढ़ाई असम्भव कर देते हैं! परन्तु यहाँ के अधिकांश विद्यार्थियों की इच्छा अपना अध्ययन स्थगित करने की नहीं है!! पुलिस की सहायता से शिक्षालयों की पिकेटिङ्ग नहीं रोकी जा सकती, क्योंकि जनता पुलिस को घृणा की दृष्टि से देखती है और जो पुलिस की सहायता ले, उसके सामाजिक बहिष्कार का डर है। यहाँ के एक स्थानीय स्कूल के मैनेजर अपने स्वतन्त्र अधिकारों का इस प्रकार घात न सह सके और उन्होंने पुलिस की सहायता ली! जिसका परिणाम यह हुआ कि स्कूल के रजिस्टर, काग़ज़-पत्र और लकड़ी का सामान (Furniture) जला दिया गया और सौभाग्य से ही वे अपने जीवन की रक्षा कर सके!!

"ग्रेट ब्रिटेन और भारत की कठिन परीक्षा का यह समय है। इस भूमि के कोने-कोने में ईसा मसीह की आवश्यकता है! हमें आशा है और हम ईश्वर से नतमस्तक होकर प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अपने पवित्र सिद्धान्तों के प्रचार की शक्ति दे। आप सब लोग भी हमारी इस प्रार्थना में सहयोग दें और अपनी हार्दिक सहानुभूति दिखाएँ।"

* * *

शहर और ज़िला

—इलाहाबाद के क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज को मिलने वाली सरकारी ग्राण्ट (सहायता) बन्द कर दी गई है। कारण सिर्फ़ यह बतलाया जाता है कि संयुक्त प्रान्त की कॉङ्ग्रेस डिक्टेटर श्रीमती उमा नेहरू उसकी असिस्टेन्ट सेक्रेटरी हैं। और वे राजनैतिक आन्दोलन में भाग ले रही हैं। फ़ण्ड की कमी के कारण अध्यापिकाओं को जुलाई के बाद से तनख़्वाह नहीं मिली है।

—क्रॉस्थवेट कॉलेज की सरकारी सहायता बन्द होने से जनता में अनेकों अफ़वाहें उड़ रही हैं। इसलिए वहाँ के अधिकारियों ने प्रकाशित कराया है कि कॉलेज के काम में किसी प्रकार का परिवर्तन न होगा और न छात्राओं की या बोर्डिङ्ग-हाउस में रहने वाली लड़कियों की फ़ीस बढ़ाई जायगी।

—इलाहाबाद में २४ सितम्बर को सवेरे बिजली-घर के पास सूरजकुण्ड पर एक बुढ़िया पोस्ट ऑफ़िस की लॉरी के नीचे दब कर उसी वक़्त मर गई। सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट ख़ाँ साहब रहमानबख़्श क़ादरी और सिटी पुलिस डिपुटी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने घटना-स्थल पर पहुँच कर सब प्रकार से सहायता की, पर बुढ़िया मर चुकी थी। मोटर ड्राइवर गिरफ़्तार कर लिया गया है।

—इलाहाबाद के युवक-सङ्घ ने दस दिन का एक केम्प अपने मेम्बरों के लिए सिराथू में खोला है। यह केम्प २६ सितम्बर से ६ अक्टूबर तक रहेगा। उसका उद्देश्य खद्दर, चर्ख़े और तकली का प्रचार, तथा अन्य कॉङ्ग्रेस-कार्य करना और वालण्टियर भरती करना है।

—गत छः वर्षों की भाँति इलाहाबाद की रामलीला इस साल भी बन्द रहेगी। कारण यह है कि सरकारी अधिकारी मसजिदों के सामने बाजा रोकने की आज्ञा देते हैं। इस वर्ष सदा की भाँति गवर्नमेण्ट के पास जुलूस निकालने की मञ्ज़ूरी के लिए किसी प्रकार की अर्ज़ी तक नहीं दी गई है, क्योंकि इस राष्ट्रीय आन्दोलन के समय रामलीला के प्रबन्धक कोई ऐसी बात करना अनुचित समझते हैं, जिससे हिन्दू-मुसलमानों में वैमनस्य उत्पन्न होने की ज़रा भी आशङ्का हो।

—सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत में मॉडर्न स्कूल के बलवे का जो मुक़दमा चल रहा है, उसमें गवाही देते हुए डॉ० घोष ने कहा है कि उन्होंने अपने स्कूल में कॉङ्ग्रेस आन्दोलन को कुचलने का निश्चय कर लिया है। वे स्कूल में राष्ट्रीय झण्डा फहराने और राष्ट्रीय गीत गाने के विरोधी हैं। असहयोग आन्दोलन के समय वे अमन सभा के मन्त्री भी थे।

—२५ सितम्बर को नरसिंह भट्टाचार्य और बालाप्रसाद उर्फ़ बेनीमाधो नाम के दो स्वयंसेवकों को मॉडर्न हाईस्कूल में पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ६-६ मास की सख़्त सज़ा दी गई।

मेजर बामनदास बसु का देहान्त

इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध नागरिक, इतिहासज्ञ और लेखक मेजर बामनदास बसु का बहादुरगञ्ज में २२ सितम्बर को देहान्त हो गया। 'राइज़ ऑफ़ क्रिश्चियन पावर इन इण्डिया' और पाणिनी ऑफ़िस से प्रकाशित अपनी अन्य पुस्तकों के द्वारा उन्होंने भारत की अविशेष सेवा की है। उनकी मृत्यु से वास्तव में एक अमूल्य रत्न खो गया। हम उनके दुःखी परिवार के साथ अपनी समवेदना प्रकट करते हैं।

—गनेशप्रसाद महेन्द्र नामक व्यक्ति ने इलाहाबाद सेवा-समिति के श्री० श्रीराम भारतीय और पं० हृदयनाथ कुँज़रू से ३० रुपए ठग कर ले लिए थे। स्थानीय रेलवे मैजिस्ट्रेट ने उसको छः महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी।

—२५ सितम्बर को इलाहाबाद म्युनिसिपल चुङ्गी-घर के पास विलायती कपड़े और सिगरेट के बण्डलों पर जिन २५ आदमियों की गिरफ़्तारी हुई थी, उनके मुक़दमे का फ़ैसला सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट श्री० मुअज़्ज़मअली ने सुना दिया। उनमें से हर एक को छः-छः महीने की सख़्त सज़ा दी गई है। पुलिस की ओर से कोतवाली-ऑफ़िसर श्री० लालबहादुर की एक गवाही हुई, जिसमें उन्होंने कहा कि माल के मालिकों को माल उठाते समय ज़बर्दस्ती रोका गया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया, परन्तु जिनके साथ दुर्व्यवहार किया गया उनमें से पुलिस के गवाहों में एक न था।

तार-समाचार

हमने 'भविष्य' के लिए फ़्री प्रेस से विशेष तार मँगाने का प्रबन्ध किया है। पर पहले अङ्क की व्यवस्था और उसे तैयार करने का काम इतना अधिक है कि हम इस अङ्क में उन समाचारों को दे सकने में असमर्थ हैं। दूसरा कारण यह है कि 'विजय दशमी' की छुट्टी के उपलक्ष में प्रेस बन्द रहेगा और उस दिन काम नहीं हो सकेगा। दूसरे अङ्क से पाठकों को बराबर ताज़े तार-समाचार मिलते रहेंगे।

फ़ैसले से पता चलता है कि २५ अभियुक्तों में से १८ ने पिकेटिङ्ग करना स्वीकार कर लिया। श्री० माताप्रसाद चुप रहे। श्री० रामप्रसाद, बी० एन० गुप्त, गयाप्रसाद और मूलचन्द ने अपना अपराध अस्वीकृत किया। श्री० ओङ्कारनाथ और शम्भूनाथ ने अपना वक्तव्य देने से इन्कार कर दिया। एफ़० जे० गाँधी ने कुछ उत्तर ही नहीं दिया। जिन लोगों ने अपराध स्वीकार किया उनके नाम निम्न प्रकार हैं:—श्री० प्रभूदास पटेल, महादेवसिंह, शिवनाथ, भोलानाथ, रघुवीर, रामभरोसे, श्रीनाथ, महादेवप्रसाद, कामता, ब्रजभूषण लाल, सत्यदेव मिश्र, लल्लू जी साहिब, गौरीशङ्कर, मुक्तनाथ, रामप्रसाद सिंह, उदितनारायण सिंह और बच्चूलाल।

जिस आदमी के माल बेचने पर गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उसने उसकी क़ीमत १००० रुपया वापिस देकर माल लौटा लिया और उसने पुलिस से उन गिरफ़्तार वालण्टियरों को छोड़ देने की प्रार्थना की।

—इलाहाबाद में ता० २१ को दोपहर में मौलाना शाहिद गिरफ़्तार कर लिए गए। जिस समय वे अपनी मोटर पर कोतवाली के सामने से निकल रहे थे, उसी समय सिटी डिपुटी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने उन्हें वारण्ट दिखा कर अपनी मोटर पर बिठा लिया और शान्तिपूर्वक जेल पहुँचा आए। उन पर २४ अगस्त के भाषण के कारण दफ़ा १२४-ए का अभियोग लगाया गया। २६ तारीख़ को मुक़दमा चलने पर उन्हें एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा और २५०) जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर ३ महीने की सज़ा और भोगनी होगी।

आहुतियाँ

(३४ वें पृष्ठ का शेषांश)

—२० सितम्बर को कलकत्ता के थर्ड प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने श्रीमती कमला विश्वास और अन्य दो महिलाओं को बड़े बाज़ार में विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अभियोग में ४-४ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी।

—नोआखाली (बङ्गाल) में सोनापुर कॉङ्ग्रेस कमिटी और राय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी और वालण्टियरों के कप्तान गिरफ़्तार किए गए। उन पर 'कॉङ्ग्रेस सङ्कल्प' शीर्षक बङ्गाली पर्चा बाँटने का अभियोग लगाया गया है।

—ट्रिप्लिकेन (मद्रास) में गाँधी-टोपी दिवस मनाने के लिए हिन्दू हाईस्कूल पर पिकेटिङ्ग करने के कारण वहाँ के २१ विद्यार्थी १६ सितम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—मदुरा में छः वालण्टियरों को पुलिस-चौकी के सामने राष्ट्रीय झण्डा फहराने और गीत गाने के अपराध में आठ-आठ दिन की सख़्त सज़ा दी गई।

—कटनी में पाँच सत्याग्रही बालक बेत खाकर छूटे हैं। इनमें से दो को, जो कम उम्र हैं और बीमार भी थे, छः-छः बेत लगाए गए, और बाक़ी तीन को आठ-आठ। कहा जाता है कि इस काम से कई लोगों ने इन्कार कर दिया तब एक मुसलमान पुलिस कॉन्सटेबिल ने बेत लगाए।

—नागपुर 'बार कौन्सिल' के सदस्य श्री० माणिकराव देशमुख को छः मास की क़ैद और तीन सौ रुपया जुर्माने की सज़ा हो गई। जुर्माना न देने पर दो माह की क़ैद और भोगनी पड़ेगी। एक दूसरे सदस्य श्री० बालीराम विनायक नीमगाँवकर को भी डेढ़ साल की कड़ी क़ैद और दो सौ रुपए जुर्माने का दण्ड मिला है।

—२१ सितम्बर की ख़बर है कि बैतूल (सी० पी०) के बोरदेही नामक गाँव में पुलिस कुछ व्यक्तियों को गिरफ़्तार करना चाहती थी। कई सौ गोंडों ने इकट्ठा होकर उनको छुड़ाना चाहा। पुलिस ने गोली चलाई, जिससे ४ गोंड मारे गए और पचास घायल हुए।

—बम्बई कॉङ्ग्रेस कमेटी की आठवीं डिक्टेटर श्रीमती रमाबाई कामदार को तीन माह की सादी सज़ा और सेक्रेटरी मि० पानिकर और वालण्टियरों के कप्तान श्री० जमैयतसिंह को ४-४ मास की सख़्त सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद ज़िले का कौन्सिल-चुनाव २७ तारीख़ को हो गया। बारा के राजा और श्री० आनन्दीप्रसाद दुबे इसके लिए उम्मेदवार थे। बहुत ही कम वोटर वोट देने को पहुँचे। सब जगह कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक पिकेटिङ्ग कर रहे थे। सराय इनायत में छः वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए। जिन सात पोलिङ्ग-स्टेशनों के समाचार प्राप्त हुए हैं वहाँ ६५०० वोटों में से सिर्फ़ ११० वोट पड़े।

—इलाहाबाद यूनीवर्सिटी की तरफ़ से प्रान्तीय कौन्सिल में जाने वाले मेम्बर का चुनाव हो गया। श्री० गजाधरप्रसाद को २७४ और श्री० बद्रीनारायण को १६ वोट मिले।

—'अभ्युदय' ने १०००) रु० की ज़मानत दे दी है और वह २७ तारीख़ से फिर निकलने लगा है। मालूम हुआ है कि यह रक़म चन्दे से इकट्ठी की गई थी। पण्डित कृष्णकान्त जी को जेल हो जाने पर श्री० रामकिशोर मालवीय पत्र के प्रकाशक और सम्पादक हुए हैं।

—२७ तारीख़ को अल्लाह बख़्श, ठाकुर और विन्ध्येश्वरी प्रसाद नामक तीन वालण्टियर पत्थर गली की देशी शराब की दूकान पर गिरफ़्तार किए गए।

—इलाहाबाद के विद्यार्थी-सङ्घ ने हाल ही में जो 'स्वदेशी सप्ताह' मनाया था, उसमें दो हज़ार लोगों से स्वदेशी वस्तु व्यवहार की प्रतिज्ञा कराई गई।

* * *

भविष्य की नियमावली

१. 'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२. किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३. लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़ हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४. हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे पत्रों का उत्तर ही दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५. कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६. लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७. समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।

८. परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९. सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०. किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर
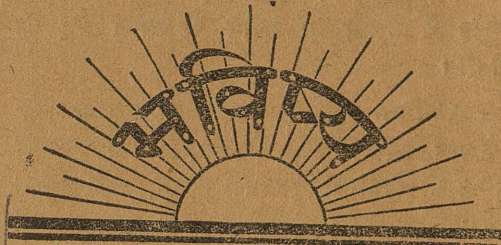
२ अक्तूबर, सन् १६३०

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

पागल का प्रलाप

[पं० कृष्णप्रसाद जी कौल, सर्वेंगट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी]

"कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई"

जब मैंने इस भव-बन्धन से विमुक्त होकर आत्मिक-जगत में प्रवेश किया तो देखता क्या हूँ कि स्वर्ग और नरक के दूत प्रयाग और काशी के पण्डों की तरह परस्पर उलझ रहे हैं। एक कहता है, इसने धर्म के लिए प्राण-विसर्जन किया है, जाति और देश के लिए अपने को निछावर किया है। यह ईश्वर के भक्तों का सेवक है, इसलिए इसे स्वर्ग में स्थान दिया जायेगा और हम इसे वहीं ले जायँगे। दूसरे का हठ है कि नहीं, इसने भूखों मर-मर कर जान दी है, जो आत्म-हत्या के तुल्य है। जीवन परमात्मा का दान है। इसने उसका सदुपयोग न कर, उसके लिए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता न प्रकाशित कर, उस दान को ठुकरा दिया है। यह घोर नास्तिकता है। इसने ईश्वर का अपमान किया है, इसलिए यह नरक की सज़ा पाने के योग्य है, और इसे हम वहाँ ले जाए बिना कदापि न छोड़ेंगे। तिरसठ दिनों तक बिना अन्न-जल के बिता कर, मैं एक सीमा तक नरक से निर्भय और स्वर्ग से निस्पृह हो चुका था। मुझे उनके झगड़ने पर हँसी आई। मैंने कहा—मुझे 'एराफ़' (स्वर्ग और नरक के मध्य का स्थान) में ही छोड़ दो और तुम दोनों जाकर अपने महाप्रभु से इस विवाद की मीमांसा करा लाओ।

यह बात उनकी समझ में आ गई। मुझे 'एराफ़' में छोड़ कर वे दोनों चले गए। मैं बेकारी और प्रतीक्षा से ऊब रहा था, इतने में उन्होंने आकर कहा कि जगत्पति इस समय काम में व्यस्त हैं, तुम्हारा मामला पीछे पेश होगा।

मैंने कहा—न मुझे फ़ैसले की जल्दी है और न उसकी कोई चिन्ता, परन्तु मैं बेकारी से ऊब रहा हूँ। यहाँ कुछ पढ़ने को मिल सकता है?

उन्होंने ईश्वर के सरकारी दफ़्तर की कई बड़ी-बड़ी जिल्दें मेरे सामने लाकर डाल दीं और कहा—विश्व-विधान और ईश्वरीय नियम सम्बन्धी तमाम समस्याओं और व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में परमात्मा की आज्ञाएँ इसमें लिखी हैं। इन्हें पढ़ो, इससे तुम्हारा समय बीत जायगा।

मैंने इसी पर सन्तोष किया और तुरन्त उनके पढ़ने में लग गया। पढ़ता जाता था और बड़ी सावधानी से यह ढूँढ़ता जाता था कि कहीं मेरे अभियोग का भी कोई दूसरा उदाहरण (नज़ीर) मिल जाता तो मैं देखता कि उसका निर्णय क्या हुआ है। परन्तु तमाम दफ़्तर उलट डालने पर भी जो ढूँढ़ता था, वह न मिला। ज्ञात हुआ कि ईश्वरी आज्ञा में भी भारतीय दण्ड-विधान की तरह, सर जेम्स क्रेरार के कथनानुसार 'लकूना' अर्थात कमी पड़ गई है, जिसकी पूर्ति करने की आवश्यकता है। मैं इस परिणाम पर पहुँचा ही था, कि एकाएक ख़याल आया कि वर्तमान समय में मेरे अग्रगामी एक मियाँ मेकस्विनी भी तो हो चुके हैं। आख़िर उनका क्या परिणाम हुआ। मैं इसी विचार में था कि एक दिन वही दोनों दूत मेरा कुशल-सम्वाद जानने के लिए आए। मैंने तुरन्त ही पूछा—मित्रो, मेरे पहले मेकस्विनी नाम के एक व्यक्ति के सम्बन्ध में भी तो ठीक ऐसी ही घटना घटित हो चुकी है; उसके सम्बन्ध में क्या आज्ञा हुई थी?

उन्होंने कहा—उनका अभियोग भी आपकी तरह ही विचाराधीन है।

मैं आश्चर्य में पड़ कर उनकी ओर देखने लगा तो वे मुस्कुराए और कहने लगे—वाह, आप भी विचित्र हैं, आपको आश्चर्य किस बात का हो गया। आपके यहाँ कई ज़िले हैं, प्रत्येक ज़िले में दर्जनों ऑफ़िस हैं, तथापि कभी-कभी छोटे-छोटे मामलों के फ़ैसले में भी महीनों नहीं, बल्कि बरसों लग जाते हैं। और यहाँ सारे विश्व की व्यवस्था करनी पड़ती है। एक अल्लाह मियाँ, तनतनहा आज्ञा देने वाले ठहरे, ऐसी दशा में तो देर का न लगना ही आश्चर्य की बात थी। फिर यहाँ समय का अन्दाज़ा महीनों या बरसों के हिसाब से नहीं, बल्कि युगों के हिसाब से होता है। आपको आए मुश्किल से एक युग हुआ है। मियाँ मेकस्विनी को आए हुए दो-तीन युग हुए होंगे। आख़िर हथेली पर सरसों कैसे जमाई जा सकती है?

यह उत्तर सुन कर मैं तो हक्का-बक्का रह गया। इतने में वे दोनों ग़ायब हो गए।

निदान जब मैं यहाँ की उमस और बेकारी से घबरा उठा तो एक दिन यह आज्ञा सुनाई गई कि इसके पाप और पुण्य के दोनों पल्ले बराबर हैं। यह न स्वर्ग के योग्य है न नरक के, इसलिए इसे मर्त्यलोक को वापस कर दो। अवश्य ही इसे यह सुविधा दी जायगी कि पुनर्जन्म नहीं ग्रहण करना पड़ेगा। इसके नवजीवन का आरम्भ वहीं से होगा, जहाँ से उसे छोड़ा है। इसके अतिरिक्त इसे आत्मिक जगत का जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त हो गया है वह सांसारिक जीवन में भी बाक़ी रहेगा, जिससे यह फिर ऐसी भद्दी भूल न कर सके। यों तो, कौन नहीं जानता कि संसार दुःख और कष्ट का आगार है और मुझ पर भी कुछ कम कड़ी मुसीबतें नहीं पड़ी थीं, तथापि संसार मुझे बड़ी ही दिलचस्प जगह मालूम होती थी और मैं इसे ख़ुशी से छोड़ना नहीं चाहता था। वह तो पञ्जाब-सरकार के साथ कुछ ऐसी ज़िद ही पड़ गई थी कि मैंने भी उसकी हठधर्मी तोड़ने का बीड़ा उठा लिया, नहीं तो पहले भी एक ऐसी ही घटना हो चुकी थी और बङ्गाल की सरकार की शिष्टतापूर्ण बातचीत से सारा झगड़ा बड़ी सहूलियत से निपट चुका था। फलतः यह आज्ञा सुन कर मेरी बाछें खिल गईं और झट भारतभूमि पर वापस पहुँचा दिया गया। जब मैंने इस मृत्युलोक को छोड़ा था, तब सन् १९२९ के सितम्बर महीने का आरम्भ था और वापस आकर लोगों से पूछता हूँ तो सभी सन् १९५६ का नवम्बर बता रहे हैं। मैं विस्मित हूँ कि पलक मारते एक पुश्त का समय कैसे बीत गया? यही नहीं; वरन् इस आश्रयहीनता की दशा में मैंने जो देश की ख़ाक छानना आरम्भ किया तो देखा कि यहाँ की तो काया-पलट हो गई है। अब तो हिन्दोस्तान का बाबा आदम ही निराला हो गया है। हमारे समय में तो लड़कों की शिक्षा भी अनिवार्य न थी और अब लड़कियों में भी पढ़ने-लिखने की यथेष्ट चर्चा हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि युनिवर्सिटियों में लड़कों की तरह लड़कियाँ भी बाल कतरवा कर तथा ख़ाकी घुटन्ने पहन कर मैदान में क़वायद और निशानेबाज़ी सीख रही हैं। ऐसी हालत में पर्दे का तो ज़िक्र ही क्या, वह तो हिन्दोस्तान के मर्दों की आँखों से उठ कर बृटिश गवर्नमेण्ट की अक़्ल पर पड़ गया है। जिस समय मैं लाहौर की जेल में अनशन का अभ्यास कर रहा था, उस समय एसेम्बली में 'शारदा-बिल' के नाम से एक क़ानून का मसौदा पेश था, जिसका मतलब यह था कि चौदह वर्ष से कम उमर की लड़कियों की शादी क़ानून द्वारा निषिद्ध कर दी जानी चाहिए। इसके विरुद्ध पुराने विचार के लोगों ने भारी हो-हल्ला मचा रक्खा था। इन विरोधियों में बड़े-बड़े नामी लीडर भी थे। परन्तु चौदह तो दरकिनार, अब अगर अट्ठारह वर्ष की लड़की से भी पूछता हूँ कि तुम्हारा विवाह हो गया है तो वह इसे अपना अपमान समझती है। हमारे सामने मसजिदों के सामने बाजा बजाने और गो-हत्या के लिए आए-दिन हिन्दू-मुसलमानों में झगड़े और बलवे हुआ करते थे। मगर अब इनकी चर्चा कहीं सुनने में भी नहीं आती। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि सन् १९३७ की विश्व-व्यापी बाढ़ ने काशी के भारतधर्म-महामण्डल और लखनऊ के फिरङ्गी महल को जब से ढा दिया और दूध चार आने सेर की जगह आठ आने सेर बिकने लगा, तो गो-हत्या बन्द हो गई। तथा मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने जब से मसजिदों में बाजा बजाने का रिवाज जारी कर दिया तब से हिन्दोस्तान के मुसलमानों ने भी बाजा बजाने पर एतराज़ करना छोड़ दिया। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि देश से तमाम लड़ाई-झगड़े दूर हो गए हैं। पहले हिन्दू-मुसलमानों में बलवे होते थे, अब पुलिस और फ़ौज के साथ देश के नवयुवकों की लड़ाइयाँ हुआ करती हैं।

जब से इण्डिपेन्डेन्स अर्थात् पूर्णस्वाधीनता का बखेड़ा कॉङ्ग्रेस ने खड़ा किया, तब से सरकार ने सार्वजनिक शान्ति की रक्षा के लिए कॉङ्ग्रेस का वार्षिक अधिवेशन बन्द कर दिया। अब सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों का होना बिलकुल बन्द हो गया है। प्रेस-एक्ट के पुनः प्रहार तथा उसकी सख़्तियों से तङ्ग आकर अख़बार वालों ने अपना असन्तोष इस तरह दिखाया कि एकदम अख़बार निकालना ही बन्द कर दिया है। जिनको अख़बार पढ़ने की बीमारी है, वे एङ्गलो इण्डियन अख़बारों से अपना मनोरञ्जन कर लिया करते हैं। तात्पर्य यह कि देश में राजनीतिक हड़ताल है। पुराने नेताओं में से न अब किसी का नाम सुनाई देता है और न कोई देखने में ही आता है। कतिपय नेताओं से 'एराफ़' में भेंट हुई थी तो आश्चर्य हुआ कि ये बेचारे यहाँ कहाँ से आ फँसे हैं। फिर मालूम हुआ कि धर्महीनता और नास्तिकता के पाप ने इनकी स्वदेश-भक्ति और परोपकार के पुण्य को धोकर बहा दिया है, इसलिए इनके लिए स्वर्ग का द्वार बन्द है। वहाँ केवल हिन्दू-सभा और ख़िलाफ़त कमेटी के लीडर ही जाने पाते हैं। क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से अपना इहलोक और परलोक, दोनों सँभालने की फ़िक्र कर ली है। कुछ तो अभी जीवित हैं। उनमें कोई घर बैठे-बैठे मृत-कॉङ्ग्रेस के लिए मर्सिया (शोक-गायन) लिखने में लगे हैं, कोई भारत के क़ानूनी शासन का विधान तैयार करने में लगे हैं। एक सज्जन ने महात्मा गाँधी की असहयोग-नीति पर कई बड़ी-बड़ी पुस्तकें तैयार कर डाली हैं। नए लीडरों का कोई नाम नहीं जानता। विश्वविद्यालय के छात्र और देश के नवयुवकों में जब इनका ज़िक्र होता है तो साङ्केतिक कथोपकथन होने लगते हैं। जिनके समझने से मैं एकदम वञ्चित रहता हूँ। कौन्सिलों

का यह हाल है कि वहाँ या तो नीच जातियों के प्रतिनिधि दिखाई देते हैं या बड़े-बड़े जागीरदार या ताल्लुक़ेदार! कभी कदाच स्वराजी पलटन के भूले-भटके और बिछुड़े हुए ख़ुदाई फ़ौजदार दिखाई पड़ जाते हैं। यह 'सिविल दस उवेद्स, नो टक्स कम्पनी, आवेस टरकश' और इसी तरह की भाँति-भाँति की बोलियाँ बोलते हैं, जो न किसी की समझ में आती हैं और न जिन पर कोई ध्यान देता है। अन्त में बेचारे अपनी बेकसी पर चुप हो जाते हैं। सरकार सूखी सहानुभूति दिखा कर इनके आँसू पोंछ देती है। डोमिनियन स्टेटस और नेहरू-रिपोर्ट की माँग भी पेश की जाती है। जब कौन्सिलों से डोमिनियन स्टेटस का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो जाता है तो सरकार कह देती है कि विषय विचाराधीन है, परन्तु अभी अन्तिम निर्णय में कुछ देर लगेगी। यह कैफ़ियत देख कर मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि देशी राजनीति के सम्बन्ध में चारों तरफ़ अकर्मण्यता फैल गई है। परन्तु जब मैंने अख़बार पढ़ना आरम्भ किया तो मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना ही न रहा। किसी न किसी स्थान से रोज़ ही यह ख़बर आने लगी कि आज अमुक जगह बम फटा तो अमुक सरकारी अफ़सर की हत्या हुई! पुलिस ने कुछ नवयुवकों को पकड़ने की चेष्टा की तो दोनों ओर से राइफ़ल और पिस्तौल से गोलियाँ चलीं। पहले सुना करते थे कि जाट, अहीर और पासी चोरी के लालच से डाका डाला करते हैं और अब पढ़ने में आया कि शरीफ़ ख़ान्दान के पढ़े-लिखे नवयुवक डाका डाल कर उस कमी को पूरा करते हैं जो पहले जातीय चन्दों से पूरी होती थी। तात्पर्य यह कि नवयुवकों ने देश में ख़ासी चहल-पहल मचा रक्खी है। इन लोगों में नाइट क्लब की चर्चा हमेशा हुआ करती है—यद्यपि दबी ज़बान से, और सब बातों में कुछ गुप्त परामर्श का अंश अवश्य होता है। यह सब अच्छी तरह मेरी समझ में नहीं आता था। सोचने लगा कि नवयुवकों से मिल कर इस रहस्य को जान लेना चाहिए। मैं ख़ुद इस हङ्गामे में पड़ूँ या न पड़ूँ, कम से कम जो कुछ हो रहा है, उससे जानकारी तो प्राप्त करनी चाहिए। जब मैंने 'एराफ़' से इस भूलोक की ओर प्रस्थान किया था तो देव-दूतों से कह दिया था कि मैं विशेष कारणों से बङ्गाल से अलग ही रहा चाहता हूँ और चूँकि पञ्जाब में भी मुझे लोग जानते हैं, इसलिए मुझे संयुक्त प्रान्त में पहुँचा दिया जाए तो अच्छा है। फलतः वे लोग मुझे मगरवारे के पास गङ्गा किनारे छोड़ कर चले गए थे। मैं वहाँ से भटकता हुआ लखनऊ पहुँच गया। यहाँ मुझे तीन मास से अधिक हो गए थे और कई आदमियों से घनिष्ठता भी हो गई थी। मैं जिस धुन में था, उसका ज़िक्र अपने एक मित्र से किया तो उन्होंने मुस्कुरा कर उत्तर दिया कि क्या हर्ज है।

मेरे यही मित्र शङ्करनाथ जी एक दिन तीसरे पहर को मुझसे मिले और बोले कि चलो तुम्हें मुकुटबिहारी से मिला दें। उनसे मिलने पर तुम्हें बहुत सी बातें मालूम हो जाएँगी। मुकुटबिहारी राजा यशवन्तसिंह के छोटे लड़के थे। राजा यशवन्तसिंह ज़िला सीतापुर के बड़े तालुक़ेदारों में से थे। आदमी पढ़े-लिखे, उज्ज्वल मस्तिष्क वाले और स्वतन्त्र विचार के थे। कौन्सिल के सदस्यों में अग्रगण्य समझे जाते थे। सरकारी अधिकारियों में भी आपकी पैठ थी। आपकी सन्तान में दो लड़के और एक लड़की थी। बच्चों की शिक्षा की ओर आपका यथेष्ट ध्यान था। बड़े लड़के व्रजराजबिहारी इलाहाबाद के कृषि-कॉलेज की अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण होकर आजकल रियासत का काम देखते थे, मुकुटबिहारी तीन वर्ष से लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे और उनकी बहिन मनोरमा लखनऊ युनिवर्सिटी में एम० एस-सी० पास करने की तैयारी में थी। मुकुटबिहारी की अवस्था प्रायः चौबीस वर्ष और मनोरमा की बाईस वर्ष की थी। दोनों भाई-बहिन अपनी माता के साथ बी रोड पर अपनी कोठी में रहते थे। कोठी निहायत आलीशान और सुसज्जित थी। तीसरे पहर का समय था, जब मैं और शङ्करनाथ उनकी कोठी पर पहुँचे। सम्वाद भेजा गया, हम लोग ड्राइङ्ग रूम में बुलाए गए। वहाँ उस समय मुकुटबिहारी और मनोरमा के सिवा एक और सज्जन उपस्थित थे, जिनका नाम पीछे मालूम हुआ कि काशीनाथ था और युनिवर्सिटी लाइब्रेरी में असिस्टेण्ट का काम करते थे। शङ्करनाथ ने मुकुटबिहारी और मनोरमा से मेरा परिचय कराया। दोनों बड़े प्रेम और आग्रह से मिले। चाय मँगवाई गई। शङ्करनाथ तो चाय पीकर किसी ज़रूरत से चले गए। पर मैं तथा काशीनाथ बैठे बातें करने लगे। पहले तो कुछ इधर-उधर की बातें होती रहीं, फिर राजनीति की चर्चा छिड़ी। मैंने कहा—पिछले पन्द्रह साल से तो यहाँ की राजनीति का बिलकुल रङ्ग ही बदल गया है। मेरी तो कुछ समझ में ही नहीं आता।

मुकुट०—तो क्या आप देश से कहीं बाहर थे?

मैं—हाँ, मैं जब सत्रह साल का था और कॉलेज में पढ़ता था, तभी आवश्यकतावश मुझे फ़िजी चला जाना पड़ा। वहाँ से पन्द्रह वर्ष बाद आया हूँ और देखता हूँ कि इस बीच में देश की कायापलट हो गई है।

मुकुट०—मुझे इसका ज्ञान नहीं, क्योंकि मैंने तो जब से होश सँभाला है, तब से यही रङ्ग देखा और इसी में शिक्षा-दीक्षा पाई है। हाँ, इतना अन्तर अवश्य हो गया है कि गत पाँच-सात वर्षों से देश का बल-बूता बहुत कुछ बढ़ गया है, और प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। परन्तु यह कोई दुख और चिन्ता की बात नहीं, जैसा कि आपके स्वर से मालूम होता है।

मैं—अजी महाशय, एक समय था जब कॉङ्ग्रेस का बड़ा ज़ोर था, धुआँधार वक्तृताएँ सुनने में आती थीं, अख़बारों में जोशीले लेख निकलते थे, प्रत्येक मनुष्य महात्मा गाँधी का कलमा पढ़ता था, हर तरफ़ से 'महात्मा गाँधी जी की जय' की गगन-भेदी ध्वनि सुनाई देती थी। पर अब तो सन्नाटा पड़ा है और जो कुछ ख़बरें सुनने में आती हैं, वह इतनी भयङ्कर कि सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मुकुट०—इसमें भयङ्करता की कौन सी बात है। हर ज़माने का रङ्ग अलग-अलग होता है। वह व्याख्यानों और लेखों का युग था, अब क्रियात्मक आन्दोलन का युग आया है। हाँ, इस समय दिल-गुर्दे की ज़रूरत है।

मनोरमा—(मेरी ओर देख कर) गाँधी से आपका आशय महात्मा गाँधी से है? वह तो बड़ी पदवी के महात्मा थे, जैसे महात्मा बुद्ध, गुरु नानक और ऋषि दयानन्द। मेरी माँ तो उनको ईश्वर का अवतार कहती हैं। चौबीस अवतार तो सुने थे, अब इनको पच्चीसवाँ अवतार बताती हैं।

काशीनाथ—तो इसमें सन्देह ही क्या है? वह वास्तव में साधारण मनुष्य न थे। भारतवर्ष ही नहीं, सारा संसार उनके महत्व को स्वीकार करता था। भारत में तो अब भी उन्हें पूजते हैं।

मनोरमा—उनके नाम से तो कई मन्दिर बने हैं। अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में मैंने उनकी सङ्गमर्मर की मूर्ति देखी है। ऐसी सुन्दर और पवित्र कि वर्णन नहीं हो सकता। काशी में भी गाँधी का मन्दिर है।

मुकुट०—वह मन्दिर नहीं, 'काशी विद्यापीठ' है।

मनोरमा—वाह! मैंने ख़ुद देखा है, मूर्ति को हार पहनाए जाते हैं, आरती की जाती है, जो लोग दर्शन करने आते हैं, पैसे चढ़ाते हैं। बाहर दीवारों पर, जैसे किसी मन्दिर पर 'सीताराम, सीताराम' 'जय शिव जय शिव' गेरू से लिखा रहता है, वैसे ही वहाँ महात्मा गाँधी की जय से तमाम दीवारें भरी हुई हैं और कहीं-कहीं एक पहिया-सा भी बना हुआ है, मन्दिर तो है ही।

मुकुट०—तुम बड़ी बेवक़ूफ़ हो। वह चर्ख़ा है, पहिया नहीं।

मनोरमा—तो मैंने जो चीज़ न कभी देखी और न सुनी, उसका नाम कैसे बता सकती हूँ।

मुकुट०—मैं देखता हूँ कि तुम्हारी स्मृति अभी से बिगड़ती जाती है। चर्ख़ा तुमने कभी देखा नहीं है?

मनोरमा—जी, नहीं देखा है। आप उस खिलौने को कहते होंगे जो दद्दा जी के ड्राइङ्ग रूम में रक्खा हुआ है। लखनऊ का बना हुआ गेरू के रङ्ग का मट्टी का चर्ख़ा।

मुकुट०—जी नहीं; आपने सचमुच का देखा है, आपको याद नहीं।

मनोरमा—अच्छा तो बतलाइए, कहाँ देखा है?

मुकुट०—क़ैसरबाग़ वाले अजायबख़ाने में एक सचमुच का पुराना चर्ख़ा नहीं रक्खा है और आपने नहीं देखा है?

मुझे मुस्कुराहट आ गई और मनोरमा बिना परास्त हुए बोली—आप तो हँसी करते हैं। वह तो देखा है और बीसों विचित्र-विचित्र चीज़ें वहाँ देखी हैं। उनसे क्या मतलब?

काशीनाथ—महात्मा गाँधी केवल महात्मा और सन्त ही न थे, वरन् वह ऐसे ऊँचे दर्जे के राजनीतिक लीडर थे कि ऐसा कोई लीडर भारतवर्ष में पैदा ही नहीं हुआ। उन्होंने ब्रिटिश सरकार से खुल्लमखुल्ला संग्राम किया था और ऐसी विजय प्राप्त की कि आज तक उसकी याद भारतीयों के दिलों में चुटकियाँ लेती है।

मनोरमा—इतिहास में कहीं भी इस लड़ाई का ज़िक्र नहीं है। ब्रिटिश सरकार से, अन्तिम लड़ाई, सौ वर्ष पहले सन् १८५७ में हुई थी, पर इसमें भी मतभेद है। कुछ लोग उसे 'वार ऑफ़ इण्डिपेन्डेन्स' कहते हैं और कुछ लोगों की राय है कि फ़ौज ने ग़दर किया था।

काशीनाथ—महात्मा गाँधी का उद्देश्य हिंसात्मक युद्ध नहीं था, वह तो केवल चर्ख़े के बल पर लड़ते थे।

मनोरमा—यह बात तो कुछ समझ में नहीं आती।

मुकुट०—(मुस्कुरा कर) जी हाँ, बक़ौल शायर—

इस सादगी पै कौन न मर जाय ऐ ख़ुदा—
लड़ते हैं, और हाथ में तलवार भी नहीं !!

काशीनाथ—महाशय, दिल्लगी नहीं थी, हज़ारों को जेलख़ाने की सज़ा हो गई। न मालूम कितने जीवन नष्ट हो गए।

मुकुट०—भाई लड़ाई में जेलख़ाने नहीं होते, सर कटते हैं।

मनोरमा—भई, हमारी समझ में नहीं आया। यह चर्ख़े की लड़ाई कैसी? क्या उस वक़्त हम लोग हथियार बनाना नहीं जानते थे।

मुकुट०—मनोरमा, वह ज़बानी लड़ाई थी। जैसे, 'शैम फ़ाइट' होती है, सचमुच की लड़ाई नहीं।

मनोरमा—तब देश ने गत पन्द्रह वर्षों में बड़ी उन्नति की है।

काशीनाथ—यह उन्नति नहीं, हमारी सभ्यता पर एक भद्दा धब्बा है। एक ओर सभ्यता और शिष्टता का दावा और दूसरी ओर मार-काट और अर्द्ध पशुवत् कर्म! यूरोप वाले आज शान्ति और सुलह की क़समें खा रहे हैं और ख़ून-ख़राबी तथा लड़ाई-झगड़े का ख़ातमा करना चाहते हैं। और आप महात्मा गाँधी की, जिन्होंने सारे संसार को अहिंसा का सन्देश सुनाया था, हँसी उड़ाते हैं। 'सोल फ़ोर्स' (आत्मबल) और सत्याग्रह का सन्देश, संसार को सब से पहले महात्मा गाँधी ने ही सुनाया और समस्त भारतवर्ष ने उसके आगे अपना मस्तक झुका दिया।

मुकुट०—मैं तुम्हारे 'सोल फ़ोर्स' के विरुद्ध कुछ नहीं कहता। पहले महात्मा ईसा ने संसार को ऐसा ही सन्देश दिया था। अब दो हज़ार वर्ष बाद महात्मा गाँधी ने फिर उसकी पुनरावृत्ति की है; सम्भवतः दो हज़ार वर्ष के बाद कोई और महापुरुष पैदा होंगे और संसार को अपना करश्मा दिखाएँगे। मगर यह तो बतलाओ कि हमारा क्या परिणाम होगा? कहावत है कि 'घड़ी में घर जले ढाई घड़ी भद्रा!' महात्मा ईसा के नाम पर हज़ारों नहीं, बल्कि लाखों गिरजे बन गए। महात्मा गाँधी की मूर्ति भी बहुत से मन्दिरों में पूजी जाती है, परन्तु हमारी गुलामी की ज़ञ्जीरें अभी तक ढीली नहीं हो सकीं और यूरोप वाले आज भी मार-काट का सामान एकत्र करने में उसी प्रकार जुटे हैं, जैसे पहले जुटे रहते थे।

काशीनाथ—मैं इसको नहीं मानता। भारत में महात्मा के सन्देश का जो असर हुआ और जिस तरह लोगों ने उसका स्वागत किया, उसकी स्मृति आज तक बनी है।

मुकुट०—तो भई, एक ही के 'सोल फ़ोर्स' से काम नहीं चलता। तुमसे जिनसे पाला पड़ा है, अर्थात् अङ्गरेज़ों से, वे तो इस तत्व को समझते नहीं।

काशीनाथ—हथेली पर सरसों नहीं जमा करती। प्रभाव पड़ते-पड़ते पड़ेगा। वह भी समझने लगेंगे।

मुकुट०—हाँ, जब हमारी तरह वे भी भूखों मरने लगेंगे, तन ढँकने को कपड़ा नहीं रहेगा, बीमारी और गन्दगी से उनके यहाँ भी जब बरबादी होने लगेगी और रगों में ख़ून, जोश पैदा करने के बदले सूखने लगेगा, तब वे भी 'सोल फ़ोर्स' और सत्याग्रह के क़ायल हो जाएँगे। परन्तु इसके लिए अभी एक युग चाहिए।

काशीनाथ—माना, आप ही कौन से गढ़ जीत रहे हैं? एक-दो नाइट-क्लब जो आपने स्थापित कर लिए हैं, उन्हीं पर भूलते हैं?

मुकुट०—कम से कम रास्ता तो सीधा पकड़ा है, मार्ग-भ्रष्ट तो नहीं हो रहे हैं।

काशीनाथ—परन्तु इस रहस्य का पता न लगा कि वहाँ होता क्या है?

मुकुट०—आपको इससे क्या दिलचस्पी है, आप तो गाँधी-पन्थी हैं। बस, चर्ख़ा चलाया कीजिए।

काशीनाथ—नहीं भाई, अगर मालूम हो कि तुम लोग वाक़ई कुछ कर रहे हो तो हम भी तुम्हारे साथ सम्मिलित हो जायँ, मगर कुछ बताओ तो सही।

मुकुट०—पहले यह विश्वास हो कि आप कुछ करने के लिए तैयार हैं।

काशीनाथ—भई, जैसा पक्का वादा चाहो, ले लो। मैं दिल्लगी नहीं कर रहा हूँ। अगर समझ में आ जाएगा तो दिलोजान से तुम्हारा साथ दूँगा।

मुकुट०—भई, वहाँ का हाल 'फ़्रीमेसन' का सा है, तुम वहाँ का रहस्य जान कर उसे कहीं प्रकट नहीं कर सकते। चाहे शरीक हो चाहे न हो, पर मुँह नहीं खोल सकते।

काशीनाथ—मञ्ज़ूर।

मैं—मैं भी इस विषय को जानने के लिए बेचैन हो रहा हूँ; बल्कि इसी इच्छा से आपसे मिलने आया था। मैं इसका तो आपसे वादा नहीं कर सकता कि आपका साथ देकर आपका हाथ बटाऊँगा। पर इसका पक्का वादा करता हूँ कि जो कुछ आँखें देखेंगी, ज़बान से न निकलेगा।

मुकुट०—देखिए साहब। यह बच्चों का खेल नहीं, इसमें जान का जोखिम है। इसे सोच लीजिए। अभी कुछ नहीं गया है, परन्तु भविष्य में वादाख़िलाफ़ी हुई तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

हम दोनों ने ज़बान न खोलने का पक्का वादा किया; बल्कि काशीनाथ ने तो यहाँ तक कहा कि अगर इसमें ज़रा भी फ़र्क़ आए तो गर्दन उड़ा देना। इस पर मुकुट-बिहारी ने कहा—"अच्छा, चलिए, मेरे पढ़ने के कमरे में। मैं आपको क्लब की नियमावली दिखा दूँ। पहले उसे ध्यानपूर्वक पढ़ लीजिए, फिर रात को आपको क्लब भी ले चलूँगा। वहाँ आपको हमारे नेता के सामने शपथ खानी पड़ेगी, तब क्लब में दाख़िल हो सकिएगा।" हम दोनों ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया और चारों आदमी वहाँ से उठ कर दूसरे कमरे की ओर चले। संयोगवश काशीनाथ ने दरवाज़े की चौखट से ठोकर खाई और गिरते-गिरते बचे। सम्हल कर मुकुट के साथ हो लिए। मनोरमा भी उनके पीछे थी। जब काशीनाथ ने ठोकर खाई तो मनोरमा ने उनकी जेब से एक पत्र और

उठ जा सोते हुए सिंह!

[प्रोफ़ेसर 'कुमार' एम० ए०]

काँप रही है क्यों आशा,
तेरी आँखों के आगे।
बतला दे, बतला दे ना,
ऐ भारतवर्ष अभागे!!

सूनी-सी आँखों से गिरता,
क्यों आँसू का पानी।
नया रूप रख कर आई क्या—
तेरी व्यथा पुरानी?

कैसे युद्ध करेगा पाकर ये निर्बल कृष बाहें!
तेरे पास रखा ही क्या है? कुछ थोड़ी सी आहें!

क्यों बुझता है? अरे—
विश्व-भर के दैदीप्य उजाले!
उठ जा, सोते हुए सिंह!
दुनियाँ का दिल दहला ले!!

दिखला लेने दे औरों को—
अपना ज़रा तमाशा!
फिर तो—सुन, तुझ पर ही है—
कितनी आँखों की आशा!!

गूँजेंगे 'भविष्य' में भारत! तेरी जय के गाने!
झूम, मस्त हो झूम, अरे आज़ादी के दीवाने!!

लिफ़ाफ़ा सामने गिरते देखा। उसने चाहा कि उसे उठा कर उन्हें दे दे, परन्तु जब लिफ़ाफ़े पर उसकी दृष्टि पड़ी तो आश्चर्य-चकित होकर वहीं ठिठक गई। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया। लिफ़ाफ़ा उठा कर उसने जेब में डाल लिया। हम तीनों व्यक्ति तो आगे वाले कमरे में चले गए, परन्तु मनोरमा बहाना करके ड्रॉइङ्ग रूम में लौट आई। मुकुट ने अपनी मेज़ की दराज़ का ताला खोला और एक प्रति नियमावली की निकाल कर हम दोनों व्यक्तियों को पढ़ने को दी।

क्षण भर के बाद काशीनाथ बोले—भई, इस नियमावली के साथ यह हुसन्ना-सा क्या नत्थी है?

मुकुट०—कुछ नहीं, इसको अभी आप समझ नहीं सकते।

काशीनाथ—अच्छा तो यह नियमावली थोड़ी देर के लिए मुझे दे दो। मैं घर ले जाकर इसे इतमीनान से पढ़ूँगा।

मुकुट०—ना, यह नहीं हो सकता। यहीं देख लो, मैं दे नहीं सकता।

काशीनाथ ने हँस कर कहा—मियाँ, बड़े वहमी और शक्की हो। ख़ैर, न सही।

यह बातचीत हो ही रही थी कि मनोरमा ने कमरे में प्रवेश किया। वह कुछ घबराई हुई सी थी। उसने जब नियमावली की कॉपी काशीनाथ के हाथ में देखी तो उसके चेहरे का रङ्ग फीका हो गया। परन्तु अपने मनोभाव को छिपा कर कुर्सी पर बैठ गई।

थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं, फिर काशीनाथ ने कहा—"भई, चल दिए।" मैंने भी विदा चाही और रात को अमीनाबाद के चौराहे पर सबके एकत्र होकर क्लब में चलने की ठहरी। इस तरह बातें करते मुकुट-बिहारी, मनोरमा, काशीनाथ और मैं बरामदे से बाहर निकले और कोठी के बाग़ से होते हुए दरवाज़े पर पहुँचे। मैंने मुकुट और मनोरमा से हाथ मिलाया। काशीनाथ ने मुकुट से हाथ मिलाने के बाद मनोरमा की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया तो उसने बड़ी लापरवाही से अपना हाथ खींच लिया और बोली—मैं ऐसे मित्रों से, जो झूठी शपथ खाते और झूठी प्रतिज्ञाएँ करते हैं, हाथ नहीं मिला सकती।

काशीनाथ ने तेवर बदल कर जवाब दिया—आप मेरा अपमान करती हैं!

मनोरमा बोली—तुम पुलिस के जासूस हो और यहाँ से जीते जी नहीं जा सकते।

यह सुनते ही काशीनाथ का चेहरा उतर गया। वह सँभल कर कुछ कहना ही चाहते थे कि मनोरमा ने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा कर, जिसमें पिस्तौल थी, काशीनाथ की छाती पर गोली दाग़ दी। काशीनाथ वहीं ढेर हो गया! मैं हक्का-बक्का हो गया। मुकुट ने कहा—मनोरमा, यह तुमने क्या अनर्थ कर डाला!

मनोरमा ने जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाल कर मुकुट-बिहारी को दिया और निहायत लापरवाही से रूमाल द्वारा पिस्तौल का मुँह, जिसमें से गोली निकली थी, साफ़ करने लगी। मुकुट पत्र पढ़ने में संलग्न था और मनोरमा पिस्तौल साफ़ करने में। मैं सन्ध्या के धुँधले प्रकाश में आश्चर्य से आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था कि कोई आ तो नहीं रहा है कि एकाएक किसी के ज़ोर से आने की आहट कानों में आई। मैं सँभला ही था कि एक पुलिस कॉन्स्टेबिल मेरे सर पर खड़ा दिखाई पड़ा। उसने मनोरमा के हाथ में पिस्तौल देख कर सब से पहले उसी पर हाथ डालना चाहा। मैंने ललकारा, ख़बरदार, जो हाथ लगाया, दूर हो यहाँ से। कॉन्स्टेबिल ने एक हाथ से तो मनोरमा का हाथ पकड़ा और दूसरे से मुझे ऐसा धक्का दिया कि मैं तिलमिला कर रह गया। परन्तु ईश्वर जाने मुझ पर क्या पागलपन सवार हो गया कि मैं सँभल कर उसकी ओर लपका और मनोरमा के हाथ से पिस्तौल छीन कर कॉन्स्टेबिल को गोली मार दी। उसकी लाश भी काशीनाथ की लाश के पास तड़पने लगी। अब हम तीनों इतमीनान से कोठी में गए और कमरे में बैठ कर बातचीत होने लगी। मैंने कहा—यह तो जो कुछ हुआ, ठीक हुआ; परन्तु अब गिरफ़्तारी के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

मनोरमा ने कहा—तीनों गिरफ़्तार नहीं हो सकते। मैं अपराध स्वीकार करूँगी, सारा झगड़ा तै हो जाएगा।

मैंने कहा—यह नहीं हो सकता। मैंने कॉन्स्टेबिल को मारा है, मैं अपराध स्वीकार कर लूँगा।

मुकुट—तुम्हें याद है कि हमारा-तुम्हारा ऐसी दशा

में क्या वादा था ? यह कैसे मुमकिन है कि तुम गिरफ़्तार हो जाओ और मैं खड़ा तमाशा देखूँ ?

मैं—मुझे तो यह कोई बुद्धिमानी की बात नहीं मालूम होती कि एक साधारण सी बात के लिए तीन जानें भेंट चढ़ाई जायँ ! आप लोगों को अभी बहुत काम करना है, मैं फ़ालतू आदमी हूँ। बस, आप लोग हठ न कीजिए और मुझे अपराध स्वीकार कर लेने दीजिए।

मनोरमा ने भवें सिकोड़ कर कहा—मैं दूसरों का आश्रय लेकर मुँह छिपाना पसन्द नहीं करती।

मैंने कहा—यह आपकी इच्छा है। परन्तु मैं तो पुलिस के सामने अपना अपराध अवश्य ही स्वीकार करूँगा।

मुकुट०—अच्छा, इसका निर्णय क्लब की कमेटी पर छोड़ दिया जाय और प्रत्येक उसके निर्णय को स्वीकार करे।

मनोरमा—मुझे स्वीकार है ?

मैं—मुझे भी स्वीकार है।

मुकुट०—अच्छा तो तुरन्त यहाँ से निकल चलो, नहीं तो क्लब पहुँचना भी कठिन हो जाएगा।

डर था कि दरवाज़े पर भीड़ लगी होगी और पुलिस भी आ पहुँची होगी, इसलिए पीछे के रास्ते से निकल कर हम लोग क्लब पहुँचे। दलपति से मेरा परिचय कराया गया। मुकुटबिहारी ने सारी घटना सुनाई। तुरन्त ही क्लब की कमेटी का अधिवेशन हुआ। मुझे और मनोरमा को जो कुछ कहना था, कहा। निर्णय मेरे पक्ष में और मनोरमा के विरुद्ध हुआ। हम तीनों वहाँ से वापस आए। मनोरमा के तेवर चढ़े हुए थे। मैं यह देख कर मुस्कुराया। उसने रुष्ट होकर मेरी ओर से मुँह फेर लिया। इसके बाद वे दोनों अपने घर गए और मैं अपने स्थान पर वापस आया।

मुकुट और मनोरमा जिस समय कोठी पर पहुँचे तो उस समय पुलिस वहाँ पहुँच गई थी और कोठी को चारों ओर से घेर लिया था। ये दोनों तुरन्त गिरफ़्तार कर लिए गए। सवेरे थाने में पहुँच कर मैंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। दोनों ने आरम्भ से अपने को निर्दोष बताया था। कोई दूसरा प्रमाण या गवाही भी मौजूद न थी। इसलिए वे दोनों छोड़ दिए गए और मुझे एक सप्ताह के अन्दर फाँसी की आज्ञा मिल गई।

जिसने लगातार तिरसठ दिनों तक कड़ी से कड़ी तकलीफ़ें बरदाश्त की हों, वह फाँसी के क्षणिक कष्ट की क्या परवाह कर सकता है ? मैं बड़ी प्रसन्नता से आत्मिक जगत की ओर बढ़ा और इस ख़याल में मस्त था कि स्वर्ग के दूत मुझे हाथों-हाथ वहाँ पहुँचाएँगे। देवाङ्गनाएँ पारिजात पुष्पों की मालाएँ लिए मेरे स्वागत को खड़ी होंगी। परन्तु वहाँ पहुँचते ही मुझे बड़ा हल्ला सुनाई पड़ा। चारों ओर से आवाज़ें आने लगीं—"निकालो-निकालो, इसे तुरन्त निकाल बाहर करो। यह बड़ा हठी है, इसके लिए यहाँ स्थान नहीं है। इसे पुनः नरलोक में वापस लौटा दो।" मैं यह सुन कर हक्का-बक्का रह गया और सोचने लगा कि ऊँट की तरह परमात्मा की भी कोई कल सीधी नहीं। इन्हें प्रसन्न करना बड़ा कठिन है। स्वर्ग की लालसा बिलकुल व्यर्थ है। यह सोचता हुआ मैं उलटे पाँव वापस लौटा और इस तरह विचार करके सन्तोष करने लगा कि स्वर्ग कितना ही सुन्दर और मनोरम क्यों न हो, हमारी दुनिया से अधिक दिलचस्प कदापि नहीं हो सकता। फिर स्वर्ग के मुक्त जीवन से तो आवागमन ही अच्छा है, उससे तबीयत उकतायगी तो नहीं। ऐसे ही विचारों में डूबता-उतराता मैं संसार में वापस आया और आते ही अपनी विचित्र कहानी लिखना आरम्भ कर दिया।

[जनवरी, १९३० वाले अङ्क में प्रकाशित 'चाँद' के उर्दू-संस्करण से]

* * *
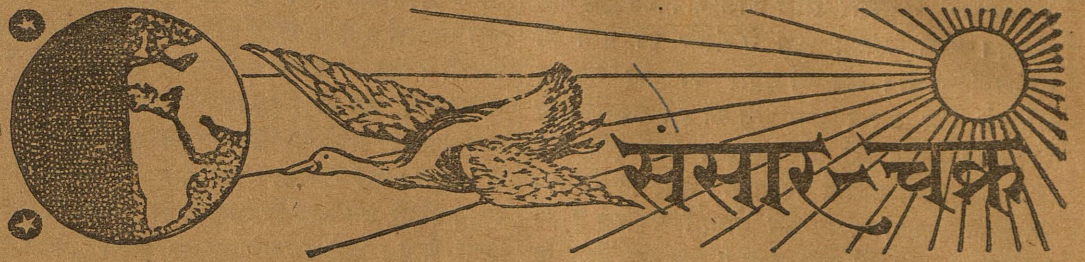
द्वितीय महासमर के काले बादल

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०, पी० एच-डी०]

यूरोप में सन् १९१४—१९१८ में जो महासमर हुआ था, उससे वहाँ के समस्त देशों की जनता को बड़ा कष्ट उठाना पड़ा था और इसलिए सभी श्रेणियों के लोग युद्ध के विरोधी बन गए थे। सर्वसाधारण की इस भावना को प्रकट करने के लिए कितने ही नवीन विचारकों और सुधारकों का आविर्भाव हुआ और युद्ध के विरोध में एक ज़ोरदार आन्दोलन खड़ा हो गया। इस विरोध को शान्त करने के लिए यूरोप की प्रधान शक्तियों ने, जो कि महासमर में विजयी हुई थीं, राष्ट्र-सङ्घ या 'लीग ऑफ़ नेशन्स' की स्थापना की और उसके द्वारा युद्धों का सदा के लिए अन्त कर देने का लोगों को विश्वास दिलाया।

पर आज बारह वर्ष का लम्बा युग व्यतीत हो जाने पर भी 'लीग ऑफ़ नेशन्स' की सारी कार्रवाई बातों का जमा-ख़र्च साबित हुई है, और उससे शान्ति की स्थापना होना तो दूर रहा, यूरोप में युद्ध की सम्भावना दिन पर दिन बढ़ती जाती है और विभिन्न देश गुप्त रीति से महासमर के लिए दल-बन्दी कर रहे हैं। 'लीग ऑफ़ नेशन्स' से अगर कोई उद्देश्य सिद्ध हुआ है तो यही कि उसके द्वारा जर्मनी और ऑस्ट्रिया को दबा कर रक्खा गया है और सोवियट रूस के मार्ग में भी रोड़ा अटकाया गया है। लोगों को दिखलाने के लिए लीग की तरफ़ से प्रायः प्रति वर्ष निःशस्त्रीकरण (Disarmament) कॉन्फ्रेन्सें हुआ करती हैं और उनमें संसार के कल्याण के लिए युद्ध-सामग्री को घटाने पर बड़ी गर्मागर्म बहस होती है, लम्बे-चौड़े प्रस्ताव पास होते हैं, मोटी-मोटी रिपोर्टें छापी जाती हैं, पर वास्तव में फल कुछ भी नहीं होता, और ये सब बातें नाटक का अभिनय ही सिद्ध होती हैं। अगर थोड़ी-बहुत युद्ध-सामग्री घटाई भी जाती है, तो इसमें प्रायः ऐसी ही चीज़ों का समावेश होता है, जिनका महत्व आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण घट गया है और जिनकी जगह ये युद्ध-प्रिय राष्ट्र अधिक भयङ्कर और कारगर चीज़ें पा चुके हैं। शान्ति के लिए इतनी धूमधाम होने पर भी समस्त देशों का सैनिक-ख़र्च बराबर बढ़ रहा है। स्थल, जल और आकाश संहारकारी यन्त्रों की ध्वनि से गूँज रहे हैं ! इनके लिए करोड़ों, अरबों रुपए ख़र्च करके नए-नए कारख़ाने खोले जा रहे हैं, और फल यह होता है कि सर्वसाधारण के लिए उपयोगी चीज़ों की पैदावार कम होती जाती है और जनता के स्वाभाविक, आर्थिक विकास में भयङ्कर बाधा पड़ रही है।

आजकल यूरोपीय देशों पर क़र्ज़ें का जो भयङ्कर बोझ लदा हुआ है, उसके कारण वे निःशस्त्रीकरण का प्रकट में विरोध नहीं कर सकते। पर उनके सैनिक-बजट को देख कर मालूम होता है कि उनको क़र्ज़ें की कोई चिन्ता नहीं। इङ्गलैण्ड ने सन् १९२७ में सेना के लिए जितना धन व्यय किया था, वह १९१३ की अपेक्षा दुगुना था। फ़्रान्स वाले कहते हैं कि हम सेना की संख्या घटा रहे हैं, पर इस 'घटी हुई सेना' के लिए ख़र्च पहले से बहुत अधिक किया जा रहा है। जर्मनी सन्धि की शर्तों के कारण एक लाख सेना से अधिक नहीं रख सकता और न वह किसी प्रकार की युद्ध-सामग्री बना सकता है; तो भी वह सेना पर, सन् १९१३ की अपेक्षा, जब कि जर्मन-सेना संसार में सब से अधिक शक्तिशाली मानी जाती थी, आधा ख़र्च कर रहा है। इङ्गलैण्ड, जर्मनी में सेना के समस्त सिपाही स्थायी तौर पर नौकर रक्खे जाते हैं, इसलिए उनका ख़र्च अधिक पड़ता है। पर फ़्रान्स, इटली और रूस आदि में अनिवार्य सैनिक-शिक्षा का क़ानून है और इसलिए वहाँ थोड़े ही ख़र्च में बड़ी सेना रक्खी जा सकती है। इटली पहले की अपेक्षा सेना पर दुगुना ख़र्च करता है और रूस में स्त्रियों तक की सेना तैयार की जा रही है ! और भी अनेकों छोटे-छोटे देश पागलों की तरह सैनिक तैयारी में जुटे हुए हैं !!

इस सम्बन्ध में हाल में एक अमेरिकन सम्वाददाता ने 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के एक अधिकारी से, जो संसार की राजनीति का ज्ञाता है, बातचीत की थी। उस बातचीत से निःशस्त्रीकरण के प्रश्न पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है और इसकी पोल बहुत कुछ खुल जाती है। उन दोनों में जो प्रश्नोत्तर हुए वे यहाँ दिए जाते हैं :—

प्रश्न—क्या यूरोपीय राष्ट्रों की युद्ध-सामग्री में कुछ भी कमी नहीं पड़ी है ?

उत्तर—यह बात अङ्कों के देखने से ही मालूम हो सकती है। पर ये अङ्क भी सच्चे नहीं हैं। प्रायः सभी देश चालबाज़ी से सैनिक व्यय को दूसरे मदों में रख कर, लोगों को शान्ति की झूठी आशा दिलाते हैं !

प्रश्न—क्या आपका मतलब यह है कि अनेक देशों की गवर्नमेण्टें 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के सामने जाली हिसाब-किताब पेश करती हैं ?

उत्तर—'लीग ऑफ़ नेशन्स' की तरफ़ से जो सैनिक व्यय सम्बन्धी वार्षिक विवरण प्रकाशित किया जाता है उससे कुछ बातें मालूम हो सकती हैं। पर उनसे पूरा भेद नहीं जाना जा सकता। उदाहरण के लिए फ़्रान्स अपनी स्थल और जल-सेना के व्यय को बजट के असंख्य विभागों में बाँट डालता है। अगर कोई निष्पक्ष आदमी उसकी जाँच करे और उसे वहाँ के अधिकारियों से जिरह कर सकने का भी अधिकार हो तो वह मालूम कर सकता है कि फ़्रान्स आजकल सेना में उससे भी अधिक रक़म ख़र्च कर रहा है, जितनी कि महासमर से पहले जर्मनी और फ़्रान्स दोनों मिल कर करते थे ! जर्मनी का ख़र्च भी कम नहीं है। जब वह देखता है कि उसके पड़ोसी राष्ट्र किसी प्रकार अपनी सेना कम नहीं करते, तो वह भी सन्धि-पत्र के शब्दों की रक्षा करता हुआ यथासम्भव प्रत्येक उपाय से अपनी सैनिक-शक्ति को बढ़ाने की चेष्टा करता है। सच तो यह है कि चाहे जैसे सत्य भाव से जाँच की जाय, इन बातों का ठीक पता नहीं लगाया जा सकता। फ़्रान्स के बजट में उसके उपनिवेशों का हिसाब शामिल करके गड़बड़ी पैदा कर दी जाती है। इङ्गलैण्ड के बजट की कोई थाह ही नहीं मिलती, क्योंकि उसके तमाम उपनिवेशों के पास स्वतन्त्र स्थल और जल-सेनाएँ

हैं। जर्मनी शारीरिक उन्नति का बहाना लेकर अपना काम चलाता है। और इटली, फ़्रान्स और रूस में तो बच्चे का जन्म होते ही उसे सिपाही बनाने का उद्योग आरम्भ कर दिया जाता है !

प्रश्न—क्या आपका कहना यह है कि फ़्रान्स सब से बढ़ कर नियम-विरुद्ध काम करता है ?

उत्तर—नहीं, हम सब पापी हैं। पर फ़्रान्स और उसके दोस्त बड़ी तेज़ी से सशस्त्र हो रहे हैं। जर्मनी और ऑस्ट्रिया भी फ़्रान्स का मुक़ाबला इसी तेज़ी से करते, पर उनके हाथ-पैर सन्धि की शर्तों के कारण बँधे हैं।

प्रश्न—क्या जर्मनी छिपे तौर पर सशस्त्र नहीं हो सकता ?

उत्तर—जर्मनी अगर किसी बड़े पैमाने पर सशस्त्र होने की कोशिश करे तो उसकी कार्य-प्रणाली चाहे जैसी गुप्त हो, वहाँ के गर्म दल वाले अवश्य उसका भण्डाफोड़ कर देंगे। कुछ छोटे-छोटे निरपेक्ष राज्य अपनी जल और स्थल-सेना को मिटा देना चाहते हैं, पर आजकल संसार में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली मसल जिस प्रकार चरितार्थ हो रही है, उसे देख वे भी अपने विचार को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सकते। पोलैण्ड, जैकोस्लोविका, जूगोस्लेविया सैनिक नीति की शतरञ्ज के प्यादे बने हुए हैं ! इटली की रण-गर्जना संसार में सुनाई दे रही है और रूस की लाल सेना टिड्डी दल के समान यूरोप पर निगाह लगाए हुए है !!

इसी प्रकार अन्य राजनीतिज्ञों की भी यही सम्मति है कि यूरोप बराबर भावी महासमर की तैयारी कर रहा है। यदि हम विभिन्न देशों की सेनाओं की संख्या और सेना सम्बन्धी नियमों की जाँच करें तो इस बात की सचाई पूरी तौर से साबित हो जाती है। इङ्गलैण्ड ने अपनी सेना में अवश्य कुछ कमी की है। इस समय इङ्गलैण्ड की सेना में सिर्फ़ १ लाख ४० हज़ार सिपाही हैं, जबकि सन् १८९५ में उनकी संख्या १ लाख ४८ हज़ार थी। पर इङ्गलैण्ड की साठ हज़ार गोरी सेना हिन्दुस्तान में भी रहती है और उपनिवेशों से भी काफ़ी संख्या में सिपाही मिल सकते हैं। उनके पास तीस लाख सेना के लायक़ युद्ध-सामग्री सदैव तैयार रहती है !

फ़्रान्स ने अपनी सेना का सङ्गठन इस प्रकार किया है कि वह चाहे जिस समय ४० लाख सेना युद्ध-क्षेत्र में लाकर खड़ी कर सकता है। वहाँ सार्वजनिक सैनिक सेवा का नियम प्रचलित है, और सैनिक शिक्षा दिए जाने का समय पहले की अपेक्षा घटा दिया गया है। इस प्रकार उसने अपने देश के समस्त हथियार चला सकने लायक़ पुरुषों को सिपाही बना लिया है। फ़्रान्स अपनी तोपों, मशीनगनों और टैङ्कों का आकार और शक्ति भी बढ़ा रहा है। इस समय उसके पास भारी मशीनगनें, सन् १९१४ की अपेक्षा बीस गुनी ज़्यादा हैं ! सन् १९१४ में स्थल सेना के पास भारी तोपें बिलकुल नहीं थीं, पर अब ऐसी कई सौ तोपें उसके पास हैं। टैङ्क और बख़्तरदार मोटरों की संख्या, जिनका सन् १९१४ से पहले नाम भी न था, ५८०० हैं !! फ़्रान्स में जो नई सेना सम्बन्धी क़ानून बना है, उसके अनुसार किसानों और व्यापारियों तक को युद्ध के समय सिपाही बनाया जा सकता है। वहाँ एक ऐसा भी क़ानून है, जिसके द्वारा अख़बारों से युद्ध के सम्बन्ध में इच्छानुसार प्रचार किया जा सकता है और समस्त राष्ट्र में युद्ध की आग फूँकी जा सकती है। इस समय फ़्रान्स के पास ९ लाख १४ हज़ार सेना सदैव तैयार रहती है और रिज़र्व-सेना की संख्या ४५ लाख के क़रीब है !!!

फ़्रान्स में २१ साल से ४९ साल के बीच की उम्र का हरएक आदमी, आवश्यकता पड़ने पर सेना में काम करने को क़ानून द्वारा बाध्य है। युद्ध के समय कारख़ानों के मज़दूरों और मैनेजरों—दोनों को सेना में शामिल होना पड़ेगा। इस प्रकार फ़्रान्स ने समस्त राष्ट्र को युद्ध के लिए सशस्त्र बना दिया है। वहाँ पर राज्य की सत्ता ही सर्वप्रधान मानी जाती है और उसकी रक्षा के लिए देश के प्रत्येक साधन को काम में लाया जा सकता है। युद्ध के अवसर पर राष्ट्र की रक्षा करने के लिए एक सुप्रीम कौन्सिल का निर्माण किया गया है, जिसमें जल और स्थल सेना तथा अन्य सरकारी विभागों के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। इसने अभी से इस बात का निश्चय कर लिया है कि युद्ध के अवसर पर किस सरकारी विभाग को क्या काम करना पड़ेगा। इस काम की तैयारी उसको शान्ति के समय में ही कर रखनी चाहिए। वहाँ पर हरएक लड़के-लड़की को छः वर्ष की आयु से ही शारीरिक शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। नवयुवकों को सेना में दाख़िल होने से पहले ही आरम्भिक क़वायद आदि सीख लेनी पड़ती है। इस प्रकार सरकार प्रत्येक नागरिक को बचपन से तब तक अपनी निगरानी में रखती है, जब तक कि वह युद्ध के अयोग्य नहीं हो जाता !!
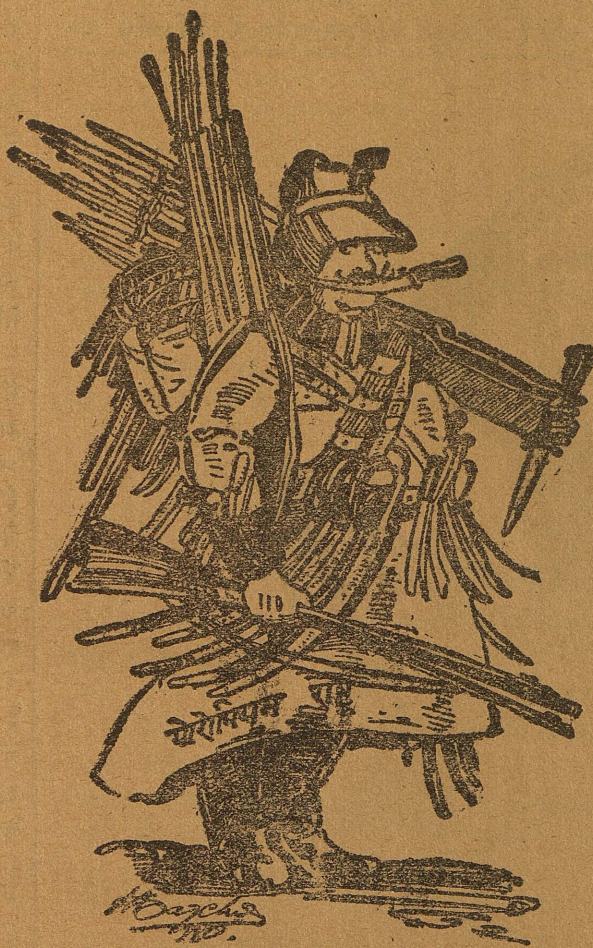
यूरोप के राष्ट्र निःशस्त्रीकरण (Disarmament) की नीति पर किस तरह अमल कर रहे हैं !

अब जर्मनी की दशा देखिए। वर्सैलीज़ की सन्धि के अनुसार जर्मनी को केवल १ लाख सेना, जिसमें ४ हज़ार अफ़सर भी शामिल हैं, रखने का अधिकार है। वह युद्ध के लायक़ हवाई जहाज़, टैङ्क और बड़ी तोपें नहीं बना सकता। उसे अपना प्रधान युद्ध-विभाग तोड़ देना पड़ा है और एक को छोड़ कर, समस्त क़िलों को भी गिरा देना पड़ा है। वह अपने राइनलैण्ड प्रदेश में, जो बेलजियम और फ़्रान्स की सीमा के पास है, किसी प्रकार की सेना नहीं रख सकता। नवयुवकों को सैनिक शिक्षा देना वहाँ क़ानूनन रोक दिया गया है। वहाँ न ज़हरीली गैस बनाई जा सकती है और न फ़ौजों को जल्दी से इकट्ठा करने के लिए किसी प्रकार की तैयारी की जा सकती है। वहाँ पर सार्वजनिक सैनिक सेवा का नियम उठा दिया गया है और सेना में भर्ती होने वाले हरएक सिपाही को कम से कम बारह साल, और हरएक अफ़सर को कम से कम पच्चीस साल नौकरी करनी पड़ती है ! इस शर्त के कारण जर्मनी अपनी जनता के बहुत बड़े भाग को सैनिक शिक्षा दे सकने में असमर्थ है। इस प्रकार हाथ-पैर बाँध दिए जाने के कारण जर्मनी वाले अपने सिपाहियों की योग्यता बढ़ाने का उद्योग कर रहे हैं। वहाँ के प्रत्येक सिपाही को सेना सम्बन्धी प्रत्येक कार्य की शिक्षा दी जाती है, और मित्र राष्ट्र के विशेषज्ञों की सम्मति है कि अपनी सीमा के भीतर जर्मन-सेना यूरोप में सब से अधिक सङ्गठित है।

सन्धि की शर्तों के अनुसार जर्मनी के पास कुछ भी रिज़र्व-सेना नहीं है। पर वहाँ पर कितनी ही ऐसी संस्थाएँ हैं, जिनके सदस्य निजी तौर पर सैनिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन संस्थाओं की कार्यवाही बहुत कुछ गुप्त रीति से होती है और इनके पास भारी तोपें, टैङ्क और लड़ाकू हवाई जहाज़ आदि युद्ध-सामग्री का सर्वथा अभाव है।

पर अब जर्मनी के युद्ध-विशारदों के मत में भी परिवर्तन हो गया है और वे गत महासमर की अशिक्षित या अल्प-शिक्षित करोड़ों सिपाहियों की सेना के स्थान में पूर्णरूप से शिक्षित और शीघ्रगामी छोटी सेना को अधिक पसन्द करने लगे हैं। उनका कहना है कि युद्ध के समय सब से अधिक महत्व की बात यही है कि सेना को जल्दी से जल्दी एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जा सके। इस कारण अब सन्धि की शर्तों से छुटकारा मिल जाने पर भी पुरानी सैनिक-पद्धति के अनुसार काम नहीं करेगा। एक बात जिससे जर्मनी वाले अप्रसन्न हैं, वह उनकी युद्ध-सामग्री का नाश है। सन्धि की शर्तों के कारण उनको अपनी हज़ारों तोपें, मोटरें, हवाई जहाज़ और लाखों बन्दूक़ें नष्ट कर देनी पड़ीं। युद्ध-सामग्री के लिए जो अरबों रुपए की लागत के बड़े-बड़े कारख़ाने खोले गए थे, उनको भी मटियामेट कर देना पड़ा। फ़्रान्स जर्मनी को यहाँ तक दबा कर रखना चाहता है कि उसने सन्धि-पत्र द्वारा वहाँ के स्कूलों में फ़ौजी क़वायद कराया जाना भी बन्द कर दिया है। तो भी आजकल जर्मनी में शारीरिक व्यायाम का प्रचार बढ़ रहा है और इसके द्वारा वहाँ के नवयुवकों को सब प्रकार से सुदृढ़ और हट्टा-कट्टा बनाया जाता है। सार यह कि जर्मनी ने, यद्यपि लाचार होकर ऊपर से फ़्रान्स और अन्य मित्र राष्ट्रों के सामने गर्दन झुका दी है, पर उसकी अन्तरात्मा अब भी उनकी शत्रु बनी हुई है और उससे जिस प्रकार सम्भव होता है वह अपनी शक्ति बढ़ाने की चेष्टा करता रहता है !

जर्मनी के साथी ऑस्ट्रिया की भी क़रीब-क़रीब ऐसी ही दशा है। उसको सिर्फ़ तीस हज़ार सेना रखने की आज्ञा है। पर वह सिर्फ़ बीस हज़ार सेना ही रखता है। वहाँ भी ऐसी संस्थाओं की कमी नहीं, जो निजी तौर पर जनता में सैनिक शिक्षा का प्रचार करती हैं। इन संस्थाओं का ख़र्च सार्वजनिक चन्दे से चलता है, यद्यपि कुछ लोगों को सन्देह है कि सरकार भी गुप्त रीति से उनकी पूरी सहायता करती है। हङ्गरी, जो कि महासमर से पहले ऑस्ट्रिया का एक भाग था और अब स्वतन्त्र राज्य बना दिया गया है, ३५ हज़ार सेना रख सकता है। वह भी सन्धि के अनुसार युद्ध की किसी प्रकार की तैयारी नहीं कर सकता, पर लोगों का ख़याल है कि इटली छिपे तौर पर उसको सब प्रकार की युद्ध-सामग्री पहुँचाता रहता है।

जर्मनी का तीसरा साथी बलगेरिया भी इसी प्रकार

सन्धि की शर्तों में बँधा हुआ है। उसके पास २३ हज़ार सेना है। टर्की ने महासमर में जर्मनी का साथ दिया था और उसके विरुद्ध भी मित्र राष्ट्रों ने इसी प्रकार की शर्तें तैयार की थीं। पर निर्भय कमालपाशा ने उनको ठुकरा दिया। वह सब प्रकार की सैनिक तैयारी बेरोक-टोक कर रहा है। वहाँ की सेना की संख्या डेढ़ लाख से ज़्यादा है और युद्ध के समय वह १५ लाख तक सेना इकट्ठी कर सकता है।

मित्र राष्ट्रों के साथी अन्य छोटे-छोटे देश ज़ोरों से सैनिक तैयारी करते रहते हैं। छोटे से बेलजियम के पास सत्तर हज़ार सेना है और आवश्यकता पड़ने पर वह बारह लाख सिपाही मैदान में ला सकता है! उसने जर्मनी की सीमा पर बड़ी मज़बूत क़िलेबन्दी की हुई है, जिसका ख़र्च उसे गुप्त रीति से फ़्रान्स से मिलता है! रूमानिया की सेना की संख्या ढाई लाख है और युद्ध के समय वह सत्रह लाख सेना तैयार कर सकता है। जेकोस्लोवेकिया के पास एक लाख से अधिक सेना है और वह नौ लाख तक सेना इकट्ठी कर सकता है! उसे लाख ३० हज़ार है। युद्ध के अवसर पर वह २० लाख सेना इकट्ठी कर सकता है। उसका राज्य जर्मनी और रूस के बीच में स्थित है और इनसे अपनी रक्षा का बहाना करके, वह इच्छानुसार सैनिक तैयारी करता रहता है! उसने ऑस्ट्रिया के ऊपर सिलेशिया और जर्मनी के डैनजिग नामक प्रदेश पर ज़बर्दस्ती अधिकार कर लिया है और इस कारण उसका इन दोनों देशों से सदा ही मनमुटाव बना रहता है।

फ़्रान्स की तरह पोलैण्ड भी अपने सैनिक व्यय को अन्य विभागों में शामिल करके छुपाया करता है। वहाँ का शासन—समस्त विभागों की बागडोर—सैनिक अधिकारियों के हाथ में है। वहाँ की स्टेट बैङ्क का प्रधान और गृहमन्त्री ऐसे व्यक्ति हैं जो सेना में भी काम करते हैं। वहाँ की राजधानी वारसा में आजकल प्रायः वही दृश्य देखने में आता है जो महासमर से पहले बर्लिन में देखा जाता था। सब जगह सैनिक पोशाकें देखने में आती हैं और प्रत्येक बात में सैनिकता के चिन्ह पाए जाते हैं। पोलैण्ड के गोली-बारूद के अधिकांश कार-

यूरोप की किश्ती बारूद के ऊपर रक्खी है; बस एक चिनगारी की कसर है !!

फ़्रान्स से इञ्जिनयर्स और टैङ्क मिलते हैं और उसकी सेना फ़्रान्सीसी सेना के ढङ्ग पर ही सङ्गठित की गई है!

पोलैण्ड का देश गत महासमर से पूर्व रूस के अधीन था। उसका कुछ अंश जर्मनी और ऑस्ट्रिया में भी शामिल था। सन्धि के अनुसार उसके तमाम बिखरे हुए हिस्सों को मिला कर एक नवीन राज्य की स्थापना की गई, जो कहने के लिए प्रजातन्त्र है, पर वास्तव में वहाँ सैनिक शासन प्रचलित है। इस समय वह फ़्रान्स का आन्तरिक मित्र बना हुआ है और सैनिक तैयारी में उसी का अनुकरण कर रहा है। वह अपनी आमदनी में से ३८ सैकड़ा इस कार्य में ख़र्च करता है, इसके सिवाय फ़्रान्स से जो मदद पा जाता है वह अलग !! उसकी सेना में १५१ सेनापति, ९०० कर्नल, १७ हज़ार अफ़सर और ३७ हज़ार छोटे अफ़सर हैं। सिपाहियों की संख्या ३ ख़ाने जर्मनी की सीमा पर बनाए गए हैं। देश के अन्य भागों में भी बाहर से सहायता लेकर बड़े-बड़े कारख़ाने खोले गए हैं। इसके सिवाय गवर्नमेण्ट को अधिकार है कि युद्ध आरम्भ होते ही लोगों के निजी कारख़ानों में भी युद्ध-सामग्री तैयार करा सके। इसके लिए विशेषज्ञ हमेशा कारख़ानों का निरीक्षण करते रहते हैं और वे जिस प्रकार की नई मशीनें कारख़ाने में लगाने को कहते हैं, उसी प्रकार की मशीनें लाचार होकर कारख़ाने वाले को लगानी पड़ती हैं। पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर बड़े मज़बूत क़िले बनाए गए हैं। स्कूलों में बालकों को छोटी उम्र से ही सैनिक क़वायद सिखलाई जाती है और इसके लिए सेना के आदमी ही शिक्षक नियुक्त किए जाते हैं! इतने से भी सन्तोष न करके, वहाँ एक नए 'आक्ज़िलैरी क़ानून' की रचना हो रही है, जिसके द्वारा वहाँ के सोलह से लेकर साठ वर्ष तक के प्रत्येक पुरुष से सेना-सम्बन्धी काम लिया जा सकेगा !!

इटली की फ़ैसिस्ट सरकार, जिसका प्रधान मुसोलिनी है, सैनिकता के लिए संसार में प्रसिद्ध है। मुसोलिनी इटली के प्राचीन वैभव का स्वप्न देखता रहता है जबकि वहाँ की रोमन जाति का डङ्का समस्त यूरोप में बजता था। यद्यपि वहाँ पर सेना पर व्यय अधिक नहीं किया जाता, पर फ़ैसिस्ट आन्दोलन के प्रभाव से वहाँ की जनता में सैनिक भाव कूट-कूट कर भरे जा रहे हैं। वहाँ की सेना की संख्या क़रीब चार लाख है और युद्ध के अवसर पर ४०-५० लाख सिपाही मैदान में आ सकते हैं! इटली में लड़ाकू हवाई जहाज़ों, मोटरों, टारपिडो आदि की भी इतनी तरक़्क़ी की गई है कि बड़े-बड़े देशों को भी उससे डरना पड़ता है। वहाँ की साठ हज़ार पुलिस और तेईस हज़ार चुङ्गी वाले भी पूरे फ़ौजी सिपाही हैं। गोली-बारूद का मुसोलिनी ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि युद्ध-काल में समस्त सेना को काफ़ी युद्ध-सामग्री मिल सकती है। शारीरिक शक्ति के खेलों का इटली में ज़ोरों से प्रचार हो रहा है और मुसोलिनी स्वयं उन सब में भाग लेता है। वहाँ पर ऐसी अनेकों संस्थाएँ क़ायम हैं जो आठ से चालीस वर्ष तक के पुरुषों को सैनिक शिक्षा देती हैं। इटली की सेना को देख कर फ़्रान्स सदा शङ्कित बना रहता है। मुसोलिनी ने अलबेनिया को सैनिक सामग्री की सहायता देकर अपना साथी बना लिया है और वह स्पेन, हङ्गरी, बलगेरिया, ग्रीस और टर्की से भी मित्रवत व्यवहार रखता है।

अब बच गया रूस, जिसे एक प्रकार से यूरोप वालों ने जाति बाहर कर रक्खा है, और जिसकी सेना तथा राजनीति संसार के लिए रहस्य की चीज़ है। रूस की शासन-पद्धति इस समय संसार के समस्त देशों से भिन्न है, और इस कारण सब लोग उसे इस प्रकार देखते हैं, जैसे किसी दूर देश से लाए हुए अजीब प्राणी को! साथ ही उनको भय भी लगा रहता है कि कहीं इस नवीन शासन-पद्धति की छूत हमारे यहाँ भी न लग जाय और हमारे सुख-शान्ति को भङ्ग न कर दे! इस कारण वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सदा उसका विरोध किया करते हैं, सदा इसके अहित की कामना करते रहते हैं, और यदि किसी प्रकार आज उसका नाम-निशान मिट जाय तो इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि इन समस्त देशों की सरकारें और प्रभावशाली लोग अत्यन्त प्रसन्न हों!

रूस भी अपनी स्थिति को भली भाँति समझता है और इन 'शुभचिन्तकों' के आन्तरिक भावों की तरफ़ से भी वह बेख़बर नहीं है। इसलिए वह सदा आत्म-रक्षा के लिए तैयार रहता है, और इसीलिए वहाँ की सैनिक योजना सब से बढ़ कर है। उसकी नियमित सेना और रिज़र्व सेना की संख्या बहुत अधिक है। पुरुष और स्त्री दोनों वहाँ सैनिक सेवा के लिए बाध्य हैं। शान्ति के समय में स्त्रियाँ अगर राज़ी हों तो पुरुषों के समान ही सेना में प्रवेश कर सकती हैं। नियमित सेना के सिपाहियों को २१ साल से ३० साल की उम्र तक नौकरी करनी पड़ती है। जो लोग सेना में नौकरी नहीं करते उनको छः महीने में सेना-सम्बन्धी साधारण अभ्यास करा दिया जाता है। यह छः महीने का अभ्यास पाँच वर्ष के भीतर कराया जाता है। हथियार रख सकने का अधिकार श्रमजीवियों को ही है। मालदार लोग हथियार नहीं रख सकते और युद्ध के समय उनको श्रमजीवियों के आगे रक्खे जाने का नियम है !!

रूस की स्थायी सेना की संख्या ५ लाख ६३ हज़ार है। पर जो लोग छः महीने की शिक्षा पाते रहते हैं उनको भी शामिल कर देने से रूस हर समय क़रीब १२ लाख सिपाही युद्ध-क्षेत्र में भेज सकता है। उनकी रिज़र्व सेना की संख्या किसी को निश्चित रूप से मालूम नहीं।

अनुमानतः यह १ करोड़ २० लाख समझी जाती है, पर इनमें से सैनिक शिक्षा प्राप्त लोगों की संख्या ७२ लाख से अधिक नहीं है। रूस की सेना में आज्ञा-पालन पर बड़ा ज़ोर दिया जाता है और इस सम्बन्ध के अपराधों पर बड़ा कड़ा दण्ड दिया जाता है। वहाँ पर स्थायी सेना के सिपाहियों को वेतन तो कम मिलता है, पर मकान, ईंधन, रसद आदि के सम्बन्ध में उनको ऐसी कितनी ही सुविधाएँ प्राप्त हैं, जिससे सेना की नौकरी लोग पसन्द करते हैं। जो व्यक्ति पूरे बीस वर्ष तक सेना में नौकरी कर लेता है, उसको पूरी तनख़्वाह की पेन्शन दी जाती है!

रूस में सैनिक शिक्षा के लिए सात यूनीवर्सिटियाँ और कितने ही स्कूल हैं। शारीरिक व्यायाम पर भी बहुत ज़ोर दिया जाता है। शारीरिक शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य है। १६ वर्ष से १६ वर्ष तक लड़कों को सरकारी अधिकारियों के निरीक्षण में विशेष रूप से शारीरिक शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। छोटे बच्चों को बम फेंकना और ज़हरीली गैस से बचने के लिए 'मॉस्क' लगाना सिखलाया जाता है। जनता में सैनिक शिक्षा का प्रचार करने के लिए कितनी ही सार्वजनिक संस्थाएँ भी खोली गई हैं। 'ओसोवियेचन' नाम की एक ही संस्था के सदस्यों की संख्या तीस लाख बतलाई जाती है! यह संस्था लोगों को हवाई और रासायनिक युद्ध-प्रणाली की शिक्षा देती है!!

कमनीय कामना

[कविवर पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध']

मिटे सकल सन्ताप विघ्न बाधा टल जावे।
घर-घर में आनन्द-वाद्य बजता दिखलावे।
जन-जन होवे सुखित लाभ कर वैभव सारा।
बहे सदा सब ओर शान्ति की सुन्दर धारा।
बिलसे पाकर भव-विभव—
सब बने सुर-सदन स्वर्ग सम।
हे त्रिभुवन भूप 'भविष्य' हो!
भारत-भू का भव्यतम!!

इस प्रकार समस्त यूरोप युद्ध की तैयारी में पागल हो रहा है। यद्यपि जर्मनी और उसके साथी ऑस्ट्रिया आदि सन्धि की शर्तों के कारण इस विषय में बहुत पिछड़े हुए हैं, पर यदि अन्य समस्त देश इसी प्रकार आगे बढ़ते रहे और उनकी भीषण तैयारियों का अन्त न हुआ, तो जर्मनी आदि भी सैनिक तैयारी के लिए उद्योग करने लगेंगे और लड़-झगड़ कर अपने लिए कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेंगे। इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा, यह किसी समझदार आदमी को बतलाने की ज़रूरत नहीं।

भीषण सैनिक व्यय के कारण इसी समय अनेक देशों का दिवाला निकला जा रहा है और यही दशा रही तो वह दिन दूर नहीं, जबकि समस्त यूरोप दिवालिया बन जायगा। उस समय उनको सिवाय इसके कुछ न सूझेगा कि दूसरे राष्ट्रों को लूट कर अपना पेट भरें। सैनिक तैयारी के बल पर सबके दिमाग़ आसमान पर चढ़ रहे हैं। बस जहाँ ज़रा सा बहाना मिला कि युद्ध की अग्नि जलने लगेगी और यूरोप में गत महासमर से भी कहीं भयङ्कर दृश्य उपस्थित हो जायगा। अमेरिका का इतिहास बहुत लम्बा है; सुविधानुसार किसी आगामी अङ्क में इस प्रदेश की पोल खोली जायगी—पाठकगण ज़रा धैर्य्य रक्खें!!

* * *

नवयुवकों के प्रति—

स्वामी विवेकानन्द जी को, यद्यपि सर्वसाधारण एक धर्म-प्रचारक और साधु ही मानते हैं, पर वास्तव में वे भारत के एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारक थे। आज भारत जिस पथ का अनुसरण कर रहा है और उसने अपना जो ध्येय बनाया है, उसका दिग्दर्शन स्वामी विवेकानन्द ने अब से तीस-चालीस वर्ष पूर्व विशद रूप से करा दिया था। पाठक देखेंगे कि नीचे दिए हुए लेख में उन्होंने भारतीय नवयुवकों के सामने जो आदर्श रक्खा है, ठीक उसी पर आज महात्मा गाँधी भारतीय आन्दोलन को अग्रसर कर रहे हैं:—

भाइयो, यह बड़े शर्म की बात है कि दूसरे देश हिन्दू-जाति पर दुर्गुणों के जो लाञ्छन लगाते हैं, वे हमारे ही कारण उत्पन्न हुए हैं। हमारे दुर्गुणों के कारण भारत की दूसरी जातियाँ भी हमारे साथ ही बदनाम हो गई हैं। परन्तु यह ईश्वर की ही कृपा है कि हमने अपने उन दोषों को पहचान लिया है। अब केवल हम ही उन दुर्गुणों पर विजय प्राप्त न करेंगे, परन्तु भारत की समस्त जातियों को अनन्त धर्म की उच्च भावनाओं का आदर्श प्राप्त करने में सहायता पहुँचाएँगे।

सब से पहले हमें ग़ुलामी का वह चिह्न निकाल कर फेंक देना चाहिए, जो प्रकृति सदैव ग़ुलाम-जाति के मस्तक पर अङ्कित कर देती है; वह है द्वेष। किसी से द्वेष न करो। सदैव भलाई करने वाले की सहायता करने के लिए तत्पर रहो। तीनों लोकों में प्रत्येक जीव के कल्याण की कामना करो।

हमें हर एक धर्म के उस अनन्त सत्य पर अवलम्बित रहना चाहिए; जिस पर हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों का एक सा विश्वास है, और वह है सत्य, मनुष्य की अजर, अमर और अनन्त आत्मा, जिसके गुण गाते-गाते वेद, थक गए। ऊँचे से ऊँचे देवता और स्त्री-पुरुष से लेकर तुम्हारे पैरों के नीचे सरकने वाले तुच्छ जीव तक में एक ही सी आत्मा विराजमान है। उनमें किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

आत्मा की अनन्त शक्ति का प्रभाव यदि पुद्गल पर पड़ता है तो हमारा भौतिक विकास होता है। यदि उस शक्ति से हम विचार और मनन का कार्य लेते हैं तो उससे हमारे ज्ञान का विकास होगा। यदि इस अनन्त शक्ति का प्रभाव स्वयं आत्मा पर पड़ता है तब उसकी परम ज्योति प्रकाशवान हो जाती है और अन्त में वह ईश्वर में लीन हो जाता है।

पहले स्वयं देवता बनो और तब दूसरों को बनाओ। "बनो और बनाओ" इस सिद्धान्त को कभी न भूलो; इसी को अपना आदर्श बना लो। यह कभी अपने मुँह से न कहो कि मनुष्य पापी है। उससे सदैव यही कहो कि वह ईश्वर का अवतार है; उसमें परमब्रह्म की दिव्य ज्योति चमकती है।

यदि तुम्हारा कमरा अँधेरे से आच्छादित है तो केवल प्रकाश की रट लगाने और उसके ध्यान मात्र से कमरे में प्रकाश न आ जायगा; वरन् उसके अन्दर प्रकाश लाने से ही वह प्रकाशवान होगा। यह याद रक्खो कि जो नाशवान है, जो केवल विवादात्मक है, जो क्षणभङ्गुर है, उसका अस्तित्व संसार में कभी नहीं रह सकता। अस्तित्व उसी का रहेगा जो अमर है, जो विवाद से परे है और जो विधायक है। यह कहो कि—'हमारा अस्तित्व ही ईश्वर का अस्तित्व है—हम ईश्वर हैं'—और दृढ़तापूर्वक अपना पैर आगे बढ़ाओ। अपने भौतिक शरीर का नहीं, अपनी आत्मा का विकास करो। जिन पदार्थों का नामकरण हो सकता है और जिनका रूप है वे सब उनके अधीन हैं, जिनके नाम और रूप नहीं होते। श्रुतियों में इसी सत्य का निरूपण किया गया है। अपनी आत्मा को उज्ज्वल और प्रकाशवान बनाओ, अँधेरे का स्वयं नाश हो जायगा। वेदान्त-रूपी शेर की गर्जना सुन कर लोमड़ियाँ अपने आप अपनी गुफ़ाओं में भाग जायँगी। अपनी समस्त शक्तियों को एकत्र कर जीवन के उच्च आदर्शों का प्रचार करो, उनके परिणामों की परवाह न करो; वे तो स्वयं अपना रङ्ग खिला देंगे। रसायन के तत्वों को मिला दो; उनसे चमकदार कण (Crystal) तो अपने आप बन जावेंगे। पहिले अपनी आत्मा को पवित्र और बलिष्ट बना लो। उसे विकास की चरम सीमा तक पहुँचा दो और फिर समस्त भारत में, और हो सके तो संसार भर में, उसका प्रकाश फैला दो। उसकी शक्ति से वायु-मण्डल आच्छादित कर दो; और उसके अतुल प्रभाव का जो परिणाम होगा उसे तुम्हें कहीं ढूँढने न जाना पड़ेगा।

अपनी अन्तरात्मा में ईश्वर का अनुभव करो और तुम देखोगे कि तुम्हारे चारों ओर इच्छित वायु-मण्डल तैयार हो गया है। वेदों में वर्णित इन्द्र और विरोचन का उदाहरण याद रक्खो। दोनों को यही शिक्षा दी गई थी कि वे ईश्वर के अवतार हैं। असुर विरोचन ने अपने जड़ शरीर को ईश्वरीय मान लिया। परन्तु इन्द्र उच्च देव-योनि का था, उसने उसका सच्चा अर्थ समझ लिया कि ईश्वरीय अंश का मतलब आत्मा से है। तुम इन्द्र की सन्तान हो; देवताओं के कुलों में तुम्हारा जन्म हुआ है। पुद्गल तुम्हारा ईश्वर कभी नहीं हो सकता; शरीर को तुम ईश्वर का अवतार नहीं मान सकते।

भारत का उद्धार शारीरिक शक्ति और पशुबल से नहीं हो सकता; उसकी उन्नति और चरम विकास के लिए तो आत्म-बल की आवश्यकता है; उसकी प्रतिष्ठा युद्ध में विजय-पताका फहराने और नरमेध रचने से नहीं बढ़ सकती; उसके लिए तो उसे संन्यासी के वेष में शान्ति और प्रेम की धारा प्रवाहित करनी पड़ेगी। धन और वैभव की शक्ति नहीं, बल्कि साधु के भिक्षा-पात्र की शक्ति ही उसका मान बढ़ाएगी। कभी अपने मुँह से ऐसा उच्चारण न निकालो कि तुम कमज़ोर हो; तुम्हारी आत्मा अनन्त शक्ति सम्पन्न है। उन मुट्ठी भर नवजवानों को तो याद करो, जिन्होंने स्वामी रामकृष्ण से ईश्वरीय बोध प्राप्त किया था और उसी वेदान्त का ढिंढोरा उन्होंने आसाम से लेकर सिन्ध और हिमालय से लेकर, केप कामोरिन तक पीटा। उन्होंने पैदल ही बीस हज़ार फ़ीट ऊँची हिमालय की गगन-चुम्बी और बर्फ़ से आच्छादित चोटियों को पार कर तिब्बत के रहस्यों का पता लगाया। भिक्षा

उनकी जीविका थी ; और वस्त्र थे पुराने चिथड़े; कई जगह वे गवर्नमेण्ट के शिकञ्जे में फँस गए; पुलिस ने गिरफ़्तार कर उन्हें जेल में ठूँस दिया ; परन्तु जब उनके भोलेपन और उनके आदर्श पर उन्हें विश्वास हो गया तब वे मुक्त कर दिए गए।

अभी वे संख्या में केवल बीस हैं। कल उन्हें तुम दो हज़ार बना दो। तुम्हारे देश को उनकी ज़रूरत है; संसार वेदान्त के पवित्र श्रोत के जल के लिए तृषित हो गया है, वह अनिमेष नेत्रों से उनकी ओर टकटकी लगाए है। अपनी आत्मा में ईश्वरीय अंश को बोध करो ; इस से तुम भूख और प्यास, शीत और उष्णता के कष्ट सहने के लिए तैयार हो जाओगे। दूसरे देशों के धन और वैभव की गोदी में पले हुए लोग सुन्दर महलों में रह कर और सुरा और सुन्दरी का उपभोग करते हुए धर्म के थोड़े से अध्ययन और साधारण नियमों के पालन से भले ही सन्तोष धारण कर लें ; परन्तु भारत उतने से सन्तोष नहीं कर सकता। धर्म और दर्शन उसके प्राण हैं; वेदान्त, उपनिषद और गीता उसके भोजन हैं और सत्य उसका पथ है। तुम्हें तो वैभव को ठुकरा देना होगा, अपने इस आदर्श के लिए, सुख और भोग, सुरा और सुन्दरी को तिलाञ्जलि देनी होगी। आदर्श बनो। बिना त्याग और बलिदान के कोई काल आदर्श नहीं हो सकता। संसार की उत्पत्ति के लिए 'पुरुष' ने स्वयं अपना बलिदान कर, तुम्हारे सामने उदाहरण रख दिया है। अपने सुख, आनन्द, यश, मान, मर्यादा यहाँ तक कि अपने जीवन तक का बलिदान कर दो और उन त्याग और आत्म-बलिदानों की कड़ियों को जोड़ कर एक ऐसा पुल तैयार कर दो जिस पर से संसार के अगणित मनुष्य जीवन-समुद्र के पार हो सकें। सत्य, न्याय और त्याग आदि अच्छे गुणों को एकत्रित कर लो। इस बात की परवाह न करो कि तुम किसके झण्डे की छाया में अग्रसर होगे। इसकी परवाह न करो कि तुम्हारा रङ्ग क्या है। चाहे वह हरा हो या नीला या लाल ; तुम तो उन सभों को मिला दो और उससे प्रेम का शुद्ध, गहरा और अत्यन्त चमकीला रङ्ग तैयार करो।

हमारा कार्य तो केवल कर्त्तव्य करना है, उसके परिणामों से हमारा कुछ सम्बन्ध नहीं। यदि समाज की कोई रूढ़ि, उसका कोई बन्धन तुम्हें ईश्वर बनने से रोकता है तो तुम्हारी आत्म-शक्ति के सामने वे सब चकनाचूर हो जायँगे और तुम्हारा कण्टकमय मार्ग निष्कण्टक कर देंगे। मैं अपने भविष्य की ओर टकटकी नहीं लगाता, और न मुझे उसकी फ़िक्र ही है। मैं तो सुदूर अन्तरिक्ष में अपनी कल्पना के स्वर्गीय राज्य में एक सुन्दर दृश्य देख रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ कि प्राचीन 'माता' एक बार फिर निद्रा से जागृत हो गई है और अपने पूर्ण वैभव और गौरव से रत्न-जटित सिंहासन पर बैठी है। यौवन का जो तेज और प्रतिभा आज उसके मस्तक पर चमक रही है वैसी कभी नहीं चमकी। प्रेम और शान्ति की श्रद्धाञ्जलि उसके चरणों में अर्पण कर, संसार को उसके इस नए रूप का सन्देश सुना दो।

* * *

हम क्या करें ?

भारतीय महिलाओं में अपनी दुरवस्था और पतन का ज्ञान धीरे-धीरे फैलता जाता है और वे क्रमशः सामाजिक क्रान्ति की ओर अग्रसर होती जाती हैं 'स्त्री-धर्म' (मद्रास) में प्रकाशित एक लेख से इस समस्या पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। उसकी लेखिका भारतीय महिलाओं की वर्तमान प्रगति से सन्तुष्ट नहीं हैं और उनकी सम्मति में असाधारण उपायों से काम लेकर समाज में हलचल मचा देनी चाहिए। आपने लिखा है—

भारतीय महिलाओं का कर्त्तव्य है कि वे केवल देश को स्वतन्त्र बनाने में ही सहायता न करें, बल्कि देश के साथ ही साथ अपना मार्ग भी स्वतन्त्र एवं सरल बनावें। अभी तक भारत में स्त्रियों की स्वतन्त्रता का आन्दोलन केवल थोड़े से पढ़े-लिखे और अमीर घरों के पुरुषों तक ही परिमित रहा है। परन्तु इस आन्दोलन को यदि सचमुच सफल बनाना हो तो भारत के घर-घर में इस स्त्री-सङ्गठन के आन्दोलन को पहुँचा देना चाहिए। इसी उपाय से यह आन्दोलन सफल हो सकता है। स्त्रियों के उद्धार का आन्दोलन किसी वर्ण विशेष या जाति के स्वार्थ के लिए नहीं है, बल्कि यह समस्त भारत के उद्धार का आन्दोलन होगा। बहिनो, यह वही भारतवर्ष है जिसकी सभ्यता की विजय-पताका किसी दिन समस्त संसार में फहराती थी और जिसके मस्तिष्क-बल ने संसार में समय-समय पर नवीन क्रान्ति को जन्म दिया था। वह सब तुम्हारी मातृ-शक्ति की मुस्तैद सत्ता ही तो थी। वही सत्ता पाने के लिए अब तुम्हें वास्तविक और सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र होना है। अभी तक तुम सिर्फ़ मनोरञ्जन की आलङ्कारिक वस्तु ही समझी जाती हो। तुम्हें सब प्रकार की उपलभ्य सुख-सामग्री प्रदान की जाती है; भाँति-भाँति के वस्त्र पहिना कर तुम्हें अप्सरा के रूप में सजाया जाता है; पर तुम्हें सच्ची स्वतन्त्रता के रूप का आभास तक भी मालूम होने नहीं दिया जाता! तुम पुरुषों की सहगामिनी समझी जाती हो। पर केवल भोग-विलास के क्षेत्र में; जहाँ सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों का प्रश्न उठता है वहाँ तुम मानवी अधिकारों से बिलकुल ही वञ्चित हो जाती हो। वहाँ तुम्हारी दशा एक जादूगर के थैले में (पिटारे में) रक्खी हुई उन चीज़ों के समान हो जाती है; जो लोगों का मनोरञ्जन करने के लिए वह उन वस्तुओं को मन्त्र द्वारा किसी दूसरे रूप में सजाता है और दर्शकों का मन बहला कर, अपने पैसे कमा कर फिर उन चीज़ों को टोकरे में रख चलता बनता है! यह है तुम्हारी व्यक्तित्व-हीनता का प्रत्यक्ष उदाहरण।

यह तो तुम्हारे धनी-घरानों की स्त्रियों की दशा है। परन्तु जिन स्त्रियों को ऐश्वर्य और आमोद के बीच उत्पन्न होने का सौभाग्य नहीं मिला है उनकी दशा अत्यन्त ही हीन है। भारत की ग़रीब स्त्रियों की दशा देखनी हो तो यहाँ के बड़े-बड़े कारख़ानों और पुतली-घरों में जाइए। जिन्हें देख कर रोमाञ्च हो आता है। बम्बई, कलकत्ता, अहमदाबाद आदि व्यावसायिक केन्द्रों में स्त्रियों की भीषण दुर्दशा देख यदि आपके पास हृदय होगा तो आप आँसू बहाए बिना नहीं रहेंगी। इन्हीं परिवर्तित परिस्थितियों को देख कर हम लोगों को पृथक रूप से अपना विचार आप करना पड़ता है।

आज, अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ भारतीय पुरुषों की तरह भारतीय स्त्रियों को भी हथियाने की चेष्टा में लगे हुए हैं। और तुम्हें यह कह कर फुसलाया जाता है कि अङ्गरेज़ी शिक्षा द्वारा तुम राष्ट्र की सम्पत्ति समझी जाओगी। उसी शिक्षा द्वारा जब तुम संसार-यात्रा करने निकलती हो यानी लण्डन, पेरिस, बर्लिन, वियेना, न्यूयॉर्क आदि घूम कर भारत लौटती हो तब तुम्हें तुम्हारी हीन दशा की सच्ची स्थिति का ज्ञान होता है। इसी से अब हमें चाहिए कि हम पुरुषों की आमोद की वस्तु न बन कर, उनकी सच्ची सहवासिनी बनें। अब हमें सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्र में पुरुषों के साथ होना चाहिए। तथा उन्हीं के समान सभी क्षेत्रों में उन्नति करने के लिए अग्रसर होना चाहिए। हमें अब पुरुषों के ऊपर निर्भर न होकर, अपना सङ्गठन आप करना चाहिए। चाहे वह हमारे कार्य में सहानुभूति दिखावें या नहीं। हमें स्त्रियों को इस प्रकार से उत्साहित करना चाहिए जिससे वे समाज के सुधार में शिक्षा-सञ्चालन और व्यवसाय-सङ्घों के कामों में, व राजनैतिक क्षेत्र में पूरी तरह से हाथ बटावें। स्त्रियों को अपनी ओर से इसमें किसी तरह की भी कमज़ोरी नहीं दिखानी चाहिए! उन्हें अब अच्छी तरह से यह प्रमाणित कर देना चाहिए कि वे अब इस क्रान्तिकारी युग में पुरुषों से किसी भी तरह कम नहीं हैं। वर्तमान क्रान्ति, स्त्रियो! अब तुम्हारे लिए यह नया सन्देशा लाई है। चूँकि तुम अभी तक दलित, हीन, अशिक्षित रही हो, इसीलिए यह भारतीय नवयुगी क्रान्ति तुम्हारे लिए सुधारों का, अधिकारों का, समानता का और पुरुषों के पहिले अपने को स्वतन्त्र बना लेने का स्वर्णमय युगोपहार लाई है; और कहती है—यह लो अपनी थाती सँभालो और अपने को साम्यवादी-समाज की रचना के कार्य में लगा दो! बहिनो! इसके लिए अब तुम्हें सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र बनना पड़ेगा। और तुम्हें स्वतन्त्र प्रेम का अधिकार प्राप्त करना पड़ेगा। अब तुम्हें अपनी वैवाहिक समस्या को दलालों, पण्डितों अथवा अपने माता-पिता के अन्ध-विश्वास पर निर्भर होकर हल नहीं करना होगा। अब तुम्हें अपने वैवाहिक जीवन के नियम किसी धर्म-शास्त्र के आधार पर अथवा किसी पैग़म्बर की व्यवस्था पर निर्भर नहीं रखने पड़ेंगे, अब तुम्हें सदियों से जकड़ी हुई समाज की कुरीतियों को एकदम तोड़ कर बाहर निकलना होगा। अब तुम्हें भारतीय मठों, मन्दिरों, मेलों और अन्य धार्मिक संस्थाओं को अत्याचार का सहायक समझना होगा। हम लोग स्वयं इन स्थानों की लीलाओं को देख कर इस वचन की सत्यता अनुभव कर सकती हैं कि ब्राह्मणों, साधु, सन्तों, गुरुओं ने हमें सच्चा धर्म सिखाने के बदले, हमारे हृदयों में धार्मिक विद्वेष भर कर हम लोगों को अपना ग़ुलाम बना रक्खा है।

यह बात अब हमें भली-भाँति समझ लेनी होगी कि अपनी दशा सुधारने के लिए जहाँ तक हो सके शीघ्रातिशीघ्र ऐसे लोगों से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया जावे, जो हमारे विकास में बाधक हो रहे हैं! आरम्भ में ऐसा भी होगा कि पुरानी कट्टरता के कारण लोग अपनी पत्नियों को, बहू-बेटियों को, बहिनों को इन सुधारों का समर्थक होने के कारण तरह-तरह के कष्ट देंगे और ऐसी शिक्षा व ऐसे वातावरणों से दूर रखने का उपाय करेंगे। परन्तु अब हमें सबके लिए तैयार होकर इसी क्रान्ति में अपनी क्रान्ति मचा देनी होगी। इस देश में पर्दे की प्रथा, बाल-विवाह, लड़कियों को बेचने की कुरीति आदि के विरुद्ध आवाज़ हमी लोगों को ही उठानी होगी। शारदा-क़ानून बना कर देश ने इच्छित दिशा में ही पैर बढ़ाया है। परन्तु हमें इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना होगा। बाल-विवाह की घातक प्रथा में जहाँ स्त्रियों की अशिक्षिता, उनका आर्थिक परावलम्बन, उनकी शारीरिक दुरवस्था आदि बहुत सी कठिनाइयाँ हैं उन्हें हमें ही पूरा करने में सब से पहिले प्रयत्नशील होना पड़ेगा। पुरुषों का प्रयत्न तो काफ़ी सा दिखता है। जहाँ की स्त्रियों में इस उच्च कोटि का आत्माभिमान, वीरत्व एवं सहनशक्ति होगी, वहाँ के पुरुषों में कदापि इतनी हिम्मत नहीं हो सकेगी कि वे उनके साथ किसी तरह का अन्याय कर सकें। देश की आन्तरिक शक्ति ही हमी लोगों पर निर्भर है। परन्तु हम स्त्रियाँ जब तक राष्ट्रीय सम्पत्ति नहीं बन सकतीं, तो किस बिरते पर समाज के आधे अङ्ग बनने का दावा कर सकती हैं? जब तक हम अपने को दृढ़ न बनावेंगी तब तक हम संसार में कुछ नहीं कर सकतीं। हम चाहे कितना ही असहयोग और सत्याग्रह करें और चर्ख़ा चलावें, परन्तु हम उस समय तक स्वराज्य कभी भी नहीं पा सकतीं, जब तक कि हमारी जाति सुसङ्गठित नहीं है। और जब तक हम ऐसा

सङ्घ तैयार न कर लेंगी, जो अपनी स्वतन्त्रता के लिए जीवन का बलिदान कर सके! तभी हम भारतीय स्वराज्य के योग्य होंगे। जब कि स्वतन्त्र देशों में अब तक भी स्त्री-सङ्गठन की पुकार ज़ोरों से उठ रही है; तब क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं कि भारत जैसे पराधीन देश में स्त्री-सङ्घ सुसङ्गठित करने के लिए पहिले ध्यान दें। दूसरे देश इतने थोड़े समय में क्यों इतनी जल्दी बढ़ सके, इसका कारण यही है कि उन देशों की भीतरी जड़ इतनी सुदृढ़, सुसङ्गठित हो गई कि कोई भी राष्ट्र उन्हें अपने अधीनता के पाश में नहीं बाँध सकता।

आज एक भारत ही ऐसा देश है जो तमाम संसार का आदर्श-पात्र था, अब घृणा का पात्र बन रहा है। कारण यही है कि भारत में भारतीय शक्ति की अवहेलना की गई और आज हम उसका अस्तित्व मिटा कर केवल उसकी अतीत स्मृतियों के बल के सहारे ही स्वराज्य पाने के आकांक्षी हैं। यदि हम संसार में अपने देश को आदरणीय बनाना चाहती हैं तो हमें स्वराज्य के पहले ही अपनी स्वतन्त्रता भारतीय समाज से वापस ले लेनी चाहिए। जब तक देश के, पुरुष-बच्चे, बूढ़े, जवान, धनी, ग़रीब, सभी सामाजिक रूप से स्वतन्त्र न हों, तब तक स्वराजी स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं। बीमार आदमी तभी पूर्णतः निरोग समझा जा सकता है, जब उसके अङ्ग-अङ्ग से बीमारी दूर हो जाय। जब तक स्त्रियाँ जड़मूर्ख, अशिक्षित, दबाई हुई और परतन्त्र रहेंगी तब तक भारत-वर्ष स्वाधीन नहीं हो सकता। इस विषय में हम विदेशों का अनुकरण नहीं कर सकतीं, तो भी वहाँ से समयोचित शिक्षा ज़रूर ग्रहण कर सकती हैं। हमको उनके देश, काल और स्थिति का विचार करके शिक्षा द्वारा सच्ची स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करना चाहिए। जो रोगी ख़ुद ही रोग को बढ़ा रहा हो उसके लिए डॉक्टर अथवा उसकी दवाई क्या काम देगी। यही हाल भारत का है!

* * *

जेलें कैसी होनी चाहिएँ?

यह देख कर कि हज़ारों वर्षों से अपराधियों को जेलों की भीषण से भीषण यन्त्रणाएँ देने से भी मनुष्य-समाज में होने वाले अपराधों और पापों की संख्या घटने के बजाय बढ़ती ही जाती है, अनेक विचारकों के हृदय में यह प्रश्न उत्पन्न होने लगा है कि इस प्रथा में क्या सुधार किया जाय या इसकी जगह किस नवीन उपाय का अवलम्बन किया जाय जिससे इस अवस्था में सुधार हो सके। इस सम्बन्ध में रामकृष्ण मिशन द्वारा सञ्चालित 'मॉरनिङ्ग स्टार' में एक विचारपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें आध्यात्मिक दृष्टि से इस विषय की मीमांसा की गई है :—

समय की वर्तमान उथल-पुथल में जब कि संसार के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक विचारों में परिवर्तन हो रहा है; यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि लोगों का ध्यान जेलों के सुधार की ओर आकर्षित होता है और वे या तो उसके प्राचीन और मध्यकालिक नियमों को तोड़ कर नए परिवर्तित नियमों का प्रवेश करना चाहते हैं, या जेल की पुरानी शासन-पद्धति को बिलकुल मिटा कर उसके स्थान में किसी नए विधान की योजना करना चाहते हैं। मनुष्य-जीवन के सामाजिक, धार्मिक और अन्य पहलुओं के जितने उच्च विचारक और दार्शनिक वर्तमान हैं, उनमें से सभी का यह मत है कि आजकल जेलों में जो विधान प्रचलित हैं उससे क़ैदियों के मस्तिष्क पर अत्यन्त घातक प्रभाव पड़ता है। यद्यपि इन विधानों में बहुत कुछ परिवर्तन हुए हैं, परन्तु अब भी भारत के प्रचलित विधान के कुछ दण्ड प्राचीन और मध्यकाल के बर्बर दण्डों से मिलते-जुलते हैं।

इस स्थान पर जेल-विधान का संक्षिप्त इतिहास देना असङ्गत न होगा। जेलें जिस रूप में आज वर्तमान हैं, उन्हें वह रूप न तो किसी जादूगर ने दिया है और न वे क्षण भर में उत्पन्न हुई थीं। उनकी उत्पत्ति तो हमारे पूर्वजों ने की थी। और तबसे आज तक सभ्यता की प्रगति के साथ उनमें अगणित परिवर्तन होते आए हैं। सभ्यता के प्रभात-काल में जब मनुष्य बिलकुल प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते थे तब उनमें न तो अपनी सभ्यता और योग्यता ही थी और न वे अपराधियों के लिए जेल बनवाने की आवश्यकता ही समझते थे। परन्तु जब राज्य स्थापित होने लगे तब शासन का कार्य सुचारु रूप से चलाने और प्रजा में शान्ति फैलाने के लिए अपराधियों और विद्रोहियों को दण्डित करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। परन्तु ऐसे अपराधियों को कभी-कभी केवल नज़रबन्द रखने का दण्ड दिया जाता था। उस समय जेलें न थीं, अपराधियों को काल-कोठरी में बन्द कर भूखा और प्यासा रख कर मारा जाता था! जैसे-जैसे सभ्यता, शिक्षा और उन्नति की प्रगति हुई, वैसे ही वैसे इस अत्याचारी जेल-शासन में भी सुधारों का प्रवेश हो चला। वैसे तो अपराधियों को भूखा-प्यासा रख कर मारने की प्रथा थी, पर बाद में सुधारों के अनुसार जब कोई बड़ा आदमी, राजकुमार, राजा, मन्त्री या सरदार आदि क़ैद होता था तो उसके साथ इतनी निर्दयता का व्यवहार न किया जाता था। उसके पद और सम्मान के अनुसार उसके साथ दयालुता का व्यवहार होता था। कुछ समय बाद लोगों में इतनी जाग्रति और ज्ञान का प्रसार हो गया कि उन्हें थोड़े से अपराध पर आजन्म देश निकाले या फाँसी की सज़ा देने में अत्याचार और बर्बरता की बू आने लगी। इसके बाद जब लोग और भी अधिक सभ्यता और ज्ञान के प्रकाश में आने लगे तब जेल का शासन सुचारु-रूप से चलने लगा और अपराधियों को उनके अपराध के अनुसार ही कम या अधिक सज़ा दी जाने लगी। वर्तमान जेल-शासन इन्हीं उपर्युक्त पद्धतियों का विकसित रूप है। उनके इस विधान में भी अब सभ्यता और ज्ञान की द्रुतगति और मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन की ज़रूरत मालूम होने लगी है!

यहाँ जेल-विधान के असली तत्व पर थोड़ा विचार करना आवश्यक मालूम होता है। भारतवर्ष में वेदान्त के अनुसार जितने आदमी पृथ्वी पर जन्म लेते हैं वे सभी 'पूर्ण' नहीं हो सकते। उनकी यह पूर्णता या अपूर्णता उनके पूर्व जन्म के कर्मों पर निर्भर रहती है। अपने पूर्व जन्म में उन्होंने जितने अधिक सुकृत किए होंगे वे उतने ही अधिक अच्छे अपने इस जन्म में हो सकेंगे। यदि उनके कर्म 'पूर्ण' पुरुष बनने के योग्य हो गए हैं तो वह इस जीवन से छुटकारा पाकर अवश्य ही ब्रह्म-ज्योति में मिल जायँगे। परन्तु यदि उन्होंने अपने पिछले जन्म में कुकर्म किए हैं तो उनसे इस जन्म में अच्छे कर्मों की अधिक आशा नहीं की जा सकती। उस जन्म के भले-बुरे कर्मों की मात्रा के अनुसार वह कुकर्मों में रत रहेंगे। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि अपने इस जन्म के अच्छे संस्कारों से पूर्व जन्म के कुसंस्कारों का वह नाश ही नहीं कर सकते। जिनकी उच्च भावनाएँ कुसंस्कारों के विचार से दब रही हों उन्हें यह सदैव याद रखना चाहिए कि 'मुक्त पुरुष' से लेकर दुराचारी से दुराचारी पुरुष तक में ईश्वर का अंश है। संसार में पतित जनों के ऐसे अगणित उदाहरण मौजूद हैं जो सेवा, त्याग और तपश्चर्या के द्वारा अपने जीवन को पवित्र और उच्च बना 'मुक्त' होकर परमपिता की अनन्त ज्योति में मिल जाते हैं। सुधारकों को मनुष्य के इस ईश्वरीय अंश का ध्यान रखते हुए जेलों के सुधार का आन्दोलन करना चाहिए।

आजकल जो मनुष्य अपनी दुर्बलताओं के कारण छोटा-मोटा अपराध कर बैठता है उसे सब जन-समाज, यहाँ तक कि नीच से नीच मनुष्य भी घृणा की दृष्टि से देखने लगता है। उस पर ताने कसता है, और कहता है कि वह 'ईश्वर के न्यायालय' (जेल) में जाकर सुधर जायगा। सभ्यता के इस विकास-काल में, जब कि मनुष्य जीवन के हर एक पहलू में निपुण माना जाने लगा है और प्रकृति के तत्वों तक पर विजय प्राप्त करने का दावा करता है, जेलों की वर्तमान पद्धति से अपराधियों के सुधार की आशा करना अत्यन्त सन्देहजनक मालूम पड़ता है। जेलों की इस प्राचीन और मध्य-कालिक नीति का तो नाम-निशान मिटा देना पड़ेगा। और उसके स्थान पर एक ऐसी नई प्रणाली की स्थापना वेदान्त के इस सिद्धान्त पर करनी पड़ेगी, कि मनुष्य ईश्वर का अंश है और उसके जीवन का अन्तिम उद्देश्य उस परम ज्योति में मिल जाना है।

हर एक पढ़े-लिखे मनुष्य के हृदय में स्वभावतः यह प्रश्न उठ सकता है कि वर्तमान वायुमण्डल में पुराने विधानों की जड़ काटना और नए विधानों में सुधार करना किस प्रकार सम्भव है? जिन नराधमों ने निरपराधियों और निर्बलों की हत्या की है, अबलाओं के सतीत्व का अपहरण किया है, चोरी और डाके डाल कर अच्छे-अच्छे सम्माननीय आदमियों को दूसरे दिन दाने को मुहताज कर दिया है और जिन्होंने इसी प्रकार अन्य बीभत्स और जघन्य पाप किए हैं उनमें किस प्रकार ईश्वर का अंश माना जा सकता है। क्या इन विचारों के आधार पर जेल-शासन का नियन्त्रण होने से समाज के पीड़ित जन-समूह में त्राहि-त्राहि की आवाज़ न गूँज उठेगी, और समाज में उथल-पुथल न मच जावेगी? इन प्रश्नों का उत्तर बिलकुल सरलता से दिया जा सकता है। कोई यह बतला दे कि क्या प्राचीन काल के मनुष्य के हृदयों में, जो अपना जीवन खेती-किसानी और शिकार के द्वारा यापन करते थे, कभी इस भावना का भी उदय हुआ होगा कि जेलों का विधान और नियन्त्रण ऐसे सङ्गठित रूप में हो सकेगा, जैसा कि आज बीसवीं शताब्दी में हो रहा है? यदि इस विचार में सत्यता है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि निकट भविष्य में जेलों के नियन्त्रण की नींव मनुष्य के इस विकसित और ईश्वरीय रूप पर स्थापित हो। सब से अधिक कठिनाई तो इस बात की है कि जेलों के वर्तमान शासन और नियन्त्रण के कारण हमारे चारों ओर एक ऐसा वायुमण्डल तैयार हो गया है कि उससे हमारे हृदय में ऐसी भावना का उदय ही नहीं होता कि जेल-विधान का उद्देश्य मनुष्य-जीवन को कुचलना और उसकी आत्मा को पतित करना नहीं, बल्कि अपराधी की आत्मा में जो ईश्वरीय अंश सुप्त और निस्तेज पड़ा है उसे जीवन के उच्च पथ पर अग्रसर कर जागृत कर देना है।

संसार में जब तक मनुष्य-समाज का अस्तित्व रहेगा तब तक यह स्वाभाविक है कि उसमें पाप-कर्म होते रहेंगे और अपराधियों का अस्तित्व बना रहेगा। दण्ड-विधान के आचार्य हम लोगों की अपेक्षा इस बात का जल्दी निर्णय कर सकते हैं कि अपराधी के पापों के अनुसार उनके सुधार की कौन सी योजना उपयुक्त हो सकती है। मोटी दृष्टि से अपराधी आयु और लिङ्ग, अपराध की गुरुता और जिसके ऊपर अत्याचार किया गया हो उसके सम्मान और पद के आधार पर विभाजित और दण्डित किए जा सकते हैं। जहाँ तक दण्ड का आयु से सम्बन्ध है नाबालिग़ लड़के-लड़कियों को किसी प्रकार का दण्ड न देना चाहिए, वरन उन्हें सुधार-संस्थाओं और स्कूलों में रख कर उच्च शिक्षा के द्वारा सुशिक्षित और सभ्य नागरिक बना देना चाहिए। समुचित शिक्षा द्वारा उनकी इच्छा-शक्ति, और आकांक्षाओं में परिवर्तन कर देना चाहिए,

जिससे उनके मस्तिष्क में दुर्भावनाओं का उदय ही न होने पावे और सुचारु शिक्षा द्वारा अपनी संस्कृति बदल कर वे अपने में ईश्वरीय अंश का अनुभव करने लगें। जेल के इस प्रकार के नियन्त्रण से ही उसका सच्चा उद्देश्य पूरा हो सकता है, अतीत-काल की क्रूर और निर्दयता-पूर्ण दण्ड-प्रथाओं का जो चिह्न—फाँसी अथवा ख़ून का बदला ख़ून—बच गया है, वह वर्तमान सभ्यता के माथे पर कलङ्क के सिवा कुछ नहीं है। मनुष्य के एक क्रूर कार्य के पाप के अपराध का बदला फाँसी से लेना उच्च ईश्वरीय सिद्धान्त का अपमान करना है! एक आदमी का अपराध, जो केवल धन के प्रलोभन में आकर किसी मनुष्य की हत्या कर डालता है, इतना भारी नहीं हो सकता कि समाज उसका बदला उस मनुष्य का ख़ून पीकर! ले। आज तक न मालूम कितने मनुष्यों से ख़ून का बदला उनके ख़ून से लिया गया होगा; परन्तु क्या इससे हत्याएँ कम हो गईं? फाँसी के भय से भी इन क्रूर पापों की संख्या वैसी ही बनी हुई है, जैसी पहले थी। इससे मालूम होता है कि विधान की जड़ में ही त्रुटि है। इस सम्बन्ध में यदि हम अपना मन्तव्य प्रगट करने लायक़ हैं तो हम यही सलाह देंगे कि जेल-विधान में ऐसी सुधारक संस्थाओं की योजना होनी चाहिए जिनकी उच्च शिक्षा के सहारे अपराधी सभ्य बन कर अपने मस्तिष्क से उन क्रूर भावनाओं को दूर कर सकें जिनका दण्ड उनका ही ख़ून है।

ऐसी योजना के सहारे उनका सुधार होने और सभ्य नागरिक बनने की बहुत सम्भावना है। इसी प्रकार की योजनाएँ चोरों, ठगों और जन-समाज में अशान्ति फैलाने वालों के लिए भी होना चाहिए। इस प्रकार दण्ड-विधान और जेलों का उद्देश्य प्रतिकारार्थ कष्ट पहुँचाना, परिताप, वेदना और अपने अमूल्य मनुष्य-जीवन से हाथ धो, अगणित जातियों में भ्रमण कर उनका प्रायश्चित्त करना न रह जायगा, बल्कि उनसे उनकी आशा-लताओं पर पड़े हुए तुषार का अन्त हो जायगा; हृदय एक बार फिर अपनी वर्षों की छाई हुई मुर्दनी दूर कर, खिल उठेगा; मस्तिष्क जीवन के रहस्यों की खोज में व्यस्त हो जायगा और अन्तरात्मा अपने सुप्त ईश्वरीय अंश को शुद्ध कर सुख में लीन हो सकेगा।

इस प्रकार के सुधारों में अपनी वैयक्तिक और सामूहिक दोनों शक्तियाँ लगा देने की आवश्यकता है। इन उच्च सिद्धान्तों पर जेल-विधान की स्थापना करना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए पहिले जनता को उन सिद्धान्तों को समझा कर उसे जेल-विधान में परिवर्तन करने के पक्ष में करना होगा। परन्तु यह एकाएक न हो जायगा; इसके लिए बहुत धीरे-धीरे सावधानी से एक-एक मोरचा विजय करते हुए आगे बढ़ना होगा। जन-समाज को मनुष्य में ईश्वरीय अंश के अस्तित्व का भाव अच्छी तरह समझाना होगा और जब वह इस भाव को पूर्ण रूप से हृदयङ्गम कर लेगा तो थोड़े ही प्रयास से हम उन्हें अपने पक्ष में खींच सकेंगे। इसके बाद इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए जिन विधानों और संस्थाओं की आवश्यकता होगी वे तो अपने आप उत्पन्न हो जायँगी। सारांश यह कि जेल-विधान के सुधारकों के हृदय में यह अब पूर्ण रूप से बैठ जाना चाहिए कि एक क्रूर, पापी, दुराचारी, दर्पोन्मत्त और अत्याचारी अपराधी में ईश्वरीय अंश उसी रूप में स्थित है, जिस प्रकार एक ऊँचे से ऊँचे महापुरुष में; और उसके उस अंश की जागृति के लिए विधानों में परिवर्तन करने और ऐसी संस्थाएँ स्थापित करने की आवश्यकता है जिसके सहारे इसकी उच्च भावनाएँ और शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ विकसित हो जायँ।

* * *
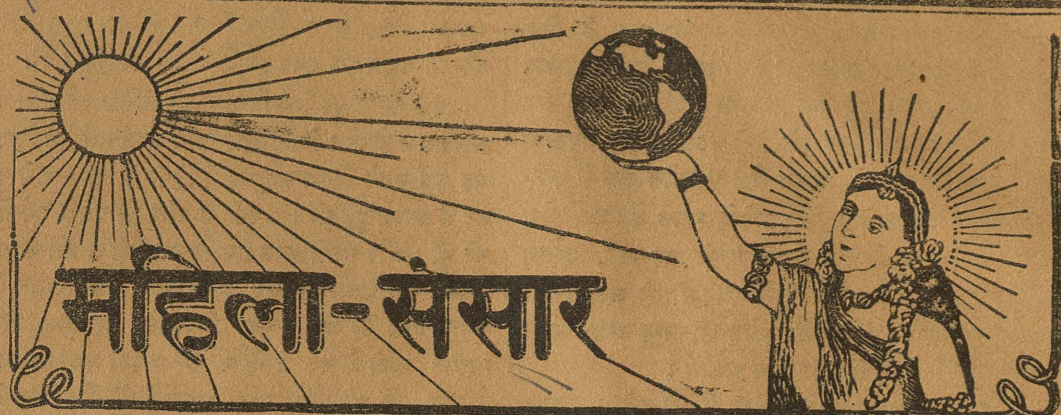
मुसलमानी अन्तःपुरों में विद्रोह की आग

हाल ही में डिमास्कस में 'पूर्वीय स्त्रियों की कॉङ्ग्रेस' का अधिवेशन हुआ था, जिसमें प्रायः सभी मुसलमान देशों की स्त्री-प्रतिनिधि उपस्थित थीं। इस कॉङ्ग्रेस के द्वारा वहाँ की स्त्रियों ने पहिले-पहिल मुसलमानी रीति-रिवाजों की ग़ुलामी से पिण्ड छुड़ाने का प्रयत्न किया है। पहिले कुछ स्त्रियाँ अवश्य ही स्त्रियों में सुधार का आन्दोलन करती रही हैं, परन्तु इस प्रकार के आन्दोलन का, जिसमें प्रायः सभी देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया हो, यह पहिला ही अवसर था। इस कॉङ्ग्रेस में बहुत से यूरोपीय देशों की मुसलमान और ईसाई स्त्रियाँ भी उपस्थित थीं। कॉङ्ग्रेस ने निम्न प्रस्ताव पास किए हैं:—

विवाह और विवाह-विच्छेद

बहुत वाद-विवाद के पश्चात इस सम्बन्ध में यह प्रस्ताव पास हुआ कि पर्दे का रिवाज तोड़ दिया जाय और स्त्रियों को मुँह खोल कर बाज़ार में निकलने की आज्ञा दी जाय। यह भी निश्चय किया गया कि विवाह के पहिले दम्पति को एक-दूसरे को देखने की आज्ञा दी जाय; शादी के पहिले दहेज ठहराने की प्रथा उठा दी जाय; आजकल विवाह-विच्छेद के जो अधिकार पुरुषों को हैं, उसी प्रकार स्त्रियों को भी तलाक़ के अधिकार प्राप्त हों। क़ानून से विवाह की आयु कम से कम १८ साल नियत कर देना चाहिए; लड़के और लड़कियों, दोनों की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए; १४ वर्ष से नीचे की उमर के लड़के-लड़कियों से कोई जीविका कमाने का कार्य नहीं लिया जाना चाहिए और अरबी सभ्यता और उद्योग-धन्धों का ख़ूब प्रचार होना चाहिए।

शिक्षा की आवश्यकता

सीरिया की ईसाई महिला कुमारी नूरी हमदा ने कॉङ्ग्रेस की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए स्त्रियों को पुरुषों की तरह शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएँ देने पर बहुत अधिक ज़ोर दियाँ। परन्तु उन्होंने स्त्रियों को वोट देने के अधिकार पर यह राय दी कि उसके उपयुक्त अभी समय नहीं आया। इस प्रकार के सुधारों के लिए स्त्री-पुरुष दोनों में ही शिक्षा के प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है।

स्त्रियों के उत्थान की सब से प्रथम सीढ़ी धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुषों के मस्तिष्क से यह भाव निकाल देना है कि स्त्रियाँ उनकी ग़ुलाम और पैर की जूती हैं। स्त्रियों में आत्म-सम्मान और सच्चरित्रता के पुनर्जीवन करने के लिए लड़कियों की शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन करने की बड़ी आवश्यकता है। पूर्वीय शहरों में आजकल स्त्रियों को जो शिक्षा दी जाती है वह उनके चरित्र का विकास करने के स्थान में उनका पतन करती है। अन्त में कुमारी नूरी हमदा ने धार्मिक भेद-भावों को दूर करने की प्रार्थना की।

बुर्क़ा और धर्म

मुसलमानी देशों में जितनी विकट समस्या पर्दे की है उतनी दूसरी नहीं। स्त्रियाँ यदि बुर्क़ा फाड़ कर फेंकती हैं तो वहाँ के पुरुष-समाज की इज़्ज़त और आत्म-सम्मान पर पानी फिरता है और यदि वे उस प्रथा की ग़ुलामी स्वीकार करती हैं तो उसकी वेदी पर स्वयं उनके जीवन का बलिदान होता है। इसलिए अधिवेशन भर में इसी विषय पर बहुत अधिक वाद-विवाद हुआ।

बहुत सी स्त्रियों ने अपनी वक्तृताओं में पर्दे का विरोध करते हुए कहा कि इसका प्रधान कारण सामाजिक है, धर्म का इससे कुछ सम्बन्ध नहीं। कुछ स्त्रियों ने धर्म-गुरुओं की साख देते हुए कहा कि धर्म, पर्दे को बहुत पवित्र मानता है और यदि यह प्रथा उठा दी जायगी तो मुसलमानी स्त्रियों पर धर्म-सङ्कट आ जायगा और वे विपत्ति के भँवर में फँस जायँगी।

इस वाद-विवाद में यह प्रश्न भी उपस्थित हुआ कि यदि पर्दे की प्रथा उठा दी जाय तो फिर स्त्रियों के सुधार का वेग कहाँ जाकर रुकेगा? यदि इस प्रथा के उपरान्त बिलकुल कपड़े न पहिनने का आन्दोलन प्रारम्भ हो जाय तो उसे कौन सी शक्ति रोकेगी? परन्तु दिन भर के इस प्रकार के वाद-विवाद के अनन्तर कॉङ्ग्रेस ने यही निश्चय किया कि पर्दे की प्रथा को समूल उड़ा देना चाहिए।

—लक्ष्मीदेवी, बी० ए०

* * *

एशियाई महिला-सङ्घ

संसार के हर एक महाद्वीप की कुछ न कुछ विशेषता रहती है। यूरोप, एशिया और अमेरिका के नाम लेते ही मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न विचारों का उदय होने लगता है। एशिया, जहाँ संसार की आधी से अधिक जन-संख्या निवास करती है, यूरोप और आशावादी तरुण-अमेरिका से बिलकुल भिन्न है। परन्तु उनमें से हर एक ने अपनी भेंट से, संसार की सभ्यता और कला-कौशल के कोष का सम्वर्धन किया है। हर एक को मानवीय एकता की वृद्धि के लिए अपने व्यक्तित्व की रक्षा करना आवश्यक है।

जब कभी संसार के प्राचीन अभ्युदय का प्रश्न आता है तभी एशिया की सभ्यता आगे आती है। एशिया की सभ्यता वर्तमान यूरोपीय सभ्यता से बिलकुल भिन्न थी, वह आजकल के भौतिकवाद की पूजा नहीं करती थी और न उस समय मिलें, फ़ैक्टरियाँ और सुख के वर्तमान साधन ही थे। उनके स्थान में सादा और सरल कृषि-जीवन था। बाक़ी समय यहाँ के लोग सांसारिक सुख उपभोग के स्थान में पारमार्थिक सुख उपार्जन करने में लगाते थे। एशिया की सभ्यता जीवन के उच्च सिद्धान्तों का पाठ पढ़ाती थी; और उस सभ्यता का सच्चा पोषक था यहाँ का स्त्री-मण्डल। कला के आदर्श, दर्शन और अध्यात्मवाद और प्राकृतिक जीवन की जो शिक्षा एशिया ने संसार को दी है वह किसी दूसरे महाद्वीप ने नहीं दी। और एशिया के स्त्री-मण्डल को इसका बहुत कुछ श्रेय है। दुर्भाग्यवश आज वह अपना अस्तित्व भुला बैठा है। वहाँ की स्त्रियाँ समय के फेर से पतन के गड्ढे में गिर गई हैं। एक चीनी स्त्री को, जितना अपनी बर्मा निवासिनी बहिन का ज्ञान नहीं, उससे अधिक उसे अमेरिका की स्त्री का है। एक भारतीय महिला को जितना अपनी अफ़ग़ानिस्तान

और मेसोपोटामियाँ की पड़ोसियों का ज्ञान नहीं, उतना उसे अपनी एक ब्रिटिश भगिनी का है।

स्त्रियों की इस अनभिज्ञता का प्रधान कारण है पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव। इस सभ्यता ने उनके चारों ओर एक ऐसा वायु-मण्डल तैयार कर दिया है जिसके कारण वे एशिया को बिलकुल भूल गई हैं। पश्चिमीय सभ्यता की इस धारा ने जापान को अपनी बाढ़ लहर से एक ही परिप्लावित कर दिया है, उसने अपने प्रबल प्रवाह में तुर्किस्तान को बहा दिया और अब बड़े वेग से उसने अपना रुख भारत की ओर किया है। इस बृहत नद में एशिया की सभ्यता और उसके अस्तित्व की थाह लेने और उसकी रक्षा करने का अब केवल यही मार्ग शेष रह गया है कि समस्त एशिया का मातृ-मण्डल एकत्र होकर उसकी चेष्टा करे।

सहायता मिली थी; और यूरोप और अमेरिका में तो स्त्रियों का सङ्गठन इतना दृढ़ हो गया है कि पुरुषों की तरह ही उन्होंने प्रायः समस्त कार्य-क्षेत्रों में अधिकार प्राप्त कर लिया है। परन्तु अभी तक एशिया में स्त्रियों का ऐसा कोई सङ्गठन नहीं है जिसके द्वारा वे अपने स्वत्व पहचान सकें।

भारतमाता एशिया के समस्त धर्मों और सभ्यताओं की सदैव धात्री रही है। पश्चिम से आकर भारत में इस्लाम ने विश्रान्ति ली है और उत्तर से आर्य-सभ्यता ने, और बौद्ध धर्म और सभ्यता की तो उसे जननी होने का सौभाग्य प्राप्त है। क्या उसे अपनी इन कन्याओं को अपने परिवार में बुलाने का अधिकार नहीं है जिससे वे सब सम्मिलित होकर अपने गुण-दोषों का पारायण

दाम्पत्य-प्रेम

देश-देश की स्त्रियाँ एकत्र होकर अपनी संस्कृति की समस्याओं को हल करें और उनके भेदों का पता लगा कर उन्हें निकाल दें और इस प्रकार समस्त एशिया की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में सन्धि स्थापित करने की चेष्टा करें। महाद्वीप भर के देशों की स्त्रियों के सम्मेलन से वे अपनी आदि शक्ति और सभ्यता के सच्चे आदर्श से परिचित हो जायँगी और इस प्रकार केवल एशिया में ही नहीं, संसार में शान्ति का राज्य स्थापित कर सकेंगी।

भारतीय महिलाओं में कुछ वर्षों से एक नई जागृति उत्पन्न हो गई है और उसके कारण वे अपनी समस्याओं पर विचार करने के लिए वर्ष में एक बार एकत्र भी होने लगी हैं। होनोलूलू में जो कॉन्फ्रेन्स हुई थी उससे पाश्चात्य और पूर्वीय स्त्रियों के विचार-विनिमय में बहुत अधिक

कर सकें, अपनी तथा संसार की सेवा के लिए अपने को सङ्गठित कर सकें; अपने अनुभवों, विचारों और ज्ञान-विनिमय से अपने को दृढ़ बना सकें और अज्ञान तथा बढ़ती हुई मृत्यु-संख्या को दूर करने और अपने राष्ट्रीय अधिकारों को प्राप्त करने के उपाय ढूँढ़ सकें। जापान, कोरिया, चीन, ब्रह्मा, भारत, जावा, अफ़ग़ानिस्तान, तिब्बत, अरब, फ़ारस और तुर्किस्तान आदि देशों की स्त्रियाँ यदि इस प्रकार सङ्गठित हो जावें तो एशिया की सभ्यता और संस्कृति की किरणें एक बार फिर संसार में अपना प्रकाश फैला दें।*

—आर० एस०

* * *

*'स्त्री-धर्म' के एक लेख के आधार पर

संसार की महिलाओं की प्रगति

दक्षिण अफ़्रिका

अन्त में बहुत वाद-विवाद के बाद दक्षिण अफ़्रिका की स्त्रियों को 'वोट' का अधिकार प्राप्त हो ही गया! उनके पक्ष में ३० सदस्य थे और विपक्ष में केवल ६। परन्तु यह अधिकार केवल गोरी स्त्रियों को प्राप्त हुआ है।

—६ सितम्बर को दक्षिण अफरीका की मिस पैगी डङ्कन नाम की युवती ने इङ्गलिश चैनल के २१ मील चौड़े पाट को १६॥ घण्टे में तैर कर पार किया। चार साल पहिले मिस इडर्ली ने चैनल को १४॥ घण्टे में पार किया था और अभी तक कोई उससे बाजी नहीं मार सका है।

इङ्गलैण्ड

—इङ्गलैण्ड के चारों ओर हवाई जहाज़ों की दौड़ के लिए सम्राट ने जो 'कप' पुरस्कार स्वरूप देना निर्धारित किया था वह कुमारी विनीफ़्रेड ब्राउन ने जीत लिया। इस दौड़ में ७२ पुरुष और ६ महिलाएँ सम्मिलित हुई थीं; उनमें से चार महिलाएँ प्रथम दस उड़ाकों में आईं!

बन्दूक़ से लक्ष्यवेध करने की प्रतिस्पर्धा में कुमारी फ़ॉस्टा मारजरी ने सम्राट का सर्व प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। इस प्रतिस्पर्धा में उन्होंने संसार के बड़े-बड़े ६६ लक्ष्यवेधकों को परास्त करके बड़ी ख्यातिलाभ की है!

ब्रिटिश पार्लामेण्ट की सदस्या कुमारी सूसान लॉरेन्स ब्रिटेन की ओर से सितम्बर में होने वाली 'लीग की असेम्बली' के लिए प्रतिनिधि नियुक्त हुई हैं। श्रीमती हैमिल्टन उनकी सहायक प्रतिनिधि नियुक्त हुई हैं।

ऑक्सफ़र्ड के कृषि-सम्मेलन में कुमारी एञ्जीला केव को सर्वोत्तम कविता की रचना पर सर्व-प्रथम पुरस्कार मिला है।

न्यूफ़ाउन्डलैण्ड

न्यूफ़ाउण्डलैण्ड की पार्लामेण्ट में वहीं के प्रधान मन्त्री की पत्नी लेडी स्क्वायर्स सदस्या चुनी गई हैं। एक महिला के चुनाव का वहाँ यह पहिला ही अवसर है। आशा है इनके चुनाव से ब्रिटेन के सब से पुराने उपनिवेश की स्त्रियों में जागृति फैलेगी।

पैलेस्टाइन

जेरूसलम की हिब्रू यूनीवर्सिटी के रजिस्ट्रार की धर्मपत्नी श्रीमती जिन्सबर्ग सात वर्षों तक पैलेस्टाइन की कचहरी में वकालत करने के अधिकार के लिए लगातार झगड़ती रही हैं। सन् १९२२ में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने पैलेस्टाइन की कचहरी में स्त्रियों को वकालत के अधिकार से वञ्चित कर दिया था। बाद में उन्होंने वहाँ के चीफ़ जस्टिस पर दबाव डाल कर वकालत की परीक्षा में प्रविष्ट होने की आज्ञा ले ली। उनके वकील ने टर्की और इजिप्ट के उदाहरण सम्मुख रख इस बात पर ज़ोर दिया कि जब वहाँ की मुसलमान स्त्रियों को वकालत करने का अधिकार है तो यहाँ स्त्रियों को उस अधिकार से क्यों वञ्चित रक्खा जाय। इसका परिणाम यह हुआ कि वहाँ की 'विशिष्ट अदालत' (Supreme Court) के दो ब्रिटिश और एक अरबी जज ने मिल कर यह फ़ैसला दिया कि ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद से वहाँ कोई ऐसा क़ानून नहीं बना जिसमें स्त्रियों को वकालत करने से रोका गया हो। इसके आधार पर इस वर्ष की १९ फ़रवरी से वहाँ की स्त्रियों को वकालत करने का अधिकार प्राप्त हो गया है!

* * *

राष्ट्र का नव-निर्माण

[आचार्य चतुरसेन जी शास्त्री]

मैं सुधारक नहीं, क्रान्तिवादी हूँ। मैं भारतीय राष्ट्र को सुधारना नहीं—उसे विध्वंस करके फिर से इसका-नव निर्माण किया चाहता हूँ। भारतीय राष्ट्र में जितना विरोध, जितने खण्ड, जितने दोष और पाप, मैल भरे हैं, उन्हें देखते कोई भी बुद्धिमान इसके सुधार की आशा नहीं कर सकता। स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय और अनेक आधुनिक महापुरुषों ने इस उन्नीसवीं शताब्दी में, और इससे प्रथम दूर तक के इतिहास के सिलसिले में, प्रबल सुधारवाद का आयोजन किया; परन्तु फल यही हुआ कि एक नया खण्ड, नया सम्प्रदाय बन गया और दिमाग़ी ग़ुलामी के वातावरण ने उसमें दुर्बलताएँ ला दीं! आर्य-समाज और ब्रह्म-समाज, दादू-पन्थ और नानक-पन्थ सभी की भावना राष्ट्र में सुधार और नवजीवन उत्पन्न करने की रही, परन्तु ये सभी एक-एक नए पन्थ बन गए और इनमें वे दोष आ ही गए, जो उन कुसंस्कारी पुरुषों के संसर्ग से आने अनिवार्य थे, जो क्षणिक उत्तेजना से इन दलों में मिले तो—पर वे अपने उस पुराने कुसंस्कारों के ग़ुलाम थे—वे अपनी पुरानी बिरादरियों में, पुराने समाज में वैसे ही मिले रहे। इन सम्प्रदायों में और एक सम्प्रदाय की वृद्धि करना हो तो कोई नये सुधार की योजना रक्खे! परन्तु वह योजना चाहे जितनी कट्टर होगी—समाज का कल्याण न कर सकेगी। यह तो हम प्रत्यक्ष देखते हैं, एक तरफ़ हिन्दू गो-मांस के नाम से काँपते और गोबध के विरुद्ध आपे से बाहर हो जाते हैं, उधर ईसाई मुसलमान खुल्लमखुल्ला गो-मांस खाते हैं। मुसलमान सुअर के नाम से हद दर्जे तक चिढ़ते हैं, पर सिक्ख खुल्लमखुल्ला सुअर खाते हैं! ईसाई सुअर और गो-मांस दोनों ही से परहेज़ नहीं करते। इस विषय की कट्टरता सैकड़ों वर्ष तक हिन्दू-मुसलमानों के निकट रहने पर भी नहीं मिटी! और हज़ारों वर्ष साथ रहने पर भी कभी न हिन्दू गो-मांस के प्रति उदासीन होंगे न मुसलमान ही! इसी प्रकार मूर्तिपूजा के विरोधी मुसलमानों ने जितना इसका विरोध किया, उतनी कट्टरता उत्पन्न हुई! हिन्दू सम्प्रदाय में भी दादू, नानक, आर्य आदि मत मूर्तिपूजा के विरोधी हैं, परन्तु उनका परस्पर कुछ भी प्रभाव नहीं। सुधारक, हठधर्मी पर प्रभाव नहीं जमा सकता! ईसाइयों और मुसलमानों ने हठधर्मियों पर बल प्रयोग किया। वह एक क्रान्ति थी—सुधार न था। फल यह हुआ कि ये दोनों सम्प्रदाय संसार में व्याप्त हो गए। बौद्ध धर्म का प्रचार, यद्यपि प्रकट में क्रान्तिकर नहीं समझा जाता, पर वास्तव में उसकी जड़ में मार-काट, अत्याचार और उत्क्रान्ति कम न थी!

यह तो हम अच्छी तरह समझ गए हैं कि वर्तमान हिन्दू-धर्म दिमाग़ी ग़ुलामी का एक जीर्ण-शीर्ण अस्तित्व है, उसमें अपनी रक्षा की रत्ती भर सामर्थ्य नहीं। आज राजनैतिक आन्दोलन ने जो शक्ति हिन्दू समाज को दी है—वह बात ही दूसरी है। उस शक्ति के केन्द्र हिन्दू-धर्म की दृष्टि से तो प्रायः क्रोध और तिरस्कार के ही पात्र हैं! हर हालत में यदि हिन्दू-समाज, जिसे धर्म या कर्तव्य के नाम से मानता है, यदि उसकी पूरी-पूरी परवा की जाय तो, जो राष्ट्रीय प्रगति देश में पैदा हुई है, वह वहीं रुक जाय! क्या वह हिन्दू-मुस्लिम और अल्प-संख्यक भारतीय जातियों को, उस निकट-सम्बन्ध को सहन कर सकता है, जो इस आन्दोलन ने पैदा कर दिया है और जो दिन-दिन निकट होता जा रहा है! क्या वह स्त्रियों के उस साहस की प्रशंसा कर सकता है, जो वे आश्चर्यजनक रीति से किसी अज्ञात, दुर्जेय शक्ति के बल पर दिखा रही हैं? वह तो समाज-कल्याण से दूर एक ऐसी भावना में ओत-प्रोत है, जिसकी सारी ही शक्ति मनुष्य की आत्मा की कल्याण-कामना में लग गई है, और वह भावना भी शुद्ध नहीं, प्राय भ्रान्त है! आत्मा की कल्याण-कामना निस्सन्देह एक बहुत सुन्दर वस्तु तो है—परन्तु राष्ट्र और देश के कल्याण का प्रश्न भी असाधारण है! दर्शन-शास्त्र कहते हैं—"यतो अभ्युदय निःश्रेयससिद्धिस्स धर्मः", जिससे अभ्युदय और निश्रेयस की सिद्धि हो वह धर्म है। यह अभ्युदय ही सांसारिक परम स्वार्थ और निश्रेयस पारलौकिक परम स्वार्थ है। सांसारिक परम स्वार्थ, राष्ट्रीय स्वाधीनता, अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का समाज में स्वाधीन अधिकार और पारलौकिक परम स्वार्थ आत्मा का सभी बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करना यह निश्रेयस है। यदि मैं यह कहूँ कि निश्रेयस से अभ्युदय श्रेष्ठ है तो अनुचित नहीं। यदि श्रीकृष्ण अभ्युदय को निश्रेयस की अपेक्षा श्रेष्ठ न मानते, तो सम्भव न था कि जगत के प्रपञ्च में फँस कर ऐसे लोमहर्षण रक्त पात के विधायक बनते, क्या कुरुक्षेत्र और प्रभास का हत्याकाण्ड साधारण था? और क्या अकेले श्रीकृष्ण ही उसके पूर्ण रूप से उत्तरदाता नहीं? क्यों उन्होंने चुपचाप मुक्ति की कामना से संसार को त्याग कर समाधि नहीं लगाई? आज भी क्यों महात्मा गान्धी जेल में क़ैदी के रूप में पड़े हैं? इन उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि प्रथम यह लोक और पीछे परलोक है। इसलिए हमें सर्व-प्रथम इस लोक के लिए सत्कर्म करने चाहिएँ और पीछे परलोक के लिए!

परन्तु, हमारी एक भयानक भूल तो यह है कि हम जब कभी छोटा-बड़ा सत्कर्म करते हैं, वह परलोक के लिए करते हैं और जो छोटा-बड़ा कुकर्म करते हैं, इस लोक के लिए करते हैं! हम दया, सेवा, त्याग, दान, तप, संयम, विवेक आदि का जब कभी उपयोग करेंगे उसका फल परलोक खाते डालेंगे, पर जब कभी स्वार्थ, छल, पाखण्ड, हत्या, चोरी तथा व्यभिचार आदि दुष्कर्म करेंगे, इस लोक के लिए करेंगे। यदि हम यथासम्भव सत्कर्म इस लोक के लिए करें, तो हमारी बहुत सी कठिनाइयाँ दूर हो जायँ। प्रातःकाल हम स्नान कर माला ले, गोमुखी में हाथ डाल, भगवत् स्मरण के लिए बैठते हैं—घण्टा दो घण्टा में जितने पवित्र वाक्य, श्लोक, दोहा, चौपाई, पद याद होते हैं सभी रट जाते हैं—यह हमारा सारा काम परलोक में फल देगा, पर वहाँ से उठ कर जब दफ़्तर या दूकान पर आते हैं और कारबार में झूठ, दग़ा, निर्दयता आदि का व्यवहार करते हैं तब किस पाप से जेब कितनी भारी होगी, यही देखते हैं—परलोक को बिलकुल ही भूल जाते हैं! यही तो दिमाग़ी ग़ुलामी है जो हमें सुधार करने में विफल करती है और जिसके संस्कार मात्र को बिना नष्ट किए हम नवराष्ट्र की रचना नहीं कर सकते और बिना नवराष्ट्र की रचना किए हम देश को न एक इञ्च बढ़ा सकते हैं और न उसका रत्ती भर भला कर सकते हैं!!

यह बात सच है कि मेरे आक्षेप की प्रधान दृष्टि केवल हिन्दू-समाज पर ही है, और वह इसलिए कि वही भारत की प्रधान जाति है। उसकी संख्या २२ करोड़ है और उसी के सङ्गठन में बहुत से खण्ड हैं! हिन्दू ही राष्ट्रीय नव-निर्माण की सब से बड़ी बाधा हैं। छुआछूत, खान-पान, ऊँच-नीच, जाति-मर्यादा आदि के भयानक बन्धनों ने हिन्दू जाति को इतना निस्तेज और निर्वीर्य कर रक्खा है कि—जब तक उसके ये बन्धन दृढ़तापूर्वक काट न दिए जायँ वह किसी काम की नहीं बन सकती! २२ करोड़ नर-नारियों के समुदाय को इस बन्धन में विवश छोड़ कर भारत आगे बढ़ेगा कैसे? यह तो बात विचार में ही नहीं आ सकती!!

हिन्दू नवयुवकों ने इस समय उत्क्रान्ति में जो पौरुष प्रयोग किया है वह असाधारण है, परन्तु नवीन नहीं। चीन, जापान, रूस, इटली आदि देशों के नवयुवकों ने भी यही किया है। यह सच है कि हिन्दू नवयुवक अभी पीछे हैं—परन्तु उनके बन्धन भी असाधारण हैं। सौभाग्य से उन्हें राजनीति का एक गुरु गान्धी जैसा महान् पुरुष मिल गया है। गान्धी का राजनैतिक गुरुपन कर्म-भित्ति पर है, यह बड़े आश्चर्य का विषय है। भारत के लिए यह स्वाभाविक भी है। और इसका फल हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि जो नवयुवक महात्मा गान्धी के राजनैतिक दीक्षा प्राप्त शिष्य बनते हैं, वे हिन्दू धर्म की रूढ़ि की ग़ुलामियों से भी साथ-साथ बहुत दूर तक स्वाधीन होते जाते हैं। छुआछूत और ऊँच-नीच के भेद उनसे दूर हो रहे हैं—वे सेवाधर्म और सात्विक जीवन के महत्व पर स्वतन्त्र विचार करने लगे हैं—उनके मन पवित्र, स्वच्छन्द और त्याग की भावना से ओत-प्रोत हो रहे हैं। महात्मा गान्धी को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने भारत के युवकों को अपनी आत्मिक और हार्दिक सद्भावनाओं को ऐहिलौकिक कार्यों में—और उन कार्यों में, जिनमें प्रायः उनका स्वार्थ नहीं होता, लगाने की रुचि है, उत्पन्न कर दी है!

यह बात तो मैं स्वीकार करूँगा, ऋषि दयानन्द की शिक्षा ने विशुद्ध धार्मिक ढङ्ग से स्वतन्त्र विचार करने की रुचि भारत के इन युवकों के पिताओं के मन में पैदा कर दी; और इसके साथ ही अङ्गरेज़ी शिक्षा-पद्धति ने उनके पुराने अन्ध-विश्वासों की जड़ें हिला डालीं। अब ये युवक किसी रूढ़ि के ग़ुलाम होंगे, यह मैं आशा नहीं कर सकता। इनमें वीरता, त्याग, स्वावलम्बन और विनम्रता उत्पन्न करने का श्रेय तो महात्मा गान्धी ही को है। यह महापुरुष शताब्दियों तक भारत में पूजा जायगा। हिन्दू-धर्म की सात्विक प्रवृत्तियों को इसने उदय किया है। दुर्दम्य क्षोभ के कारणों को प्रकट करके भी इस पुरुष ने युवकों को संयम से युद्ध करने की शिक्षा दी है!

नवराष्ट्र के निर्माण की यह मूल भित्ति है! परन्तु

आगामी अंक में

इसी लेखमाला का एक महत्वपूर्ण

अध्याय

ब्राह्मणत्व का नाश

पढ़िए

और सोचिए कि इस भयानक सर्प से बिना पिण्ड छुड़ाए हिन्दू-समाज एक साँस भी स्वाधीनता से नहीं ले सकता!!

मातृ-भूमि की तीन आदर्श सन्तान

अपनी क़ुर्बानी से है मशहूर नेहरू ख़ानदान,
शमआ-महफ़िल देख ले, यह घर का घर परवाना है।

—बिस्मिल

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

कुमारी कृष्णा नेहरू

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

क़ानून भंग करने वाली कलकत्ते की चार वीरांगनाएँ

(१)

देशबन्धु के श्राद्ध-दिवस के उपलक्ष में पुलिस की आज्ञा को अमान्य करके जलूस निकालने के कारण इन चारों पूजनीय महिलाओं को छः-छः मास की क़ैद की सज़ा दी गई है। नम्बर के हिसाब से इन देवियों की नामावली इस प्रकार है :—

(१) श्रीमती उर्मिला देवी (स्वर्गीय देशबन्धु महोदय की बहिन)
(२) कुमारी ज्योतिर्मयी गङ्गोली, एम० ए०
(३) श्रीमती विमल प्रतिभा देवी
(४) श्रीमती मोहिनी देवी

(२)

(३)

गुजरात की सत्याग्रही महिलाएँ, जिन्होंने विदेशी कपड़े और शराब की पिकेटिङ्ग करके बम्बई-गवर्नमेंट को दिवालिया बना दिया है।

(४)
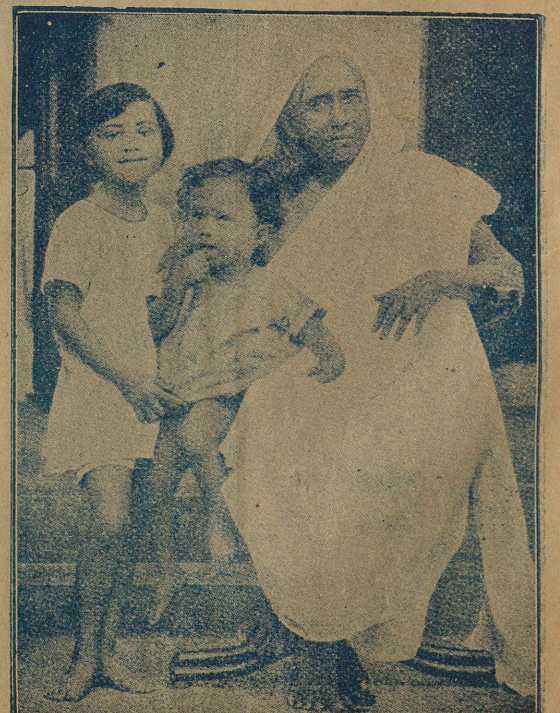
'भविष्य'

सत्याग्रह-संग्राम में जेल-यात्रा करने वाली कलकत्ते की सर्वप्रथम महिला—श्रीमती इन्दुकुमारी गोइनका।

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय—जिन्होंने बम्बई में सत्याग्रह की अग्नि प्रज्वलित कर दी। आपको ९½ मास की क़ैद की सज़ा दी गई है।
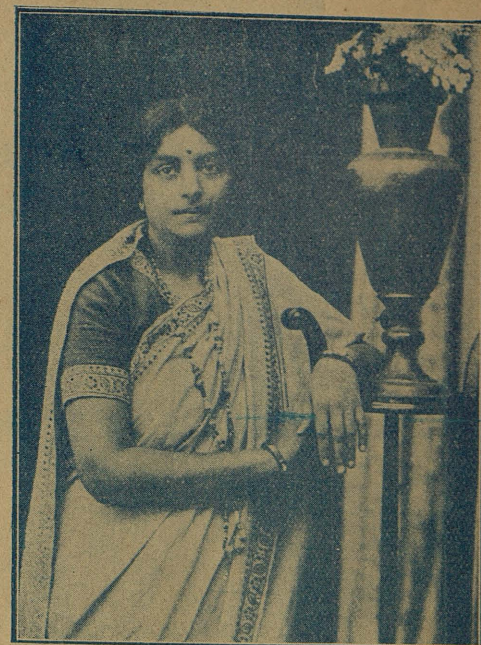
काशी की सत्याग्रही महिलाएँ नमक बना कर गवर्नमेण्ट के क़ानून पर हड़ताल फेर रही हैं।

सत्याग्रह-संग्राम में सब से पहले जेल जाने वाली महिला-समाज की मार्ग-प्रदर्शिका—श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति (आन्ध्र प्रान्त)।

श्रीमती हंसा मेहता—जो बम्बई के सत्याग्रह-संग्राम को आश्चर्यजनक योग्यता के साथ सञ्चालन कर रही थीं। आप कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग-कमेटी की भी मेम्बर थीं। आपको 'कॉङ्ग्रेस बुलैटिन' प्रकाशित करने के अभियोग में तीन महीने की सज़ा दी गई है।
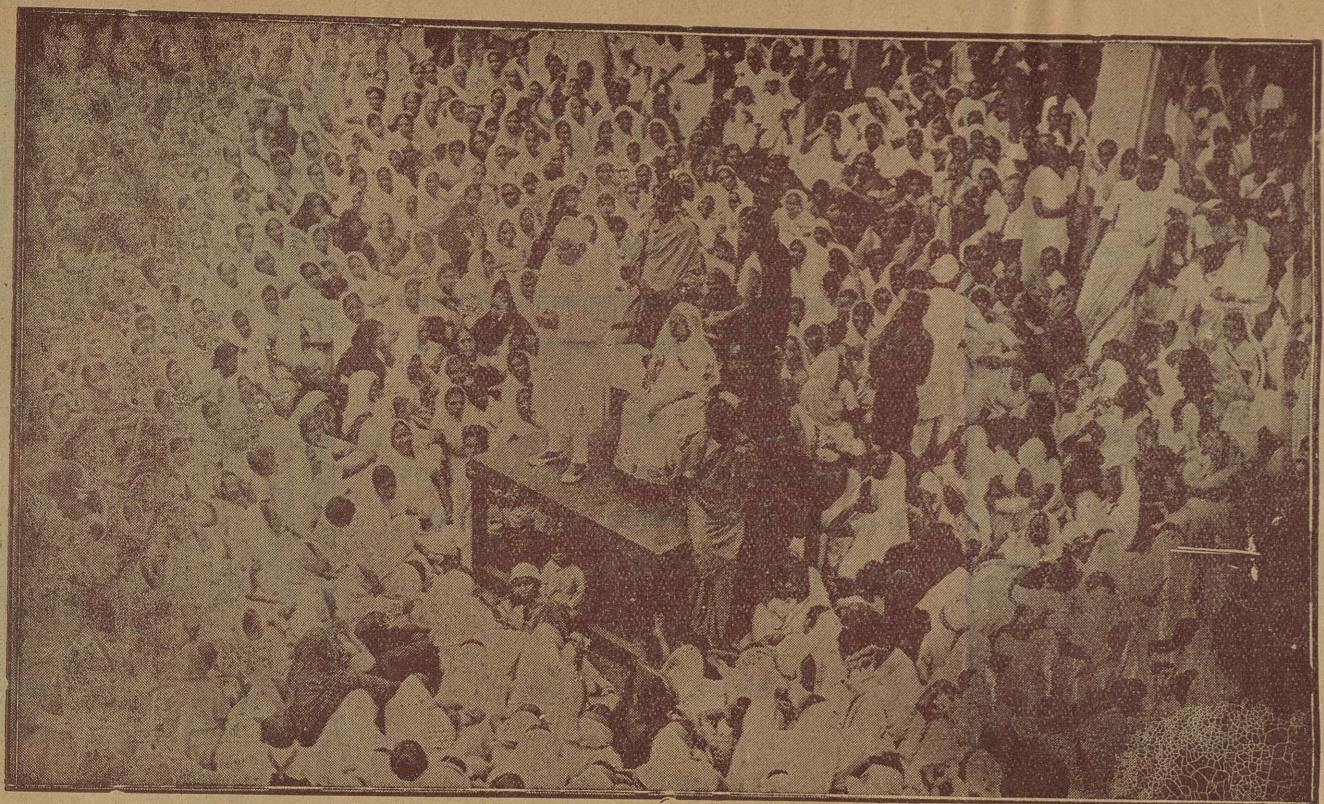
बम्बई की महिला-सभा में पं० मोतीलाल जी का सिंहनाद

(ऊपर) पं० मोतीलाल जी नेहरू बम्बई की एक विराट महिला-सभा में सत्याग्रह का उपदेश कर रहे हैं।

(बीच में) बम्बई की महिलाएं पुलिस वालों की लाठियों द्वारा देश-सेवा का पुरस्कार प्राप्त कर रही हैं।।

(नीचे) बम्बई की बानर सेना के बाल-सदस्य—जिन्होंने पिकेटिङ्ग में करामात का काम कर दिखाया है। इस सेना में केवल दस वर्ष से कम के बालक सम्मिलित हो सकते हैं—अधिक उम्र के नहीं!

बम्बई की बानर सेना

इसमें बाधाओं की कमी नहीं है। आवश्यकता तो यह है कि जब तक भारत स्वाधीन हो, तब तक भारतीय नव-राष्ट्र बन जाना चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो समझिए कि राजनैतिक क्रान्ति हिन्दू जाति के शिथिल सङ्गठन को इस प्रकार छिन्न-भिन्न कर डालेगी कि जिसका स्मरण करना ही भयानक है!

अलबत्त, मैं यह कह सकता हूँ कि यदि नवराष्ट्र के निर्माण में हिन्दू मुस्तैदी और साहस से जुट जायँ और राजनैतिक भाग्य-निर्णय से प्रथम ही नया राष्ट्र बना लें—तो फिर कल्याण ही कल्याण है! फिर तो न रूस, न जर्मन, न जापान और न इटली ही की क्रान्ति भारतीय क्रान्ति के समान उज्ज्वल हो सकती है!!

यदि हिन्दू समाज अपनी दिमाग़ी ग़ुलामी को तोड़ दे; वह स्वच्छन्द हो जाय तो—इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमान और अल्प-संख्यक जातियाँ बड़ी आसानी से उसके अन्दर लीन हो जावेंगी!!

मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि जब तक यह मुख्य कठिनाई दूर नहीं हो जाती, भारत की राजनैतिक स्थिति दृढ़ नहीं हो सकती। जब तक ब्रिटेन का राज्य है, या अन्य किसी ग़ैर जाति का राज्य हो, तब तक तो किसी तरह मामला इसी भाँति चल सकता है; जैसा अब तक चलता रहा—परन्तु जब प्रजासत्ता का प्रश्न आएगा, जब देश का स्वामी देश का जनबल होगा, तब यदि जनबल में राष्ट्रीयता न पैदा हुई तो प्रजासत्ता देश में स्थापित ही नहीं हो सकती। इसके विरुद्ध उस समय देश में ऐसी अशान्ति उत्पन्न हो सकती है जिसे शान्त करने का कोई उपाय ही नहीं है!!

मुसलमान, ईसाई और अन्य अल्प-संख्यक ग़ैर-हिन्दू जातियाँ खान-पान और छुआछूत में इसी समय हिन्दुओं से सहयोग करने को उद्यत हैं। प्रायः सभी हिन्दुओं के हाथ का कच्चा-पक्का खाना खा सकते हैं। इसी प्रकार यदि हिन्दू अपनी कन्याएँ इन जातियों में ब्याहने लगें, तो इन जातियों को कुछ उज्र होगा, ऐसी सम्भावना नहीं। हिन्दुओं में आर्यसमाजी और ब्रह्मसमाजी तथा कुछ स्वतन्त्र विचार के पुरुष आसानी से इन जातियों से रोटी-बेटी के सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। इसी तरह अछूत और निम्न श्रेणी की जातियाँ तथा ख़ाना-बदोश जातियाँ सभ्य और सुशिक्षित बनाई जाकर समाज का उपयोगी अङ्ग बन सकती हैं। इस नवीन सङ्गठन में यदि कोई अंश बाधक है तो वे कट्टर हिन्दू हैं, जो पुराने अन्ध-विश्वासों के ग़ुलाम हैं—और जो देश की ऊपर तेज़ी से चढ़ी चली आती हुई उस विपत्ति को देखने की योग्यता नहीं रखते—जिसके एक ही झटके में हिन्दुत्व का जीर्ण ढाँचा चूर-चूर हो जायगा!!!

एक समय था, जब भारतवर्ष एक सुदृढ़ क़िले के समान था। अपनी आवश्यकता की सभी सामग्री वह उपजा लेता था। विदेशियों से यदि इसका कोई सम्बन्ध था भी तो सिर्फ़ इतना ही, कि उसके काम में आने से जो कुछ बच जाय उसे वह विदेशियों को बेंच दे। तब विदेशी व्यापारी उसके द्वार के बाहर निरुपाय खड़े रहते थे, और जो कुछ भारत उन्हें देता, उसे लेकर बदले में स्वर्ण और रत्न देकर चले जाते थे! उस समय उसकी एक देशीयता बनी हुई थी। उसका अन्य जातियों से संसर्ग न करना भी निभ गया था; यद्यपि तब भी भारतीय बड़ी-बड़ी यात्राएँ करते थे—परन्तु वह समय ही और था। राजसत्ता का प्रायः सर्वत्र आधिपत्य था। भारत में भी राजसत्ता थी—इसके सिवा भारत की एक जातीयता भी थी।

पर वह क़िला तो अब टूट गया। अब उसकी वह शक्ति, प्रतिष्ठा और परिस्थिति न रही। अब उसे स्वाधीन होते ही शताब्दियों तक व्यापार वाणिज्य और शिल्प-शिक्षा आदि के लिए संसार भर में यात्रा करनी पड़ेगी। संसार की जातियों से भिन्नता और सद्भाव बनाना पड़ेगा। ऐसी दशा में यदि हिन्दू अपना चौका, धोती, दाल, चावल और जनेऊ लिए फिरें तो समझिए कि उनकी दुर्दशा और असुविधाओं का अन्त न रहेगा! देखिए तुर्क और ईरान इतना कट्टर एशियाई जीवन रहते भी, कितने शीघ्र यूरोप में मिल गया! रूस किस तेज़ी से एशिया में घुस रहा है; और जापान कैसे यूरोप के कान काटने लगा! क्या हिन्दू-जाति भी इस सरलता से पड़ोसी जातियों के बन्धु बन सकती है? उसे तो एशिया के सङ्गठन में सम्मिलित होना अनिवार्य है। यदि उसने अपनी मूर्खता और चौका-चूल्हे में फँस कर एशिया के सङ्गठन का तिरस्कार किया तो यह मानी हुई बात है कि एशिया का सर्वप्रथम काम यह होगा कि वह अपने पहले धक्के में इस निकम्मी अछूत हिन्दू-जाति को विध्वंस कर दे और तब उसे पड़ोस के मुस्लिम राष्ट्र बाँट लें!

यूरोप और एशिया का जो सङ्घर्ष है, वह भारत पर ब्रिटेन का आधिपत्य तो रहने ही न देगा, परन्तु ब्रिटेन के पञ्जे से छूट कर भी भारत हिन्दू जाति की सम्पत्ति नहीं बन सकेगा। जब तक कि वह अपना नया राष्ट्र न निर्माण कर ले और जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और अन्य अल्प-संख्यक जातियाँ मिल कर एक महाजाति के रूप में न खड़ी हो जायँ!!

भारतीय प्रजातन्त्र के ये हिस्से नहीं बँट सकते, जैसे कि अब अङ्गरेज़ी राज्य में हैं। कितनी नौकरियाँ हिन्दुओं को और कितनी मुसलमानों को मिलें—यह तुच्छ प्रश्न तब न रहेगा, तब तो यही प्रश्न होगा कि भारत की निवासिनी महाजाति का नाम क्या है? भारत की अधिपति जाति कौन सी है?

मैं प्रथम कह चुका हूँ कि नवराष्ट्र निर्माण में सबों से बड़ी बाधक हिन्दू-जाति है, अन्य जातियाँ बहुत कुछ बढ़ी हुई हैं—यदि हिन्दू-जाति उनके बराबर पहुँच जायगी तो अन्य जातियाँ ख़ुशी से मिल जावेंगी!!

हिन्दू-सङ्गठन और शुद्धि-आन्दोलन, इन दोनों ही नीतियों से मेरा मतभेद है—मतभेद का मूल कारण यह है कि इन नीतियों से अन्य जातियों को भी हिन्दुओं के उन पुरानी रूढ़ियों के बन्धनों में बाँधा जा रहा है! प्रश्न तो यह है कि इस समय हिन्दू-संस्कृति संसार की सभ्य जातियों से सामाजिक रीति से मिलने के योग्य है या नहीं? यदि है तो अन्य जातियों को शुद्ध करना ठीक है। यदि नहीं तो जहाँ २२ करोड़ चौका-चूल्हा, जाति, छूत-अछूत, जनेऊ-धोती की चिन्ता में हैं, वहाँ ३०-३२ करोड़ हो जावेंगे? पर मुख्य और विकट प्रश्न तो बना ही रहेगा। मुझे यह कहने में ज़रा भी सङ्कोच नहीं कि भारत की अन्य जातियाँ राष्ट्रीयता की दृष्टि से कहीं अधिक सुगठित हैं; फिर उन्हें इस रूढ़ि-बन्धनों से विवश, जर्जर जाति में फाँसना देश के लिए कहाँ तक अच्छा है?

अलबत्त, हिन्दू नाम से मैं प्रेम करता हूँ! भले ही उसका चाहे भी जो भद्दा अर्थ हो—मैं यह स्वाभाविक रीति से चाहूँगा कि हिन्दुस्तान का प्रत्येक प्राणी अपने को हिन्दू कहे। मैं हिन्दू राष्ट्र के ही निर्माण का स्वप्न देखता हूँ और हिन्दू राष्ट्र के निर्माण की ही योजना सामने रखता हूँ और उसमें सभी अल्प-संख्यक भारतीय जातियों को लीन करने की कामना भी करता हूँ। पर हिन्दू राष्ट्र की वह शक्ति होनी चाहिए, कि संसार की सभी जातियों में उसके अबाध सामाजिक सम्बन्ध बन सकें—तभी भारत में एक महान राष्ट्र का उदय हो सकता है!!!

[लेखक महोदय की "तब, अब क्यों और फिर?" नामक अप्रकाशित ग्रन्थ से, जो इस संस्था द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

—सम्पादक 'भविष्य']

* * *

भव्य-भविष्य

[कविवर पं० रामचरित जी उपाध्याय]

मिटेगी निविड़ अँधेरी रात,
प्रदर्शित होगा पुनः प्रभात।
अलक्षित असुरों का उत्पात,
न्याय होगा अवगत अवदात।
साम का सुखद सुरीला गान—
सुनेंगे, होगा देवोत्थान॥

न होगी पराधीनता-भीति,
रहेगी नहीं धाँधली नीति।
खलों पर होगी नहीं प्रतीति,
बढ़ेगी पुनः परस्पर प्रीति।
शौर्य का उद्यापन होगा।
सत्ययुग का स्थापन होगा॥

भीरुता भग जाएगी कहीं,
वीरता फिर आएगी यहीं।
रहेगा दानव का दल नहीं,
रहेगी मानव के बल मही।
शस्त्र-शास्त्रों का होगा ज्ञान।
पूर्व गौरव पर होगा ध्यान॥

मरण जीवन का है परिणाम,
सुखद स्वर्गद केवल संग्राम।
समर चढ़ना वीरों का काम,
काम के बिना न होता नाम।
यही हमको शिक्षा होगी।
अलग हमसे भिक्षा होगी॥

अछूतों का होगा उद्धार,
रीति में होगा सुघर सुधार।
देश में सौम्याचार विचार,
हार पर हुरदङ्गों की हार।
अनय की नैया नदिया बीच
मग्न होगी, झींखेंगे नीच॥

विश्व में होगी नैतिक क्रान्ति,
बढ़ेगी उद्भ्रान्तों की भ्रान्ति।
करेंगे खल परस्व की वान्ति,
कठिनता से छाएगी शान्ति।
पलट जाएगी काया आप।
न होगा पाप-जनों से ताप॥

निबल हो जाएँगे बलवान,
अधन हो जाएँगे धनवान।
विगुण हो जाएँगे गुणवान,
अधिप हो जाएँगे परवान*॥
नहीं बक बने रहेंगे हंस।
कपट-गढ़ हो जाएगा ध्वंस॥

घाट घर से हो हीन जघन्य,
वनों में फिर विचरेंगे वन्य।
कहेंगे लज्जित हो नृपमन्य।
धन्य भारत! भू पर तू धन्य।
छिड़ेगी फिर वंशी की तान।
करेगा मोहन गीता-गान!!

* * *

*पराधीन।

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की।

बॉयकॉट आन्दोलन का प्रभाव देख कर तो अपने राम की भूख-प्यास असहयोग कर बैठी है। ओफ़ ओह! कुछ ठिकाना है। कहाँ तो पहले केवल विदेशी वस्त्र का बॉयकॉट आरम्भ हुआ था और कहाँ अब यह दशा है कि सिगरेट, साबुन, औषधियाँ--सबका एक सिरे से बॉयकॉट !! बॉयकॉट आन्दोलन चलाने के समय बूढ़े बाबा गाँधी जी के मस्तिष्क में भी इतने बॉयकॉट उदय न हुए होंगे ! जैसे हज़रत मुहम्मद को क़ुरानशरीफ़ की आयतों का इलहाम (दैवी सन्देश) होता था उसी प्रकार हिन्दुस्तानियों को बॉयकॉट का इलहाम हो रहा है। इस बॉयकॉट से किसी को भी हानि हो या लाभ, परन्तु अपने राम मारे चिन्ता के आधे रह गए। क्या करें, अपने राम तो उन ऋषियों की सन्तान हैं, जो सवेरे उठ कर पहले सब का भला मनाने के पश्चात ईश्वर से अपनी भलाई की प्रार्थना किया करते थे। पुराने संस्कार एक बारगी कैसे मिट सकते हैं ! माई-बाप अङ्गरेज़ों की यह दुर्दशा अपने राम से तो नहीं देखी जाती। कहावत भी है कि पीठ की मार भली, परन्तु पेट की मार भली नहीं। सो यहाँ तो पेट की मार दी जा रही है। यह बहुत बुरी बात है। हिन्दुस्तानियों में धर्म्म-युद्ध का माद्दा बिल्कुल नहीं रह गया। यदि अङ्गरेज़ों से झगड़ना ही है तो जमा-ख़र्च रक्खो—ख़ूब कहो और ख़ूब सुनो, परन्तु भाई खाने को दिए जाओ। जिसे खाने को ही न मिलेगा वह क्या अपनी कहेगा और क्या दूसरे की सुनेगा। हिन्दुस्तानियों में कुछ मर्दानापन है, धर्म्म-युद्ध का माद्दा है तो अङ्गरेज़ों की रोटियाँ बन्द न करें—बल्कि वीरता तो इसी में है कि उनका रैशन डबल कर दें और फिर कहें कि अब आओ बहस कर लो ! लड़ लो !! झगड़ लो !!! फिर स्वराज्य चाहे मिले या न मिले, परन्तु जो कुछ हो धर्म्म तथा वीरता की पुट लिए हुए—तभी लड़ाई का मज़ा है, अन्यथा जब आदमी भूखा मरेगा तो लड़ाई-वड़ाई सब भूल कर 'रोटी-रोटी' चिल्लाने लगेगा ! ऐसी लड़ाई दो कौड़ी की !! अपने राम इस लड़ाई को लड़ाई नहीं, हत्याकाण्ड समझते हैं। यह सौभाग्य की बात है कि जो अपने राम का विचार है, वही विचार देश के बहुत से व्यापारियों का भी है। व्यापारी जाति में अधिकतर मारवाड़ी तथा बनिए हैं। ये जातियाँ कितनी धार्म्मिक तथा दयावान हैं—यह आप से छिपा न होगा। सड़कों पर चींटियाँ चुनाना, बन्दरों को चने चबवाना, कछुओं को राम नाम की गोलियाँ निगलवाना—इन्हीं महाजातियों का काम है ! दूसरी जातियों से यह काम न हुआ है और न हो ही सकता है। यह जाति किसी को भूख से मरता हुआ देख ही नहीं सकती। देखे तो तब, जब आदत हो—आदत तो है ही नहीं, देखे कैसे ? अतएव इस जाति के अधिकांश लोग इस समय दिलोजान से अङ्गरेज़ों की सहायता कर रहे हैं। पिकेटिङ्ग होते हुए भी अनेक प्रकार के छल-बल करके ये लोग विलायती कपड़े की निकासी करते ही हैं। क्या करें, आदत से लाचार हैं। जिस समय ये लोग चटपटा और झोलदार भोजन करने बैठते हैं, उस समय मुँह में दिया हुआ कौर नाक के रास्ते बाहर निकलने लगता है। क्यों ? यह सोच कर कि हाय ! लङ्काशायर में इस समय लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं। हम इस समय इस आलू के झोल में ग़ोता मार रहे हैं और उन्हें उबले आलू भी नसीब न हुए होंगे ! यह विचार आते ही उनका दया-भाव पद्दलित सर्प की भाँति जाग्रत हो उठता है। उस समय ये लोग यह भीष्म प्रतिज्ञा करते हैं कि चाहे जो कुछ हो, चाहे स्वराज्य मिले या न मिले, चाहे गाँधी जी जेल ही में पड़े रहें—क्योंकि उनको तो जेल में भी भोजन मिलता ही है, दूसरे जेल में रहने की उनकी कुछ आदत भी पड़ गई है—इसमें हमारा क्या दोष है—परन्तु लङ्काशायर वालों के लिए कम से कम दोनों समय डबल रोटी और मक्खन का प्रबन्ध होना ही चाहिए। इधर उन्होंने यह विचार किया और उधर दिमाग़ की फ़ैक्टरी में 'वल्लायती' माल निकालने की युक्तियाँ सोची जाने लगीं। उन्होंने कैसी-कैसी युक्तियाँ निकालीं, इसका प्रमाण आपको मिला ही होगा। कलकत्ते में इन लोगों ने पिकेटर्स को गुण्डों द्वारा पिटवाया, पुलीस की सहायता ली। पालकियों में ज़नानी सवारी के बहाने विलायती कपड़ा निकलवाया। मुर्दों की अर्थियाँ बना कर और उसमें लाश की जगह वलायती धोती जोड़े लदवा कर बाहर भेजे। वह तो कहिये पिकेटर्स को भगवान समझे !! उन्होंने एक ही रात में एक ही घर से दो अर्थियाँ निकलते देख कर सन्देह किया—यद्यपि सन्देह करने का उनका कोई अधिकार नहीं था !! हैज़े और प्लेग में एक-एक घर से एक-एक दिन में चार-चार अर्थियाँ निकल चुकी हैं—उस समय किसी भकुए को सन्देह नहीं हुआ। परन्तु आजकल केवल दो अर्थी देख कर ही सन्देह कर बैठा ! यह अन्धेर नहीं तो और क्या है ? तो सम्पादक जी, पिकेटर्स को सन्देह हो गया और उन्होंने अर्थी की जाँच की तो उसमें लाश के स्थान में धोती-जोड़े निकले !!! अतएव उन्होंने इस युक्ति से काम लेना बन्द कर दिया। यदि युक्ति कारगर होती रहती तो कलकत्ते के व्यापारियों के घर में बे मौसम की महामारी फैल जाती। हमारे नगर में भी कुछ व्यापारियों ने, जो कि काँग्रेस के कार्य-क्रम से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं और हाथ-पैर बचा कर भाग भी लेते रहते हैं, विदेशी कपड़ों की गाँठों को स्वदेशी गाठों का रूप देकर इधर-उधर भेजना आरम्भ किया था, परन्तु शक्की पिकेटर्स तथा स्वयम्-सेवकों ने भण्डाफोड़ कर दिया। न जाने ऐसे शक्की आदमियों को काँग्रेस कमेटियाँ कैसे भर्ती कर लेती हैं। शक्की आदमी बहुत बुरा होता है—ऐसे आदमी को तो पास न फटकने देना चाहिए। सो यहाँ तक तो इन दया के पुतलों ने किया। अपने देशवासियों को गुण्डों और पुलीस से पिटवाया, जाल किया, फ़रेब किया—क्यों ? वही आदत की लाचारी से ! परोपकार की आदत के कारण ये सब ज़िल्लतें उठानी पड़ीं !!

कुछ मूर्ख लोग समझते हैं, समझते ही नहीं, खुल्लमखुल्ला कहते भी हैं, कि व्यापारी लोग यह सब अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। अपने राम उनके इस विचार और इस कथन से रत्ती भर तो क्या, पसेरी दो पसेरी भी सहमत नहीं हैं। अपने स्वार्थ के लिए कोई इतनी ज़िल्लत और बदनामी उठा ही नहीं सकता, और कोई चाहे भले ही उठा ले, परन्तु मारवाड़ी और बनिये, जिनके हाथ में व्यापार की बागडोर है, ऐसा कदापि नहीं कर सकते। इन्हें तो केवल दया खाए जाती है और कुछ परलोक का विचार ! हिन्दू-धर्म यह चीख़-चीख़ कर कहता है कि इस लोक में जैसा करोगे वैसा परलोक में भोगोगे, इस लोक में जो दोगे वही परलोक में पाओगे ! इसका तत्त्व हमारे व्यापारी भाई ख़ूब समझते हैं। वह जानते हैं कि यदि इस लोक में वे किसी की रोटी छीनेंगे तो परलोक में उन्हें भी रोटी नसीब न होगी। और यदि इस लोक में वे दूसरों की रोटी का ख़्याल रक्खेंगे तो उन्हें भी परलोक में फुलके, पूरी, पराठे और चटपटे झोलदार आलू मिलते रहेंगे ! अतएव वे परलोक का प्रबन्ध पहले करते हैं। इस लोक में वे भूखों मर सकते हैं, परन्तु परलोक में—हरे ! हरे ! परलोक में तो एक क्षण भी भूखे नहीं रह सकते !! केवल यही एक कारण है, जिससे कि वे लङ्काशायर वालों की रोटियाँ छीनने का विचार तक नहीं कर सकते ; और इस लोक में उन्हें अब आवश्यकता ही क्या रह गई है जो वे अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करेंगे ? उन्होंने अपने जीवन भर के गुज़ारे के लिए यथेष्ट कमा लिया है; अब उन्हें अपनी परवा उसी प्रकार नहीं है, जिस प्रकार कि बूढ़ी बिल्ली को चूहों की परवा नहीं रहती। अतएव उन पर यह दोषारोपण करना, कि वे अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करते हैं, उतना ही असङ्गत है, जितना कि उलूक पर सूर्य से असहयोग करने का दोषारोपण करना। हाँ, यह कहा जा सकता है कि उनमें कृतज्ञता का माद्दा अभी विद्यमान है। वे विलायत वालों के कृतज्ञ हैं। जिनकी बदौलत वे इतने मालदार बन गये—मुल्लू से सेठ मूलचन्द अथवा लाला मूलचन्द बन गये, उनके प्रति कृतघ्नता कैसे करें ? जो समय पड़ने पर अपनी सहायता करे तो समय पड़ने पर उसकी सहायता भी अवश्य करनी चाहिए। यह भाव इन लोगों में काम कर रहा है। अन्यथा ये लोग कुछ नासमझ नहीं हैं—करोड़ों का व्यापार करते हैं। करोड़ों का व्यापार करने वाले कहीं नासमझ हो सकते हैं ? यदि कोई गुण-ग्राहक हो तो वह समझे कि ये लोग कितने वफ़ादार हैं। परन्तु अन्धे के आगे रोवे अपनी आँखें खोवे। जिसमें वफ़ादारी का माद्दा नहीं, वह भी कोई आदमी है ?

सम्पादक जी, दुनिया चाहे कुछ बके, काँग्रेस के अनुयायी चाहे जो कहें; क्योंकि वे इस समय अपने स्वार्थ के कारण अन्धे हो रहे हैं—सत्यासत्य का ज्ञान उनमें नहीं है ; परन्तु अपने राम तो यही कहेंगे कि व्यापारी लोग यदि चुरा-छिपा कर विलायती माल की निकासी कर रहे हैं तो बड़ा अच्छा कर रहे हैं। ईश्वर इन्हें इसका फल देगा। प्रथम तो इन लोगों के शाप से भारत को स्वराज्य मिलेगा ही नहीं—यद्यपि यह कहावत है कि चमार के कोसे ढोर नहीं मरते; परन्तु यह कहावत इन लोगों पर लागू नहीं हो सकती; क्योंकि न तो काँग्रेस ढोर है और न ये लोग चमार—और यदि धोखे से स्वराज्य मिल भी गया, तो भी इन्हें कुछ परवा नहीं—सब लोग अपना बोरिया-बँधना सँभाल कर इङ्गलैण्ड में जा बसेंगे। इस दशा में भी भारत की बहुत बड़ी हानि होगी; क्योंकि भारत में व्यापार का चिह्न तक न रह जायगा। जब व्यापारी जाति ही न रहेगी, तो व्यापार करेगा कौन—और कोई करेगा तो हानि उठाएगा; क्योंकि कहावत है कि तेली का काम तम्बोली कभी नहीं कर सकता !

मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरे विचारों से उसी प्रकार सहमत होंगे, जिस प्रकार कि मैं उपरोक्त व्यापारियों के बिचारों से सहमत हूँ।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबेजी)

* * *

श्रमजीवी-संसार

बेकारी की समस्या

["राजनीति का एक विनम्र विद्यार्थी"]

संसार के सामने इस समय जो समस्याएँ मौजूद हैं, उनमें सबसे बड़ी समस्या शायद बेकारी की है। यह एक ऐसा प्रश्न है जो मनुष्य-समाज की नींव को हिला रहा है। यूरोप, अमेरिका, एशिया आदि संसार के सभी महाद्वीपों में यह समस्या विकराल रूप से मुँह बाए खड़ी है और यदि वर्तमान काल के शासकगण और राष्ट्रों के नेता इसका कोई उपाय न कर सके तो यह निश्चय ही संसार में उथल-पुथल मचा देगी और मनुष्य जाति को भयङ्कर सङ्कट का सामना करना पड़ेगा। इस समय अमेरिका में ३० से ४० लाख, जर्मनी में २० लाख, इङ्गलैण्ड में १५ से २० लाख व्यक्ति बेकार हैं! उनको चेष्टा करने पर भी किसी तरह की नौकरी नहीं मिलती और या तो उनकी परवरिश सरकार करती है या उनको भूखों मरना पड़ता है। अन्य देशों की भी क़रीब-क़रीब यही हालत है और हर जगह लाखों आदमी नौकरी के लिए व्याकुल घूमते हैं। इन बेकारों की संख्या घटने के बदले, दिन पर दिन बढ़ती जाती है। अगर गवर्नमेण्ट कोशिश करके दो-चार लाख आदमियों के लिए कोई नया काम ढूँढ़ कर निकालती है तो किसी नई हलचल के कारण अन्य व्यवसाय में उससे भी अधिक लोग बेकार हो जाते हैं!

बेकारी के कारण साधारण जनता पर आजकल जैसी मुसीबत आई हुई है, उसका वर्णन शब्दों में किया जा सकना कठिन है। किसी बाल-बच्चेदार आदमी के लिए, जो केवल माहवारी तनख़ाह या मज़दूरी पर निर्भर रहता है, कई-कई महीने तक बेकार रहना कितना भयङ्कर है, इसे वे ही समझ सकते हैं, जिन पर यह मुसीबत कभी पड़ी है। यद्यपि इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में गवर्नमेण्ट का यह कर्तव्य समझा जाता है कि वह इन बेकार लोगों को खाने के लिए दे, और इसलिए उन देशों के ख़ज़ाने से प्रति वर्ष अरबों रुपया ख़र्च भी किया जाता है, पर यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस उपाय से लोगों की तकलीफ़ मिट नहीं सकती और अनेकों को भूखों मरना पड़ता है। शासक भी इस समस्या के कारण परेशान हैं और उनकी अधिकांश शक्ति आजकल इसको सुलझाने में लगी है। अभी हाल ही इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट में सर ओसवाल्ड मोसले ने, जो मज़दूर पार्टी के एक प्रभावशाली नेता हैं, कहा था :—

"वर्तमान दशा यद्यपि सर्वथा निराशाजनक तो नहीं है, पर यह है बड़ी नाज़ुक! हमको उस पर स्पष्टतः विचार करना आवश्यक है। समस्त राष्ट्र का कर्तव्य है कि एक दिल होकर इसके प्रतिकार के लिए घोर चेष्टा करे, क्योंकि अगर यह काम वर्तमान मज़दूर सरकार के समय में भी नहीं हो सका तो फिर आगे कैसे हो सकेगा? अगर उचित चेष्टा नहीं की गई तो हमको शीघ्र ही किसी गम्भीर सङ्कट का सामना करना पड़ेगा। मैं इस सङ्कट से भयभीत नहीं होता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यहाँ के निवासी ऐसे सङ्कट के समय में बहुत अच्छी तरह काम करना जानते हैं। उनको मालूम है कि सङ्कट का सामना किस प्रकार किया जाता है। मुझे जिस बात का भय है, वह यह है कि कहीं हम धीरे-धीरे नीचे गिरते हुए निष्क्रिय और शक्तिहीन न हो जायँ। यह बात बड़ी भयङ्कर है और यदि चेष्टा न की गई तो इसकी बहुत कुछ सम्भावना है।"

अमेरिका की भी यही दशा है। यद्यपि वह संसार का सब से अधिक मालदार देश है, और वहाँ गली-गली में करोड़पति पड़े हुए हैं, पर बेकारी के कारण वहाँ भी लाखों मनुष्यों को भूखों मरना पड़ता है। थोड़े दिन पहले वहाँ की राष्ट्रीय काँग्रेस के सीनेटर कजिन्स ने एक सभा में व्याख्यान देते हुए कहा था :—

"क्या आपने कभी इस पर विचार किया है कि अमेरिका में ३० लाख व्यक्ति, जो कि डेढ़ करोड़ प्राणियों का पालन करते हैं, बेकार हैं? क्या आप समझते हैं कि कङ्गाली के कारण ये लोग कुछ नहीं ख़रीद सकते, और इसके कारण अमेरिका के व्यापार को कितनी हानि पहुँच रही है? आप समझते हैं कि सरकार इन लोगों का पालन करती है, इसलिए, इससे किसी का कुछ नुक़सान नहीं होता। पर सरकार उनको आपके ही ख़र्च से पालती है; आप पर टैक्स लगा कर ही उनके ख़र्च के लिए रुपया वसूल करती है! इस प्रकार आप उनका ख़र्च तो देते ही हैं, पर ऐसे तरीक़े से देते हैं, जिसमें बहुत बड़ी रक़म बर्बाद जाती है; क्योंकि सरकार द्वारा जो काम किए जाते हैं उनमें सब से अधिक ख़र्च होता है। अगर आप इस समस्या को स्वयं हल कर लें तो आप भारी टैक्सों को बन्द करा सकते हैं और व्यवसाय-वाणिज्य की उन्नति में सरकारी अधिकारियों के हस्तक्षेप को रोक सकते हैं। सरकार तब तक व्यवसाय में हस्तक्षेप नहीं करती, जब तक व्यवसाय स्वयं उस दशा में नहीं पहुँच जाता, जब कि सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक हो।"

अब प्रश्न होता है कि बेकारी किस उपाय से दूर हो सकती है? पर उपाय ढूँढ़ने से पहले हमको इसका कारण ढूँढ़ना चाहिए, क्योंकि बिना वास्तविक कारण को जाने, बिना जड़ का पता लगाए, किसी बीमारी का इलाज नहीं हो सकता, चाहे वह व्यक्ति के शरीर में हो और चाहे समाज के शरीर में!

बेकारी का मुख्य कारण मैशीन और व्यवसाय वाणिज्य का वर्तमान तरीक़ा है। मैशीनों के कारण प्रत्येक काम पहले की अपेक्षा जल्दी होने लगा है। बीस साल पहले जिस काम को करने के लिए सौ मनुष्य दरकार होते थे, वह आजकल पचहत्तर मनुष्यों से ही हो जाता है, और मैशीनों की इसी तरह तरक़्क़ी होती रही तो इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि बीस साल आगे चल कर वही काम पचास से कम मनुष्यों द्वारा होने लगेगा। उसके पश्चात् क्या होगा, यह भी हम अपनी कल्पना द्वारा जान सकते हैं। इतना ही नहीं, मज़दूरों की संख्या के घटाए जाने पर भी मैशीनें पहले से ज़्यादा माल तैयार कर डालती हैं। वे इतना ज़्यादा माल बनाती हैं कि बाज़ार में उसका बिक सकना असम्भव होता है और वह गोदामों में भरा हुआ ख़राब होने लगता है। तब कारख़ानों के मालिक माल बनाना क़तई बन्द कर देते हैं और उनका ऐसा करना अनुचित भी नहीं कहा जा सकता; क्योंकि जब माल बिकता ही नहीं और पड़ा-पड़ा सड़ता-गलता है, तब नया माल बनाते रहने से नुक़सान के सिवा क्या फ़ायदा हो सकता है?

मैशीनों के द्वारा माल कितना अधिक तैयार होता है, इसके लिए दो-एक उदाहरण देखिए। सन् १९२९ में अमेरिका के मोटर बनाने वाले कारख़ानों ने जितनी गाड़ियाँ बिक सकती हैं उनसे बीस लाख ज़्यादा गाड़ियाँ बना डालीं, और उनके कारख़ानों में इतनी गुञ्जायश है कि अगर वे चाहते तो चालीस लाख गाड़ियाँ ज़्यादा बना सकते थे! यह बात सिर्फ़ कारख़ाने में बनने वाली चीज़ों के सम्बन्ध में ही नहीं है, दो वर्ष पहले अमेरिका में मैशीनों और अन्य वैज्ञानिक उपायों द्वारा इतनी अधिक रूई उत्पन्न की गई कि उसके कारण रूई के बाज़ार में बड़ी हलचल मच गई और बड़े-बड़े धनवानों ने किसानों पर दबाव डाल कर लाखों मन कपास को खेतों में ही आग लगा कर जलवा डाला! गेहूँ की भी यही दशा है। अमेरिका की सरकार ने करोड़ों रुपए इस बात के लिए ख़र्च किया कि गेहूँ की अधिक पैदावार के कारण बाज़ार का भाव न बिगड़ जाय, और अब वह किसानों से इतना ज़्यादा गेहूँ पैदा न करने की प्रार्थना कर रही है, जिससे देश का नुक़सान हो !!!

हमारे साधारण पाठक, जो कि आजकल के कुटिल आर्थिक नियमों और निन्दनीय व्यवसाय-प्रथा से अनजान हैं, इस बात को पढ़ कर बड़ा ताज्जुब करेंगे कि आख़िर माल तैयार होने से रोकने और रूई और गेहूँ जैसी जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को जान-बूझ कर नष्ट करने से क्या लाभ? क्योंकि वे अपनी आँखों से देखते हैं कि हमारे देश में करोड़ों अभागे प्राणी दो मुट्ठी अन्न और गज़ भर कपड़े के लिए तरसते रहते हैं। इङ्गलैण्ड और अमेरिका में भी अनगिनती लोग भूखों मरते रहते हैं। तब यदि इन वस्त्रों और अन्न आदि को नष्ट न करके, उन ग़रीबों को दे दिया जाय, तो इसमें किसी की क्या हानि है? पर वे सज्जन वर्तमान समय में समाज में प्रचलित पूँजीवाद-पद्धति को भूल जाते हैं! आजकल प्रत्येक वस्तु किसी न किसी व्यक्ति के अधिकार में रहती है और वह उसका मनमाना उपयोग कर सकता है, चाहे उससे समाज का भला हो या बुरा। इसी अधिकार के कारण इन वस्तुओं के स्वामी इस बात का विचार नहीं करते कि इन लोगों को ज़रूरत है या नहीं! वे सदा इसी बात को निगाह में रख कर काम करते हैं कि इन वस्तुओं को किस तरीक़े से बेचा जाय कि अधिक लाभ हो। यह स्पष्ट है कि जब बाज़ार में बहुत ज़्यादा माल पहुँच जायगा तो उसका भाव घट जायगा और उन चीज़ों के मालिकों का नफ़ा भी कम हो जायगा। इसलिए वे सदा इतना माल पैदा करना चाहते हैं, जिससे बाज़ार का भाव न बिगड़े और उनको पूरा नफ़ा मिलता रहे, फिर चाहे ग़रीब लोग जीते रहें और चाहे भूखों मरें। थोड़े दिन हुए सुप्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक 'मेसर्स लॉंगमैन्स ग्रीन एण्ड को' ने अपनी न्यूयार्क की शाखा से एक पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसका नाम है 'Towards civilisation' (सभ्यता की ओर) इस पुस्तक में, जिसमें बहुत से अनुभवी इञ्जीनियरों और वैज्ञानिकों के, जो न साम्यवादी ही हैं, न अनारकिस्ट—लेखों का संग्रह किया गया है। इस पुस्तक की भूमिका में एक स्थान पर कहा गया है :—"समझे जाने वाले पक्के व्यवसायी का प्रधान लक्ष्य तैयार होने वाली चीज़ों के परिमाण पर रहता है, न कि मनुष्य-जीवन की उन्नति पर, और इसके लिए वह अपना और अपने से सम्बन्ध रखने वाले अन्य सब लोगों का बलिदान करने को तैयार रहता है। उसके अर्थशास्त्रकारों के मतानुसार लाभदायक पूँजी वही है जो कि नई पूँजी उत्पन्न करे। जो पूँजी मनुष्य-जीवन को केवल सुन्दर और मीठा बनाती है वह उनकी सम्मति में

अनुत्पादक है—लाभ-रहित है। ये लोग उन बातों को, जो कम से कम लागत में अधिक से अधिक माल तैयार करने में सहायता नहीं पहुँचातीं, तुच्छ समझते हैं। वे इन बातों पर दार्शनिक दृष्टि से विचार नहीं कर सकते और न भविष्य की तरफ़ निगाह उठा कर देखने को राज़ी हैं। उन लोगों को अपने सिद्धान्त में सरल विश्वास है। वे उन धर्म-प्रचारकों के समान अन्ध और दृढ़-विश्वासी हैं, जो समझते हैं कि ईश्वर ने जो कुछ बनाया है अच्छा ही बनाया है! इन लोगों को एक इसी बात की लगन रहती है कि सम्पत्ति की वृद्धि हो और उसके विरोध करने वालों का सर्वनाश!

"आजकल बड़े-बड़े व्यावसायिक शहरों के नव-निर्माण में सिर्फ़ इसी बात का ध्यान रक्खा जाता है कि मज़दूर और दूसरे नौकर किसी प्रकार छत के नीचे थोड़ा सोकर फिर काम करने लायक़ बन जायँ। चूँकि आज-कल सब कामों में प्रतिद्वन्द्विता का भाव सम्मिलित रहता है और जल्दी से जल्दी लाभ उठाने की नीयत रक्खी जाती है, इसलिए जीवन की सुन्दरता ही नहीं, वरन् स्वास्थ्य और साधारण आराम की बातों की भी उपेक्षा की जाती है। उन अभागे लोगों को तङ्ग जगहों में भेड़-बकरियों की तरह भरे हुए रहना पड़ता है, सूर्य की रोशनी भी उनको प्राप्त नहीं होती, साँस लेने के लिए हवा की जगह धुँआ मिलता है, और नालियों की बदबू नाक में घुसती रहती है। और तो क्या, वे नीले आकाश के भी दर्शन नहीं कर पाते!!"

अब पाठक इस बात को समझ सकते हैं कि बेकारी और मज़दूरों की दुर्दशा के वास्तविक कारण क्या हैं? मैशीनों का प्रचार बेकारी का एक प्रधान कारण अवश्य है, पर मैशीन तो कोई सजीव या विवेकशील चीज़ नहीं है। वह चाहे जैसी आश्चर्यजनक दिखलाई पड़े, वह असल में एक जड़ पदार्थ ही है। उससे जिस प्रकार मनुष्य काम लेंगे, उसी प्रकार वह काम करेगी। उसकी दशा एक चाक़ू की तरह है, जिससे मनुष्य के घाव और फोड़ों का ऑपरेशन करके उसे लाभ पहुँचाया जा सकता है, और साथ ही उसका गला काट कर उसके जीवन का अन्त भी किया जा सकता है! इसलिए मैशीनों के कारण मनुष्य-समाज का जो अनिष्ट होता दिखलाई पड़ रहा है, उसका मूल कारण मैशीन नहीं है, वरन् वे लोग हैं, जो उस पर अधिकार रखते हैं और उस पर अपने काम के लिए काम कराते हैं। ये ही पूँजीपति या 'कैपिटलिस्ट' दल वाले और इनकी कार्य-प्रणाली बेकारी का मूल कारण है।

जैसा ऊपर वर्णन किया जा चुका है, पूँजीपतियों अथवा कारख़ाने आदि के मालिकों का एकमात्र उद्देश्य यही रहता है कि किसी भी उपाय से कम से कम लागत में अधिक से अधिक माल तैयार किया जाय, अथवा व्यापार में ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा उठाया जाय। उन लोगों की यही प्रवृत्ति बेकारी को उत्पन्न करने वाली है। वर्तमान पूँजीवादी पद्धति में मज़दूरों को जितनी मज़दूरी दी जाती है, सदा उससे अधिक का काम कराया जाता है। उदाहरण के लिए अगर कोई कारख़ाने वाला अपने मज़दूरों को दस हज़ार महीना मज़दूरी देता है तो वह अवश्य ही उनसे इतना माल तैयार कराएगा जिसमें उसे सब ख़र्च निकाल कर पन्द्रह-बीस हज़ार रुपया मिल सके। इस प्रकार संसार भर के मज़दूर यदि सौ अरब रुपया मज़दूरी पाते हैं तो उसके बदले में डेढ़ सौ या दो सौ अरब का माल तैयार कर देते हैं। यह साफ़ ज़ाहिर है कि ये तमाम मज़दूर सौ अरब से अधिक का माल नहीं ख़रीद सकते, क्योंकि उनके पास इससे ज़्यादा रुपया ही नहीं होता। तब बाक़ी पचास या सौ अरब के माल का क्या हो? पूँजी-पतियों या उनके कुटुम्ब वालों की संख्या तो इतनी ज़्यादा होती नहीं, कि वे उस सब माल का उपयोग कर सकें।

फल यह होता है कि माल इकट्ठा होता जाता है और कुछ दिनों में उसका परिमाण इतना अधिक हो जाता है कि वह गोदामों में पड़ा सड़ने लगता है। तब वे लोग स्वयं कारख़ानों को बन्द कर देते हैं, या मज़दूरों के साथ ऐसी सख़्ती का बर्ताव करने लगते हैं कि वे हड़ताल कर देते हैं और काम बन्द हो जाता है। कारख़ाने वालों की इच्छा होती है कि जब उनका गोदामों में इकट्ठा माल बिक जाय तो वे फिर से कारख़ानों को खोलें। पर मज़-दूर नौकरी छूट जाने के कारण भूखों मरने लगते हैं और पैसे के अभाव से कुछ भी माल नहीं ख़रीद सकते। इस प्रकार एक ऐसा व्यापार-सङ्कट (Business crisis) उत्पन्न हो जाता है जिसका अन्त हो सकना बड़ा कठिन जान पड़ता है। मालिक लोग अपने इकट्ठे माल को बेचे बिना और अधिक माल बनाना मूर्खता का काम समझते हैं और मज़दूर या नौकरी पेशा लोग बिना मज़दूरी पाए कुछ ख़रीद नहीं सकते। अन्त में बहुत दिनों तक ऐसी ही हालत बनी रहती है और माल धीरे-धीरे ख़र्च या ख़राब होता रहता है। जब माल घटने लगता है तो फिर कारबार शुरू होता है!!

इस विवेचन से स्पष्ट है कि पूँजीवाद अथवा कारबार की वर्तमान प्रणाली में स्वभावतः एक ऐसा अवगुण मौजूद है जो बार-बार व्यापार-सङ्कट और बेकारी की स्थिति को उत्पन्न करता है। कारख़ाने वाले कभी इस दशा से बचने के लिए मज़दूरों से दिन में दस घण्टे की

जगह पाँच घण्टे में काम कराते हैं और कभी सप्ताह में तीन-चार दिन कारख़ानों को बन्द रखते हैं। वे मज़दूरों की तनख़्वाह को घटा कर भी अपनी कमी को पूरा करना चाहते हैं। कितने ही देशों में मज़दूरों की नौकरी का बीमा कराने की प्रथा जारी की गई है, जिससे बेकारी की हालत में बीमा कम्पनी वाले मज़दूरों को खाने के लिए दें। बड़े-बड़े देशों में सरकार स्वयं बेकार मज़दूरों की सहायता करती है और जब तक नौकरी नहीं मिलती, उनको अपने ख़ज़ाने से आधी तिहाई तनख़्वाह देती है। पर ये सब उपाय एक जीर्ण-शीर्ण मकान की ऊपर से लीपा-पोती करने के समान हैं और इनमें से कोई मूल कारण को दूर करके सदा के लिए स्थिति का सुधार नहीं कर सकता।

अब कुछ लोगों का ध्यान इस स्थिति के सुधार की तरफ़ जाने लगा है। यों तो कोई सौ वर्ष से अधिक समय से इसके लिए आन्दोलन किया जा रहा है और बहुत सी स्कीमें भी बनाई गई हैं, पर अधिकार सम्पन्न और बड़े लोग अब तक इन सब बातों को साम्यवादियों की बकवाद कह कर उपेक्षापूर्वक टाल देते थे। इतना ही नहीं, इन्हीं बातों की माँग पेश करने के अपराध में आज तक न मालूम कितने निरपराध और उच्च चरित्र के व्यक्तियों को जुर्माने, जेल और फाँसी तक की सज़ाएँ दी गई हैं और लाखों, करोड़ों श्रमजीवियों को भूख-प्यास की यन्त्रणाएँ उठानी पड़ी हैं। पर अब कुछ बड़े लोग स्वयं ही इन बातों को कह रहे हैं, और यद्यपि वे अब भी साम्य-वादियों का विरोध करना बन्द नहीं करते, पर कुछ अंशों में उनके मत का समर्थन कर रहे हैं। कुछ दिन हुए इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध 'रिव्यू ऑफ़ रिव्यूज़' नामक मासिकपत्र के, जिसे

'बड़े' लोगों का ही पक्षपाती कहा जा सकता है, सम्पादक ने 'बेकारी' के सम्बन्ध में आलोचना करते हुए लिखा था:—

"मुझे तो यह जान पड़ता है कि इस समस्या को हल करने का उपाय उत्तरदायित्वपूर्ण सहयोग है। इसकी वृद्धि करने के अनेकों मार्ग हैं, पर उन सबका मूल आधार एक ही है। आवश्यकता इस बात की है कि मज़-दूर काम और अपने श्रम के फल में प्रत्यक्ष रूप से दिल-चस्पी लेने लगें। कारबार में सबसे प्रधान बात ये श्रमजीवी ही हैं, न कि मैशीन अथवा पूँजी, जिससे ये मैशीनें ख़रीदी जाती हैं। अगर मैशीनें उच्च-सभ्यता के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं—और मेरा विचार है कि वे आवश्यक हैं—तो भी हमको इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए कि हम साधन को उद्देश्य न समझ बैठें! मैशीनों और पूँजी को वस्तु ही समझना चाहिए, ये सभ्यता का निर्माण करने में कच्चे माल की तरह हैं। इन-को सभ्य-समाज के फूल या फल की तरह समझना भूल है। सभ्यता का वास्तविक फल तो श्रेष्ठ और उत्तम मनुष्यों को उत्पन्न करना ही है।

"मैं नहीं समझता कि जब तक हम इस बात को मज़बूती के साथ अपने दिल में न जमा लें, तब तक बेकारी की समस्या को सुलझाने का कोई उपाय सफल हो सकता है। अगर उद्योग-धन्धों और कार-ख़ानों के स्वामी तथा प्रबन्धक इस बात को अच्छी तरह समझ जायँ कि वे स्वयं और उनके मज़दूर एक ही सामाजिक दल के हैं, कारबार में दोनों किसी हद तक साझेदार हैं, और दोनों को उसके प्रबन्ध में बोलने का अधिकार है, तो बेकारी की समस्या सहज ही में हल की जा सकती है। यह निश्चय है कि ऐसा होने से सट्टेबाज़ शेयर होल्डर्स (हिस्सेदार) लम्बी-चौड़ी रक़में न पा सकेंगे और उनको बाज़ार में मिलने वाले सूद के बराबर मामूली रक़म पर ही सन्तोष कर लेना पड़ेगा। पर उस दशा में सबको काफ़ी काम करने को मिल सकेगा और मज़दूरों को वर्तमान समय की अपेक्षा कम काम करना पड़ेगा। अन्त में जब कि मनुष्य पूरी तौर से मैशीनों के मालिक बन जायँगे तो हमारे सामने यह कठिनाई न रहेगी कि बेकारों को कहाँ से काम दिया जाय, वरन् यह प्रश्न उपस्थित होगा कि मज़दूर अपने फ़ुर्सत के समय का सदुपयोग किस प्रकार कर सकते हैं।"

'रिव्यू ऑफ़ रिव्यूज़' के सम्पादक ने मालिकों और मज़दूरों में जिस सहयोग का प्रस्ताव किया है, कितने ही लोग इन विचारों के साम्यवादी बहुत समय से उस पर ज़ोर देते आ रहे हैं। पर श्रमजीवियों के अधिकांश नेताओं का मत है कि इस उपाय से भी यह समस्या पूरी तरह से हल नहीं हो सकेगी, चाहे इसमें थोड़ा-बहुत सुधार भले ही हो जाय। जब तक कि मालिक और श्रमजीवी—ये दोनों श्रेणियाँ बनी रहेंगी और पूँजी वाले बिना कुछ मिहनत किए, केवल पूँजी लगाने के आधार पर मज़-दूरों के स्वत्व अपहरण करते रहेंगे तब तक, न तो बेकारी पूरी तौर से मिट सकती है, न समाज में शान्ति स्थापित हो सकती है। इसका सच्चा उपाय यही है कि सब लोग अपने-अपने परिश्रम द्वारा रोटी कमा कर खायँ, फिर चाहे वह परिश्रम शारीरिक हो या मानसिक—चाहे वे मिट्टी खोदें और चाहे लड़के पढ़ावें। पर केवल किसी व्यक्ति का इस आधार पर, कि उसका बाप या अन्य रिश्तेदार मरते समय लाख दो लाख रुपया छोड़ गया है, या जुआ अथवा बेईमानी या किसी अन्य उपाय द्वारा वह बहुत सी सम्पत्ति पा गया है, बैठे-बैठे मौज उड़ाना किसी तरह न्यायसङ्गत नहीं माना जा सकता और जब तक ऐसी प्रथा क़ायम है, तब तक अवश्य कुछ लोगों को भूखों मरना पड़ेगा तथा उसके फल-स्वरूप समाज की शक्ति में बाधा पड़ेगी!!

* * * *

भारतीय-भारत

भारतीय स्वाधीनता और देशी-राज्य

["बड़े पते की एक प्रजा"]

देशी रियासतें दो भागों में विभाजित की जा सकती हैं। एक तो वे, जिनका शासन वर्तमान पाश्चात्य ढङ्ग पर होता है, जहाँ के शासक प्रजा-सत्तात्मक संस्थाओं की स्थापना का सतत प्रयत्न कर रहे हैं, जहाँ प्रजा की मानसिक और आर्थिक परिस्थिति सुधारने के लिए उच्च शिक्षा-संस्थाएँ खोली जा रही हैं और जहाँ कला-कौशल और व्यापार की वृद्धि के लिए राजा लोग सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसी रियासतों में मैसूर का नम्बर सर्व-प्रथम है। दूसरी रियासतें वे हैं, जिनका शासन अब भी प्राचीन या मध्यकालिक ढङ्ग से होता है। हिन्दुस्थान की ५६२ रियासतों में से मुश्किल से १०-१२ रियासतें ऐसी होंगी, जिनकी गणना प्रथम श्रेणी में की जा सकती है। उन १०-१२ को छोड़ कर, सभी रियासतें दूसरी श्रेणी में सम्मिलित होंगी। इस वर्ग की रियासतों के उदाहरण उदयपुर और जयपुर राज्य हैं।

उन्नति और विकास के इस युग में, जब कि देशी रियासतों के पड़ोस में ही ब्रिटिश-भारत ने विज्ञान, शासन-विधान, व्यापार और कला-कौशल में इतनी उन्नति कर ली है, इन रियासतों का त्रस्त और नृशंस शासन अब भी वहाँ की प्रजा को दीन, निर्धन, अज्ञान और अपाहिज बनाए हुए है! यदि ये देशी राजा वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति और संसार की राजनैतिक संस्थाओं का थोड़ा भी ज्ञान रखते हों, तो उन्हें यह शीघ्र मालूम हो जायगा कि अब उनके स्वेच्छाचारी (Autocratic) शासन के दिन इने-गिने रह गए हैं। संसार में आज जन-सत्तात्मक शासन-प्रणाली की लहर—चाहे वह किसी रूप में हो—बह चली है, और देशी रियासतें उस लहर के प्रवाह से बच नहीं सकतीं। ब्रिटिश-भारत में ऐसी संस्थाओं की स्थापना के साथ ही, देशी रियासतों में एक ऐसा वायु-मण्डल तैयार हो गया है कि यदि राजा लोग ब्रिटिश-भारत की जन-सत्तात्मक संस्थाओं की उपेक्षा भी करें, तो भी उनका प्रभाव वहाँ की प्रजा पर पड़े बिना नहीं रह सकता। वह दिन दूर नहीं है, जब भारत की छोटी-बड़ी सभी रियासतों में ऐसी संस्थाओं की स्थापना शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायगी। जैसे-जैसे दिन व्यतीत होंगे, उनके विरोध में अपनी समस्त शक्ति लगा देने पर भी उनकी जड़ अन्दर धँसती चली जायगी। राजाओं के बड़े से बड़े अत्याचारों और प्रजा के स्वाभाविक स्वत्वों पर छापा मारने से भी उनके स्वेच्छाचारी (Autocratic) शासन की रक्षा नहीं हो सकती; प्रत्युत इससे उनके शासन की जड़ हिल जायगी और स्वेच्छाचार सदैव के लिए रसातल को चला जायगा।

जन-सत्तात्मक शासन

ऐसी परिस्थिति में राजाओं की रक्षा का केवल एक ही उपाय है और वह है अपनी रियासतों में जन-सत्तात्मक शासन की स्थापना और ब्रिटिश राजा महाराजाओं की तरह स्वेच्छाचारी शासक से बदल कर वैध-शासक (Constitutional monarchy) बन जाना। ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट से दृष्टि सन्धियाँ करके और उससे अपने मान-मर्यादा की रक्षा का वचन लेकर, अब अपनी नृशंसता और अपने स्वेच्छाचारों की रक्षा नहीं कर सकते। इतिहास इस बात का साक्षी है; संसार के किसी देश के राजा का स्वेच्छाचारी शासन अधिक दिनों तक नहीं टिक सका। रूस के ज़ारों को लीजिए। अपनी रत्ती-रत्ती शक्ति लगाकर भी वे अपने स्वेच्छाचारों की रक्षा न कर सके और उसके परिणाम स्वरूप उनका जो भयानक अन्त हुआ वह किसी शिक्षित पुरुष से छिपा नहीं है। ज़ारों की तरह आसमान में तीर मारने की आकांक्षा छोड़ कर, ब्रिटिश लोगों की तरह देशी नरेशों को भी अपनी प्रजा के स्वत्वाधिकार देकर अपनी रक्षा करनी चाहिए। यदि ये नरेश अपनी रियासतों में शान्ति पूर्वक रहना चाहते हैं, तो उन्हें वैध शासक बन कर ब्रिटिश-भारत से मित्रता स्थापित करके रहना पड़ेगा। रियासतों की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि ब्रिटिश-भारत से सम्बन्ध स्थापित किए बिना उनका काम ही नहीं चल सकता। इस प्रकार अपने राज्य में बिलकुल पाश्चात्य ढङ्ग पर स्वराज्य संस्थाएँ स्थापित करने और ब्रिटिश-भारत से मित्रता रखने से केवल प्रजा का ही उपकार न होगा, राजाओं के मान-मर्यादा की भी रक्षा होगी।

अगले अंक में

हमें खेद है कि स्थानाभाव के कारण हम इस अङ्क में कितने ही महत्वपूर्ण लेखों को स्थान नहीं दे सके हैं। उनको शीघ्र ही प्रकाशित करने की चेष्टा की जायगी। अगले अङ्क के कुछ लेखों के नाम देखिए:—

(१) हास्य-रस के समर्थ लेखक श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव का वर्तमान राजनीतिक आन्दोलन सम्बन्धी एक एकाङ्की नाटक।

(२) श्रीयुत चतुरसेन शास्त्री जी लिखित मुग़ल-दर्बार की रहस्यपूर्ण घटनाएँ।

(३) प्रो० बेनीमाधव जी अग्रवाल, एम० ए० की "सफल क्रान्ति के कुछ आधार"।

(४) रूसी क्रान्तिकारी दल का घोषणा-पत्र।

(५) भारतीय अछूतों की समस्या।

परन्तु अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इन स्वराज्य संस्थाओं की स्थापना देशी राज्यों में किस प्रकार हो? इसके आन्दोलन का मार्ग अत्यन्त कण्टकाकीर्ण है। शायद ही ऐसी कोई रियासत हो, जहाँ प्रजा को साधारण भाषण, लेखन और सभा आदि के अधिकार प्राप्त हों। ऐसी परिस्थिति में कोई राजनैतिक आन्दोलन उठाना आसान काम नहीं है। इसलिए अपने इन अधिकारों के लिए यदि रियासतों की प्रजा ब्रिटिश गवर्नमेंट की सहायता द्वारा राजाओं पर ज़ोर डालती हैं, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

सार्वभौम शक्ति से रियासतों का सम्बन्ध

राजाओं से ब्रिटिश गवर्नमेंट के सम्बन्ध की जाँच करने के लिए हाल ही में जो बटलर कमिटी नियुक्त हुई थी, उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुए बहुत दिन नहीं बीते। उस कमेटी के समक्ष राजाओं की ओर से वकालत करते हुए सर लैसली स्कॉट ने कहा था कि, राजा महाराजाओं का सम्बन्ध भारत गवर्नमेंट से नहीं, सीधा सार्वभौमिक शक्ति (Paramountcy) या ब्रिटिश पार्लामेंट से है और इसलिए भारत की गवर्नमेण्ट रियासतों की नीति में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती! परन्तु स्कॉट साहब के इस कथन की पुष्टि इतिहास से नहीं होती। वास्तव में राजाओं का सम्बन्ध सदैव भारत के प्रमुख शासक गवर्नर-जनरल-इन-कौंसिल से रहा है और वे सदैव रियासतों के कार्यों में हस्तक्षेप करते आए हैं। रियासतों का सम्बन्ध सीधा सार्वभौमिक शक्ति (Paramount power) से जोड़ लेने से ब्रिटिश सलाहगीरों का मन्तव्य यह प्रतीत होता है कि भारतवर्ष दो विभागों में—ब्रिटिश भारत और भारतीय-भारत (देशी रियासतें)—बँट जावे और उन दोनों में कभी ऐक्य स्थापित न होने पावे!! इन दोनों के बीच में सदैव फूट का एक अलंघ्य पहाड़ खड़ा रहे। भारत के बड़े-बड़े विचारकों ने इस नीति पर यही मत दिया है। परन्तु भारतीय नरेशों के हृदय में यह बात अच्छी तरह जम गई है कि पार्लामेण्ट से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने से भारत-गवर्नमेण्ट उनकी नीति में हाथ न डाल सकेगी और वे अपना स्वेच्छाचारी शासन सदैव स्थापित रख सकेंगे। शासन-विधान (constitution) के अनुसार ये युक्तियाँ कितनी ही सारगर्भित क्यों न हों; परन्तु भारत गवर्नमेण्ट और रियासतों का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक दूसरे के बिना उनका काम एक क्षण भी नहीं चल सकता। कुछ नरेशों को यह सन्देह है कि भारत में स्वराज्य की स्थापना हो जाने पर न जाने उनकी क्या परिस्थिति होगी? हाल ही में बीकानेर के महाराजा ने अपने एक भाषण में यह बिलकुल स्पष्ट कर दिया है कि ब्रिटिश भारत में स्वराज्य की स्थापना होने पर भी देशी नरेश सुरक्षित रहेंगे; और उन्हें कोई हानि न उठानी पड़ेगी।

यह प्रश्न प्रायः उठा करता है कि सार्वभौमिक शक्ति को रियासतों की नीति में हस्तक्षेप करने का कहाँ तक अधिकार होना चाहिए? इस सम्बन्ध में देशी राज्यों की कमिटी (Indian States Committee) का यह निर्णय कि सार्वभौमिक शक्ति को किसी रियासत की आन्तरिक नीति में हस्तक्षेप करने का अधिकार वहीं तक रहे, जहाँ तक उसका सम्बन्ध रियासतों में स्वराज्य संस्थाएँ स्थापित करने से है, अत्युत्तम प्रतीत होता है। परन्तु जब तक वहाँ ऐसी संस्थाएँ स्थापित न हो जायँ और प्रजा के हाथ में राजाओं के अत्याचारों से बचने का कोई अधिकार न आ जाय तब तक सार्वभौमिक शक्ति को ऐसे अत्याचारी शासन का अन्त करने या उसमें हस्तक्षेप करने का अधिकार होना चाहिए। कमेटी के इस निर्णय का स्वागत सभी विद्वानों और रियासतों की प्रजा ने किया है।

संयुक्त सभा

उपर्युक्त युक्तियों से देशी रियासतों और ब्रिटिश-भारत में ऐक्य स्थापित करने की आवश्यकता प्रतीत हो जाती है। इस ऐक्य को चिरस्थायी बनाने के लिए ब्रिटिश-भारत और रियासतों की एक संयुक्त-सभा (Federation) की बड़ी आवश्यकता है। परन्तु निकट-भविष्य में उसकी स्थापना की कोई आशा नहीं की जा सकती। क्योंकि ५६२ रियासतों के प्रतिनिधियों की सभा का प्रबन्ध कोई आसान कार्य न होगा। इसके लिए केवल दो ही उपाय हैं, एक तो यह कि छोटी-छोटी रियासतें अपने पास की बड़ी-बड़ी रियासतों से मिल जायँ और वे सम्मिलित रूप में अपने प्रतिनिधि संयुक्त-सभा में भेजें; और दूसरा यह कि जो रियासतें प्रान्तों में अकेली-दुकेली पड़ गई हैं, वे उन प्रान्तों में मिला ली जायँ। यह समस्या व्यावहारिक रूप में विकट होगी; परन्तु सम्भव है कि यदि उन छोटे राजाओं की मान-मर्यादा के अनुसार दूसरी रीति से उन्हें सन्तोषित कर दिया जाय तो वे रियासतों पर से अपना अधिकार छोड़ने के लिए राज़ी हो जायँ।

* * *

रेलवे के एक बड़े दफ़्तर का कोई कर्मचारी संयोग-वश बहिरा हो गया। सभी बड़े अफ़सर उसके काम से प्रसन्न थे और उसे नौकरी से अलग नहीं करना चाहते थे। वे लोग मिल कर सलाह करने लगे कि उसे कौन सा काम दिया जाय।

एकाएक एक नया अफ़सर बोल उठा—उसको कम्प्लेण्ट डिपार्टमेन्ट (शिकायत-विभाग) में रख दीजिए।

* * *

डॉक्टर साहब रोगी को देखने के लिए उसके घर पहुँचे। वे बोले—शराब पीने के बारे में मैंने जो हिदायत की थी उस पर आप अमल कर रहे हैं न ?

रोगी—जी हाँ, मैं हर रोज़ छै पेग शराब से अधिक नहीं पीता।

डॉक्टर—यह क्या, मैंने तो सिर्फ़ तीन पेग पीने को कहा था।

रोगी—मैंने एक दूसरे डॉक्टर को भी बुलाया था और उन्होंने भी तीन पेग पीने को कहा है ; इसलिए मैं दोनों की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ !

* * *

स्त्री—क्यों, आप विदेशी सिगरेट पी रहे हैं ? इसका तो बॉयकॉट किया गया है। क्या खद्दर पहिनने वालों को यही उचित है ?

पति—इसीलिए तो कहा जाता है कि औरतों को अक़्ल नहीं होती। तुम बॉयकॉट का मतलब भी समझती हो ?

स्त्री—क्या ?

पति—बॉयकॉट का मतलब है विदेशी माल को जला कर नष्ट कर देना। जैसे विलायती कपड़ों की होली जलाई जाती है, उसी तरह मैं भी इसको जला रहा हूँ।

* * *

बच्चा—माँ, मैना किसको कहते हैं ?

माँ—बेटा, मैना एक पक्षी होता है।

बच्चा—क्या उसके दो पङ्ख होते हैं ?

माँ—हाँ, उसके पङ्ख होते हैं।

बच्चा—क्या वह उड़ भी जाता है ?

माँ—हाँ, बेटा।

बच्चा—तो अब मेरी आया (धाय) भी उड़ जायगी, क्योंकि पापा उसको छाती से लगा कर कह रहे थे—'मेरी मैना।'

माँ—(ग़ुस्से को रोकते हुए) तो वह ज़रूर उड़ जायँगी।

दूसरे दिन उठने पर बच्चे ने देखा कि सचमुच आया नहीं है, और उसने समझा कि वह उड़ गई।

* * *

मैजिस्ट्रेट—(गिरहकट से) तुमने किस तरह उसकी जेब से रुपए का बटुआ निकाला कि उसको पता ही न लगा।

मुल्ज़िम—इसकी तरकीब मैं फ़ीस पाने पर बतलाया करता हूँ ?

* * *

प्रश्न—वर्णमाला की उत्पत्ति कहाँ से हुई ?

उत्तर—वर्णमाला की उत्पत्ति कहाँ से हुई, इसका ठीक-ठीक जवाब नहीं दिया जा सकता। क्योंकि इसका विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ है, जिस प्रकार मनुष्य और अन्य सब चीज़ों का विकास होता है। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि किसी बुद्धिमान या ज्ञानी मनुष्य ने किसी जगह बैठ कर वर्णमाला या अक्षरों की रचना न की थी, और यह भी हमको मालूम है कि वर्णमाला का आरम्भ चित्रों के स्वरूप में हुआ था। जिस प्रकार बच्चा अक्षर-ज्ञान प्राप्त करने से पहले तस्वीरों द्वारा पढ़ता है और विभिन्न चीज़ों का ज्ञान प्राप्त करता है, उसी प्रकार मनुष्यों ने भी चित्रों द्वारा लिखना-पढ़ना आरम्भ किया था। धीरे-धीरे यह तस्वीरें सरल होती गईं और अन्त में उन्होंने अक्षरों का रूप धारण कर लिया।

* * *

प्रश्न—रेल कब और कैसे चली ?

उत्तर—रेल के इञ्जिन का सब से पहला आविष्कारक इङ्गलैण्ड का जॉर्ज स्टीफ़ेनसन नामक व्यक्ति था, जो एक ग़रीब आदमी था और मामूली नौकरी पर मज़दूरी करके अपना और अपने कुटुम्ब का पेट भरता था। उसे शुरू से ही भाप से चलने वाली गाड़ी बनाने का शौक़ था। २७ सितम्बर, सन् १८२५ के दिन उसने एक अच्छा इञ्जिन बना कर उसके द्वारा रेलगाड़ी चला कर दिखलाई। उसकी चाल पन्द्रह मील फ़ी घण्टा थी। इस घटना के पश्चात् जॉर्ज स्टीफ़ेनसन का नाम समस्त यूरोप में हो गया और बड़े-बड़े बादशाह उसको बुलाने लगे। थोड़े ही दिनों में तमाम यूरोप में रेल का प्रचार हो गया और वहाँ के लोगों ने संसार के दूसरे देशों में उसका प्रचार किया।

* * *

प्रश्न—आँखों की भौंहें किस काम आती हैं ?

उत्तर—यह बड़ा अच्छा सवाल है और इसके बारे में हम सबको जानकारी होनी चाहिए। पर कितने ही बड़ी उम्र के आदमी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। भौंहों से शारीरिक लाभ भी है और वे सुन्दरता को भी बढ़ाती हैं। अगर हमारे भौंहें न होतीं, तो परिश्रम करने से हमारे मस्तक से जो पसीना बहता वह सीधा हमारी आँखों में चला आता। पसीना हानिकारक चीज़ है और वैसे भी उसको आँखों में जाने से हम अच्छी तरह देख भी नहीं सकते। भौंहें उस पसीने को रोक लेती हैं और बग़ल से निकाल देती हैं।

* * *

केसर की क्यारी

डाली फूलों की

[नाख़ुदायसख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

बुलबुल का चुराया दिल नाहक़, यह ख़ाम ख़याली फूलों की।
लेती है तलाशी बादेसबा, अब डाली-डाली फूलों की॥

माना कि लुटाया रातों को गुलज़ार में मोती शबनम ने!
जब सुबह हुई, सूरज निकला, तो जेब थी ख़ाली फूलों की!!

आती है ख़िज़ाँ अब रुख़सत कर, ज़िन्दा जो रहे फिर आएँगे!
हमसे तो न देखी जाएगी, माली पामाली फूलों की!!

फिर रुत बदली, फिर अब्र उठा, फिर सर्द हवाएँ चलने लगीं!
हो जाय परी, बन जाय दुल्हन; अब डाली-डाली फूलों की!!

हारों में गुँथे, जकड़े भी गए, गुलशन भी छुटा, सीना भी छिदा!
पहुँचे मगर उनकी गरदन तक, यह ख़ुश-इक़बाली फूलों की!!

बुलबुल को यह समझा दे कोई, क्यों ख़ून के आँसू रोती है!
उड़ जायगी सुर्ख़ी फूलों से, मिट जायगी लाली फूलों की!!

हम अपने दिल में दाग़ों को, यों देखते हैं, यूँ जाँचते हैं!
करता है निगहबानी जैसे, गुलज़ार में माली फूलों की!!

गुलज़ारे-जहाँ को जब देखा, तो शक्ल नज़र आई मुझको!
आलम से अलग, आलम से जुदा, आलम से निराली फूलों की!!

गुलचीं की भी नज़रें पड़ती हैं, सरसर के भी झोंके आते हैं!
हो ऐसे में किससे, क्यों कर, कब तक, रखवाली फूलों की!!

हर मिसरे में, हर शेर में है, गुलहाय मज़ामीं का जलवा!
ऐ "नूह" कहूँ इसको मैं ग़ज़ल, या समझूँ डाली फूलों की?

शैदाये वतन हम हैं!

गिरफ़्तारे बला बताब महज़ूँ ख़सता-तन हम हैं।
मगर इस पर भी वजहे ज़ीनते रङ्गे-चमन हम हैं!

सितमगर क़ितना जू अय्यार ज़ालिम से कोई कह दे—
कि सौदा है वतन का सर में, शैदाए वतन हम हैं!!

लिबासे हुब्बे मुलकी नुच के रङ्ग अपना दिखाएगा!
बनेंगे जिससे क़ाहे ज़ख़्म के, वह पैरहन हम हैं!!

हमारी रौशनी से रौशनी में आज दुनिया है!
अँधेरा दूर जिससे होगया, ऐसी किरन हम हैं!!

हमें ताज़ीम से है काम, मन्दिर हो कि मस्जिद हो।
हरम में शेख़ हम हैं, बुतकदे में बरहमन हम हैं!!

इरादा है बढ़ा कर इरतबाते हिन्दुओ मुस्लिम;
दिखा दें दुश्मनों को सूरते गङ्गो-जमन हम हैं!!

न वह अगला तराना है, न वह अगला फ़िसाना है।
ज़माने में हमारा अब, गया-गुज़रा ज़माना है!!*

* यह लाजवाब कविता कविवर "बिस्मिल" जी ने स्थानीय पुरुषोत्तम पार्क में कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के मेम्बरान की गिरफ़्तारी के अवसर पर पढ़ी थी, जो बहुत पसन्द की गई है। पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि 'बिस्मिल' और 'भविष्य' एक ही वस्तुओं के दो भिन्न-भिन्न नाम हैं!

—स० 'भविष्य'

कहानी फूलों की

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

रह जायगी कहने सुनने को गुलशन में कहानी फूलों की,
कै रोज़ यह आलम फूलों का, दुनिया है यह फ़ानी फूलों की।

गुलज़ार में आया मौसिमे गुल अल्लाह रे! जवानी फूलों की,
अब फूल के बुलबुल कहती है, फूलों से कहानी फूलों की!

सैय्याद के घर में कहता है, यूँ कोई कहानी फूलों की,
जाँची, परखी, देखी, भाली; मैंने भी जवानी फूलों की!

ऐ बादेसबा! यह ज़ुल्मो-सितम!! पत्ते भी अलग, शाख़ें भी जुदा,
गुलशन में न रहने पाएगी, क्या कोई निशानी फूलों की?

जब मौसमे-गुल का ज़िक्र आया, तो अश्क बहाए गुलचीं ने,
तसवीर की सूरत फिरने लगी, आँखों में जवानी फूलों की?

वह महफ़िले-गुल बाक़ी न रही, वह अहले चमन बाक़ी न रहे,
अब कौन सुनाएगा हमको, दिलचस्प कहानी फूलों की?

गुलचीं भी मुख़ालिफ़, सरसर भी; कुछ बस नहीं चलता बुलबुल का,
मिट्टी में मिलाई जाती है, पुर-जोश जवानी फूलों की!

गुलशन में न क्योंकर दिल बहले, वह सुनते हैं, मैं सुनता हूँ!
फूलों से फ़िसाना बुलबुल का, बुलबुल से कहानी फूलों की!

बुलबुल के मुक़द्दर से बेशक, तक़दीर इसी की अच्छी है।
चल फिर के सबा ही चूमती है, क्या-क्या पेशानी फूलों की!

मज़मून के गुल क्योंकर न खिलें "बिस्मिल" फिर सफ़हए-काग़ज़ पर,
सौ रङ्ग से लिक्खी है तुमने, ख़ुश रङ्ग कहानी फूलों की!!

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

फिरते हैं क्या सोच कर वह इस तरह अकड़े हुए,
मज़हबी झगड़ों में हैं दिन-रात जो जकड़े हुए!

उनसे हम बँगले पे कहने जा रहे थे राज़े-दिल,
रह गए कुछ सोच कर, अपनी ज़बाँ पकड़े हुए!

कुछ लिखें 'बिस्मिल' तो आफ़त लिख के सर पर मोल लें,
सब हैं क़ानूनी शिकञ्जों में बहुत जकड़े हुए!!

× × ×

मुँह से हम कहते हैं भगवान का दर्शन मिल जाय,
और है पेट का यह हुक्म कि भोजन मिल जाय!!

कोई अरमान नहीं इसके सिवा ऐ 'बिस्मिल'
उनके फ़ैशन से हमारा कहीं फ़ैशन मिल जाय!!

× × ×

पाजामे की इज़्ज़त नहीं पतलून के आगे,
क्यों बहस अबस हम करें क़ानून के आगे।

पामालिए तौक़ीर से डरते हो जो 'बिस्मिल'
तो सर न उठाना कभी क़ानून के आगे!!

× × ×

जगद्गुरु का फ़तवा !

[प्रतिवादि भयङ्कर श्रीमत्स्वामी वृकोदरानन्द जी जगद्गुरु]

"हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः !"

कुछ लोगों की राय है कि सखी नौकरशाही ने श्रीमान पण्डित मोतीलाल जी नेहरू को छोड़ कर बड़ी ग़लती की है। परन्तु बात असल यह है कि जब देश में चोचलेबाज़ी के लिए नौजवान काफ़ी मिल रहे हैं तो—'ऐसे वृद्ध अपङ्ग को कौन बाँधि भुस देई।'

एक तो महँगी का ज़माना, दूसरे आमदनी का टोटा ! तिस पर पण्डित जी का रुग्न शरीर ! सखी की शराब की पवित्र आमदनी पर हज़रत पहले ही पानी फेर चुके थे। ऐसी हालत में बेचारी कहाँ से लाती दवा-इलाज के लिए पैसे और आठो पहर की तीमारदारी के लिए समय !

यद्यपि पण्डित जी जब से मूँछें मुँड़ाने लगे थे, तब से नौजवानों के भी कान कतरते थे और सखी भी आप पर दिलोजान से फ़िदा थी। अल्लाहताला ने दिल का अरमान पूरा कर लेने का स्वर्ण-सुयोग भी दिया था, परन्तु दईमारी बीमारी ने सारा मज़ा ही किरकिरा कर दिया। अब लॉर्ड इरविन महोदय एक ऑर्डिनेन्स निकाल दें कि कोई लीडर जेल जाने पर बीमार न पड़ा करे।

बम्बई के किसी एडवोकेट जनरल महोदय ने 'फ़तवा' दिया है कि बहिष्कार हर हालत में ग़ैर क़ानूनी है, चाहे वह विदेशी माल का हो या कौन्सिलों का। सरकार को चाहिए कि उपर्युक्त एडवोकेट महोदय को शीघ्र ही 'डॉक्टर ऑफ़ लॉ' की उपाधि से विभूषित कर अपना लीगल रिमेम्ब्रेन्सर बना ले। क्योंकि ऐसे जन्मजन्मा जीव संसार में बहुत कम मिलते हैं !

परन्तु आश्चर्य तो यह है कि क़ानून के इतने बड़े दिग्गज होकर भी एडवोकेट महोदय ने विलायती शराब छोड़ने को ग़ैरक़ानूनी काम नहीं बतलाया। हालाँ कि सरकार को इस पवित्र रोज़गार से आमदनी भी काफ़ी होती है और सर्वसाधारण को भी ग़म-ग़लत करने का सुलभ साधन हाथ लगता है। फिर ऐसी अमूल्य वस्तु का बहिष्कार ग़ैरक़ानूनी क्यों नहीं माना जा सकता।

पञ्जाब की पुलिस ने स्वर्गवासी लाला लाजपतराय के मकान की तलाशी लेकर वाक़ई बड़ी बुद्धिमानी का काम किया है। सरकार को चाहिए कि स्वर्ग में लाला जी के कामों की देख-रेख करने के लिए भी कोई जासूस नियुक्त कर दे।

रुपए की तङ्गी से बम्बई की सरकार ने अपने कर्मचारियों का वेतन घटाने का विचार किया है। बाज़ार मद्दा होने पर किसी सेठ ने भी अपने कर्मचारियों को लिखा था कि "कमरी ओढो सत्तू खाव, अब ही काम निकारे जाव !" कभी न कभी तो सुदिन आएगा ही।

कलकत्ता के भारत-बन्धु 'स्टेट्समैन' की राय है कि राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स का अध्यक्ष किसी ऐसे आदमी को बनाना चाहिए जो भारत के बारे में कुछ न जानता हो। इसलिए विलायत के लॉर्ड चान्सलर को इसका अध्यक्ष बनाना चाहिए। बात बन्धुवर ने बावन तोले पाव रत्ती ठीक कही है। क्योंकि "यादृशी शीतला देवी तादृशी खर बाहनो।"

कुष्टिया के एक वकील साहब से सरकार दौलत मदार की ओर से नोटिस देकर पूछा गया है कि चूँकि उन्होंने किसी वालण्टियर को अपने घर में स्थान दिया है, इस लिए उन पर मामला क्यों न चलाया जाय? ज़रूर चलाया जाय। हमारी तो राय है कि उन माता-पिताओं पर भी मामले चलाए जायँ जिन्होंने वालण्टियर बच्चे पैदा किए हैं ! [illegible]र अगर गर्भाधान के पूर्व ही कोई ऐसी शर्त दम्पतियों से करा ले तो और भी अच्छा हो।

गोरों की देखादेखी अर्द्ध-गोरे भी जोश में आ गए हैं और कालों को कुचल डालने के लिए लँगोट कस कर तैयार हैं। इस देश का नमक जब सात समुद्र तेरह नदी पार वालों को व्याकुल कर देता है तो जो इसी देश के जन्मे और बढ़े हैं उन्हें भला कैसे चैन से रहने दे सकता है ? आशा है, अर्द्ध-गोरे भाई भी अपने दिल का अरमान पूरा कर डालेंगे।

इलाहाबाद कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी ने आसाम कॉङ्ग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी के पास एक पचास रुपए का बीमा भेजा था, उसे सरकार ने बीच ही में ज़ब्त कर लिया। जलियाँवाला बाग़ में घुस कर पुलिस ने कॉङ्ग्रेसियों की झोपड़ियाँ नष्ट कर दीं। इससे मालूम होता है कि यूरोपियन एसोसिएशन ने जो मुजर्रब नुस्ख़ा बतलाया था, वह सरकार को पसन्द आ गया है। मगर इधर 'मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की !' यह युक्ति भी चरितार्थ होती जा रही है। इसलिए हमारी तो

(शेष मैटर ३४ वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

बेचारा सम्पादक

कुछ समझ कर सोच कर भरिए असर मज़मून में। आपने कुछ लिख दिया और आ गए क़ानून में ॥

—सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुत्री और धरसाना के नमक-सत्याग्रह की सञ्चालिका श्रीमती मणि बहिन को भूमि-कर बन्द करने का आन्दोलन करने के अभियोग में ५ महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। उन्हें 'बी' क्लास में रक्खा गया है।

—कुमारी दिलशाद सैयद ने मातृभूमि को अपनी सेवाएँ अर्पित करने के लिए हाल ही में एफ़० ए० से कॉलेज का अध्ययन छोड़ा था। आपने बम्बई के कॉङ्ग्रेस बुलेटीन के सम्पादकत्व का भार अपने ऊपर लिया था। इसके फल-स्वरूप आप गिरफ़्तार कर ली गईं और ३ महीने की क़ैद की सज़ा दी गई।

—पुलिस ने मसूर (पूना) के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्कूल पर से राष्ट्रीय झण्डा उतार लिया। बाद में उसने राममन्दिर पर से भी राष्ट्रीय झण्डा उतार कर अग्नि में स्वाहा कर दिया। गाँव वालों के प्रतिरोध करने पर बहुत से व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिए गए।

—यरवदा जेल में रतीलाल नाम के स्वयं-सेवक की मृत्यु के उपलक्ष में अहमदाबाद में ६ सितम्बर को नङ्गे सर काले झण्डों का जुलूस निकाला गया था। शहीद की लाश की अनुपस्थिति में उसका फ़ोटो माला पहना कर कुर्सी पर घुमाया गया।

—अहमदाबाद के एक मिल-मालिक श्री० अम्बालाल साराभाई की धर्मपत्नी श्रीमती सरलादेवी को ५०० रुपया जुर्माना हुआ है। जुर्माना न देने पर डेढ़ माह के लिए उन्हें जेल-यात्रा करनी पड़ेगी।

—सिन्ध के हाईकोर्ट के जुडीशियल कमिश्नर ने सक्खर के वकील श्री० चौथराम टी० बालेचा और सन्तदास ईंदानमल लालवानी वकील की सनदें सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण छीन लीं।

—श्री० फ़रीदुल हक़ अन्सारी की गिरफ़्तारी के पश्चात् नई दिल्ली की वार-कौन्सिल के नए डिक्टेटर श्री० आसफ़अली भी १८ सितम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली में सत्याग्रह-आश्रम और कॉङ्ग्रेस को ग़ैर-क़ानूनी क़रार देकर गवर्नमेण्ट ने ११२ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए थे। उनमें से ७२ स्वयंसेवकों को ३-३ माह की सख़्त क़ैद और ५०-५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई। जुर्माना न देने पर उन्हें १५-१५ दिन की सख़्त सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—दिल्ली के १२ वालण्टियर, जो सड़कों पर तख़्ती लिए घूम रहे थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। तख़्तियों पर लिखा था कि—"हम ग़ैरक़ानूनी सभा के मेम्बर हैं, यदि जी चाहे तो पकड़ लो।"

—२० सितम्बर को पुलिस ने दिल्ली के सत्याग्रह आश्रम पर दुबारा धावा किया और १५६ वालण्टियरों को गिरफ़्तार कर ले गई। साथ में सब काग़ज़-पत्र और रजिस्टर भी लेती गई। बाद में उसने दिल्ली के चौथे डिक्टेटर मौलाना अहमद सईद और मङ्गतराम कोतवाल बाला को भी दफ़ा १२४ में गिरफ़्तार कर लिया।

—लाहौर के प्रोफ़ेसर रामगोपाल शास्त्री से एक साल के लिए दस हज़ार रुपए की ज़मानत माँगी गई थी। उनके इन्कार करने पर उन्हें एक साल की सादी सज़ा दी गई। वे 'बी' क्लास में रक्खे गए हैं।

—अमृतसर में कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी के सदस्य और शहर कमिटी के सभापति मुहम्मद इस्माईल ग़ज़नवी और जनरल सेक्रेटरी भोलानाथ, ग़ैरक़ानूनी सभा के सदस्य होने के कारण, गिरफ़्तार कर लिए गए।

—लाहौर शहर के डिक्टेटर लाला हेमराम, वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी को ग़ैर-क़ानूनी क़रार देने के बाद, गिरफ़्तार कर लिए गए। लाला ठाकुरदास की स्त्री पूरन देवी भी उसी अपराध में गिरफ़्तार की गईं और उन्हें चार माह की सज़ा दी गई।

—अमृतसर में रूपलाल और रोशनलाल नाम के क्रमशः १० और १२ साल के दो लड़के, कॉङ्ग्रेस की डुग्गी पीटने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए। उनमें से हर एक पर ५०) जुर्माना हुआ, न देने पर एक-एक माह की सख़्त सज़ा।

—लाहौर के श्री० लाला रामसहाय कपूर (शहीद राजपाल के पिता), भगवानदास बीड़ी मर्चेण्ट और लाला लछमनदास गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अमृतसर में सिगरेट की दुकानों पर पिकेटिङ्ग अभी तक जारी है और लोगों के झुण्ड के झुण्ड तमाशा देखने को वहाँ रोज़ एकत्रित होते हैं। कॉङ्ग्रेस विलायती सिगरेटों के विरुद्ध ज़बरदस्त प्रचार कर रही है। केवल एक दिन में वहाँ इस सम्बन्ध में छः गिरफ़्तारियाँ हुईं।

—भङ्ग में पुलिस ने सुन्दरलाल मानचन्द नामक एक १३ वर्ष के लड़के को दफ़ा १२४ ए में उसके पिता की दुकान पर गिरफ़्तार किया और उसके हाथों में हथकड़ी डाल कर कोतवाली ले गई।

—१८ सितम्बर को पञ्जाब के ग्यारहवें डिक्टेटर श्री० आर० सी० सैनिक को दो हज़ार की ज़मानत देने से इनकार करने पर एक साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई।

—इटावा के गवर्नमेण्ट कॉलेज पर पिकेटिङ्ग पूर्ववत् जारी है। १५ सितम्बर को जो स्त्रियाँ गिरफ़्तार हुई थीं उन पर २५) से ५०) रुपए तक जुर्माना हुआ; पर उन्होंने देने से इनकार किया। तो भी वे यह कह कर छोड़ दी गईं कि उनकी जायदाद में से जुर्माना वसूल कर लिया जायगा। इस सम्बन्ध में वहाँ १८ सितम्बर तक ६० गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं। वालण्टियरों का व्यवहार सौजन्यपूर्ण है।

—१५ सितम्बर को पुलिस ने भीकनपुर के सत्याग्रह कैम्प पर धावा किया और २२ वालण्टियरों को, जो उस समय वहाँ उपस्थित थे, गिरफ़्तार करके ले गई।

—बनारस में १७ सितम्बर को भोला नामक भङ्ग और गाँजे के ठेकेदार के घर पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में १४ वालण्टियर गिरफ़्तार किए गए।

—कलकत्ते में १७ सितम्बर को बड़े बाज़ार में पिकेटिङ्ग के अभियोग में ९ स्त्री स्वयंसेविकाएँ और १२ पुरुष वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए। तारीख़ १८ को उसी सम्बन्ध में २ स्त्रियों और ८ पुरुषों की गिरफ़्तारी की गई। उनमें से ४ स्त्रियों को चार-चार माह की सादी और एक वालण्टियर को ९ माह की सख़्त सज़ा हुई।

—१५ सितम्बर को रानपुर (बङ्गाल) में सबेरे पुलिस ने स्वर्गीय बाबू पूरनचन्द सेन वकील के घर की केवल दो माह के अन्दर तीसरी बार तलाशी ली। उसे वहाँ कोई आपत्तिजनक चीज़ नहीं मिली। पर वह उनके पुत्र श्री० सुरेशचन्द्र सेन को बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर ले गई।

(शेष समाचार ४७वें पृष्ठ पर देखिये)

जगद्गुरु का फ़तवा

(३३वें पृष्ठ का शेषांश)

सम्मति है कि सरकार एक दफ़े शाहमदार की मज़ार पर धरना दे आवे। केवल इलाज मुआलिजे से ही काम न चलेगा।

परन्तु श्राद्ध का सब से अधिक पुण्य सञ्चय किया हमारी पुण्यवती सखी नौकरशाही ने। उनके घर मानो बारहमासी 'पितर पख' था। खोपड़ियों का श्राद्ध, क़ानून और नियम का श्राद्ध, मनुष्यता और सभ्यता का श्राद्ध, ऑर्डिनेन्स और दफ़ा १४४ का श्राद्ध, कॉङ्ग्रेस तथा अहिंसात्मक आन्दोलन के साथ ही सखी ने देश के सभी बड़े-बड़े नेताओं का भी जीते जी श्राद्ध कर डाला! 'तृप्यन्ताम्! तृप्यन्ताम्' के तुमुल रव से आकाश गूँज उठा।

बम्बई के आन्ध्र-निवासी विलायती कपड़े वालों ने सरकार से प्रार्थना की है कि वे अब विलायती कपड़े का कारोबार नहीं करेंगे, इसलिए उनकी दूकानों के सामने पिकेटिङ्ग करने वाले गिरफ़्तार न किए जाएँ। परन्तु रोग की दवा रोगी के इच्छानुसार थोड़े ही होती है। लेहाज़ा सरकार को चाहिए कि वह आँख मूँद कर स्वयंसेवकों को पीसती रहे।

'कैपिटल' के भाई डिचर की राय है कि राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में साइमन रिपोर्ट के दूसरे भाग पर बहस-मुबाहिसा करके उसी की सिफ़ारिशों के अनुसार कोई 'निरगन्धाइव किम्शुकाः' शासन-प्रणाली भारत में क़ायम कर दी जाए। भाई डिचर तो बड़े उदार और समझदार मालूम पड़ते हैं, मालूम होता है, इन्हें पॉलिटिक्स पढ़ाने में इनके बुज़ुर्गों ने काफ़ी कौड़ें ख़र्च किया है।

इस साल पितृपक्ष में श्राद्धों की ख़ासी धूम रही। बिहार और संयुक्त प्रान्त में वर्षा न होने पर भी वहाँ के सनातनियों ने पितरों को पानी देने में कोताही न की। रेगिस्तानी ऊँटों की तरह बरसों के लिए खाद्य-पानी पेटों में भर कर पितर लोग सकुशल अपने-अपने स्थानों पर लौट गए।

ऐन पितृपक्ष में ज़रूरत से ज़्यादा जल बरसा कर इन्द्र महाराज ने भी बम्बई और बङ्गाल की फ़सल का श्राद्ध कर डाला। उत्तर भारत में प्रायः सर्वत्र ही सूखे श्राद्ध की धूम रही। परन्तु अन्त में भगवान इन्द्र ने पितरों पर कृपा कर दी। नहीं तो बेचारों को ख़ाली हाथ ही लौटना पड़ता।

सब से अधिक धूमधाम से श्राद्ध किया पञ्जाब की गवर्नमेण्ट ने, एक साथ ही सारी की सारी कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैरक़ानूनी क़रार देकर। अगर अन्यान्य प्रदेशों की सरकारें भी ऐसी ही सुबुद्धि से काम लें तो लगे हाथ सारे देश के पितर तर जाएँ।

हिन्दू-जाति की नौका के 'सोल' कर्णधार श्रीमान डॉक्टर मुञ्जे बहादुर अगर राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स में न जायँगे तो हिन्दुत्व तहस-नहस (Ruin) हो जाएगा। अच्छा किया आपने कि जाने को तैयार हो गए और बेचारे बाइस करोड़ हिन्दुओं को मुसत से बचा लिया।

* * *

- शैलबाला ... १)
- विसर्जन ... ॥)
- राजरानी ... ॥)
- नल-दमयन्ती ... ॥)
- सत्य-हरिश्चन्द्र ... ।≡)
- अनुराग-वाटिका ... ।-)
- बनारस ... १॥)
- स्वयं स्वास्थ्य-रक्षक ... ॥।=)
- अजेय तारा ... १॥)
- विश्राम बाग़ ... १॥)
- पृथ्वीराज चौहान ... ॥)
- छत्रपति शिवाजी ... ॥)
- सहधर्मिणी ... ॥)
- रूपनगर की राजकुमारी... ३)
- विचित्र डाकू ... १)
- पाप की छाप ... २)
- शैतान पार्टी ... ॥)
- रमणी-नवरत्न ... १)
- विचित्र घटना ... १)
- सावित्री-सत्यवान ... ॥)
- अत्याचार का अंश ... ॥)
- सदाचार-दर्पण १),२), २॥)
- भारत का इतिहास ... (सजिल्द) ३)
- मज़ेदार कहानियाँ ... १)
- सूक्ति-सरोवर ... २॥)
- कौतूहल भण्डार ... १)
- अन्याचारी ... ॥)
- पहेली बुझौवल ... ॥)
- सच्ची कहानियाँ ... ॥)
- इक्कीस खेल ... ।≡)
- नवीन पत्र-प्रकाश ... ॥=)
- वक्तृत्वकला ... १)
- स्वदेश की बलिवेदिका ... ॥=)
- शाहज़ादा और फ़क़ीर ... ॥=)
- बाल नाटकमाला ... ।=)
- गज्जू और गप्पू की मज़ेदार कहानियाँ ... ≡)
- इल-बिल की कहानियाँ ... ≡)
- विद्यार्थियों का स्वास्थ्य ... ।=)
- अदलू और बदलू की कहानियाँ ... ≡)
- टीपू और सुल्तान ... ।)
- नटखटी रीछू ... ≡)
- भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज ... ॥=)
- परीक्षा कैसे पास करना ? ... ।=)
- पत्रावली ... ।-)
- पञ्चवटी ... ।=)
- रङ्ग में भङ्ग ... ।)
- आत्मोपदेश ... ।)
- स्वाधीनता के सिद्धान्त ... ॥)
- सन्त-जीवनी ... ॥)
- अमृत की घूँट ... २॥)
- विचित्र परिवर्तन ... २)
- पौराणिक गाथा ... ।-)
- गुब्बारा ... ॥=)
- दस कथाएँ ... ।=॥
- अनूठी कहानियाँ ... ।=)
- मनोहर कहानियाँ ... ।=)
- हँसी-खेल ... ॥)
- डल्लू और मल्लू ... ≡)
- विज्ञान-वाटिका ... ।=)
- परियों का देश ... १)
- खोपड़ेसिंह ... ।)
- बालक ध्रुव ... ।)
- बच्चू का ब्याह ... ।-)
- नानी की कहानी ... ।=)
- मज़ेदार कहानियाँ ... ।-)
- बाल कवितावली ... १)
- रसभरी कहानियाँ ... ॥)
- बहता हुआ फूल २।), ३)
- मि० व्यास की कथा २।), ३)
- प्रेम-प्रसून १=), १॥=)
- विजया १॥), २)
- भिखारी से भगवान ... १)
- मूर्खमण्डली ॥=), १=)
- जीवन का सद्व्यय १), १॥)
- साहित्य-सुमन ॥), १)
- विवाह-विज्ञापन ... १॥)
- चित्रशाला (दो भाग) ३।),४।)
- देव और बिहारी १॥), २।)
- मञ्जरी १), १॥)
- कर्बला १॥), २)
- रावबहादुर ... ॥)
- प्राणायाम ॥=), १=)
- पूर्व-भारत ॥=), १=)
- बुद्ध-चरित्र ॥), १)
- भारत-गीत ... ॥=)
- वरमाला ॥), १)
- एशिया में प्रभात ॥), १)
- कर्मयोग ।), ॥)
- संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ... ॥=)
- लबड़धोंधों ॥=), १=)
- हठयोग ... १=)
- कृष्णकुमारी १), १॥)
- प्राचीन पण्डित और कवि ॥=), १=)
- जयद्रथवध ।॥), १=)
- तात्कालिक चिकित्सा १), १॥)
- किशोरावस्था ... ॥=)
- अद्भुत आलाप ... १)
- मनोविज्ञान ॥), १)
- अश्रुपात ... १)
- ईश्वरीय न्याय ... ॥)
- सुख तथा सफलता ... ।)
- किसान की कामधेनु ... ।=)
- प्रायश्चित्त (प्रहसन) ... ≡)
- संसार-रहस्य ... १॥)
- नीति रत्नमाला ... ।)
- मध्यम व्यायोग ... =)
- सम्राट चन्द्रगुप्त ... ।)
- वीर भारत ... ॥)
- केशवचन्द्र सेन १=),१॥=)
- बङ्किमचन्द्र चटर्जी १=),१॥=)
- देशहितैषी श्रीकृष्ण ... =)
- द्विजेन्द्रलाल राय ... ।)
- भारत की विदुषी नारियाँ ॥)
- वनिता-विलास ... ॥)
- पद्माञ्जलि ... ॥)
- लक्ष्मी ... ॥=)
- ऊषा ... ॥=)
- भगिनी-भूषण ... =)
- सुघड़ चमेली ... =)
- खिलवाड़ ... ।)
- देवी द्रौपदी ... ॥)
- महिलामोद ... ॥)
- गुप्त सन्देश ... ॥)
- कमला-कुसुम ... १)
- मिश्रबन्धु-विनोद (तीन भाग) ... ७।)
- शिवराज विजय ... २॥)
- सत्य हरिश्चन्द्र (नाटक) ।=)
- माधव निदान ... १॥)
- अनङ्ग-रङ्ग ... ३)
- कुटुम्ब-चिकित्सा ... १॥)
- रामायण का अध्ययन ... ॥)
- रचना नवनीति ... १)
- प्रवेशिका व्याकरण बोध... १।)
- अयोध्याकाण्ड रामायण ... ॥)
- बाल महाभारत ... ।=)
- अलङ्कार चन्द्रिका ... ॥)
- बालबोध रामायण ... ॥)
- अपर प्रकृति पाठ ... ।=॥
- मिडिल प्रकृति परिचय ... ।-॥
- शिशुवर्ण परिचय ... -)
- वर्णमाला और पहाड़े ... -)
- शासन और सहयोग ... =॥
- शिशुकथा माला ... =)
- कन्या-साहित्य ... =॥
- पत्र-चन्द्रिका ... ।)
- बालक ... ।)
- स्वराज्य-संग्राम ... ॥=)
- आर्यसमाज और कॉङ्ग्रेस ।-)
- हिन्दू-सङ्गठन ... १)
- शिक्षा-प्रणाली ... ॥)
- भारत-रमणी-रत्न ... ॥=)
- सन्ध्या पर व्याख्यान ... ।)
- शिशु-सुधार ... ॥)
- पुत्री-शिक्षक ... ॥)
- स्त्री-शिक्षा ... ।=)
- मनोहर पुष्पाञ्जलि ... ॥)
- गृहिणी-शिक्षा ... ॥)
- गुलदस्ता ... ॥)
- अक्षरबोध ... ॥)
- उर्वशी ... १)
- ब्रह्मचर्य-शिक्षा ... ॥=)
- तपस्वी भरत ... ।-)
- दिलचस्प कहानियाँ ... ।=)
- सूखा हुआ फूल ... ≡)
- हितोपदेश ... ॥)
- पृथ्वीराज रासो ... ॥)
- नवीन बीन ... २)
- बिहार का साहित्य ... १॥)
- जयमाल ... ।=)
- प्रेम ... ।=)
- मधु-सञ्चय ... ।=)
- अशान्त ... ॥)
- लङ्कसिंह ... ।)
- विद्यापति ... ।)
- अहिल्याबाई ... ।)
- सौरभ ... १)
- नवपल्लव ... १।)
- देहाती दुनिया ... १॥)
- प्रेम-पथ ... २)
- पुरुष-परीक्षा ... १)
- सुधा-सरोवर ... १)
- त्यागी भरत ... ।)
- गुरु गोविन्दसिंह ... ।)
- एकतारा ... १)
- अशोक ... १।)
- निर्माल्य ... १)
- बाल-विलास ... ।)
- विपञ्ची ... ।)
- दुलहिन ... ।)
- शेरशाह ... ।)
- शिवाजी ... ।)
- माइकेल मधुसूदन ... ।)
- भगवान बुद्ध ... १)
- जङ्गल की मुलाक़ात ... -)
- यार की अँगूठी ... =)
- सूरजमुखी ... ।=)
- आसमानी लाश ... =)
- चोर की तीर्थ-यात्रा ... ।)
- आशिक़ की कमबख़्ती ... =)
- सूर्यकुमार सम्भव ... ।)
- भयानक विपत्ति ... =)
- श्रीदेवी ... =)
- भीषण सन्देह ... ॥)
- माधवी ... =)
- पिशाच पति ... ॥)
- अद्भुत हत्याकारी ... ≡)
- कविता-कुसुम ... ।)
- बगुला भगत ... ॥)
- बिलाई मौसी ... ॥)
- सियार पाँड़े ... ॥)
- पृथ्वीराज ... १।)
- शिवाजी ... ॥)
- राजर्षि ध्रुव ... ॥=)
- सती पद्मिनी ... ॥=)
- शर्मिष्ठा ... ॥=)
- मनीषी चाणक्य ... १।)
- अर्जुन ... ॥=)
- चक्रवर्ती बप्पाराव ... ॥=)
- वेश्यागमन ... २)
- नारी-विज्ञान ... २)
- जनन-विज्ञान ... ३)
- गृहिणी-भूषण ... ॥=)
- भारतीय नीति-कथा ... ।-)
- दम्पति शिक्षक ... ।=)
- नाट्यकला दर्शन ... ॥।-)
- शाही डाकू ... १॥)
- शाही जादूगरनी ... १॥)
- शाही लकड़हारा ... २)
- शाही चोर ... ।)
- गृहधर्म ... ॥)
- बालराम कथा ... ॥)
- माता और पुत्र ... १॥=)
- जातीय कविता ... १॥)
- भाग्यवन्ती २),२।)
- अनोखा जासूस ... २)
- सुप्रभात ... १॥)
- प्राचीन हिन्दू माताएँ ... १)
- महाभारत ... १।)
- विधवाश्रम ... १॥)
- चालाक चिड़ी ... =)
- मुसाफ़िर की तड़प ... ।-)
- यूरोपीय सभ्यता का दिवाला ।=)
- अमृत में विष ... ।=)
- मुसाफ़िर पुष्पाञ्जलि ... ।)
- जया ... ।-)
- मानवती ... ।-)
- धर्म-अधर्म युद्ध ... ॥)
- नवीन भारत ... ॥)
- श्रीकृष्ण-सुदामा ... ।=)
- ग़रीब हिन्दुस्तान ... १।)
- भारतीय सभ्यता ... १)
- हरफ़नमौला ... १)
- हरद्वार का इतिहास ... ।=)
- बोल्शेविज़्म ... १।=)
- मुसाफ़िर भजनावली ... ।≡)
- असहयोग दर्शन ... १।)
- चेतावनी सङ्कीर्तन ... ।)
- जन्मबधैया सङ्कीर्तन ... ।)
- श्रीसतवानी सङ्कीर्तन ... ।=)
- महात्मा गाँधी ... ≡)
- गँवार मसला ... =॥
- सेवाश्रम ... २॥)
- महात्मा विदुर ... १)
- महामाया ... ॥=)
- शकुन्तला ... १=)
- कृष्णकुमारी ... ।=)
- क्षात्रधर्म ... -)
- बलिदान ... ≡)
- भारतीय देश ... ॥)
- चित्रशाला ... ॥)
- दम्पति सुहृद ... १।)
- रानी जयमती ... ॥)
- तपस्वी अरविन्द के पत्र ... ।)
- सुभद्रा ... ।)
- हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास ।=)
- ग्रीस का इतिहास ... १=)
- श्रीबद्री-केदार यात्रा ... ।)
- नवयुवको स्वाधीन बनो... ॥)
- असहयोग का इतिहास ... ॥)
- सफलता की कुञ्जी ... ।)
- पाथेयिका ... ।)
- रोम का इतिहास ... ॥)
- अपना सुधार ... ॥)
- महादेव गोविन्द रानाडे... ॥)
- दिल्ली अथवा इन्द्रप्रस्थ ... ।=)
- गाँधी-दर्शन ... १)
- बिखरा फूल ... १।)
- प्रेम ... ।=)
- इटली की स्वाधीनता ... ॥)
- गाँधी जी कौन हैं ? ... ।-)
- फ़्रान्स की राज्य-क्रान्ति का इतिहास ... १=)
- आकाश की बातें ... ≡)
- जगमगाते हीरे ... १)
- मनुष्य-जीवनकी उपयोगिता ॥=)
- भारत के दस रत्न ... ।-)
- वीरों की सच्ची कहानियाँ ॥)
- आहुतियाँ ... ।-)
- वीर राजपूत ... १)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १।॥)

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की खुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य केवल १॥)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य केवल १)

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष नहीं रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; सजिल्द तथा सचित्र; तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) स्था० ग्रा० से २)

जननी जीवन

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस दूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठा कर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। मूल्य १।); स्थायी ग्राहकों से ॥।=)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य केवल आठ आने!

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) स्थायी ग्राहकों से ॥-)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक भी हैं। शीघ्र ही मँगाइए। मूल्य लागत-मात्र केवल ।) है।
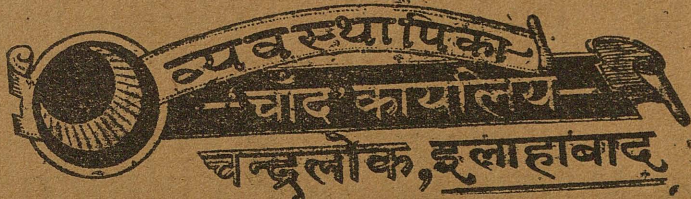
इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोर्स्ट और ब्रियो का "डैमेज्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है!!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा-बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। मू० २॥) स्था० ग्रा० से १॥।=)

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल ॥।); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकाश और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल ३); स्थायी ग्राहकों से २)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ।।)

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। ऐसी कथाओं का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रत्येक त्योहार के सम्बन्ध में जितना अधिक खोज से लिखा जा सकता था, लिखा गया है। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १।।); स्थायी ग्राहकों से १=)

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी-सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-साहित्य को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुबन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुबन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। एक बार हाथ में लेते ही आप बिना समाप्त किए नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। मूल्य केवल १); स्थायी ग्राहकों से ॥।)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

'चाँद' कार्यालय

की

अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्य-पूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। यह उन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द एवं तिरङ्गे कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य ३) रु०; स्थायी ग्राहकों से २।)

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए, युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस उपन्यास में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्त-र्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें!

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्त-काल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनोमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं! मूल्य केवल २)

Registered No. A—

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक महापुरुष ईसा का उज्ज्वल चरित्र स्वर्ग की विभूति है, विश्व का गौरव है और मानव-जाति का पथ-प्रदर्शक है। इस पुस्तक में उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ तथा उनके अमृतमय उपदेशों का वर्णन बहुत ही सुन्दरता-पूर्वक किया गया है। पुस्तक का एक-एक शब्द विश्व-प्रेम, स्वार्थ-त्याग एवं बलिदान के भावों से ओत-प्रोत है। किस प्रकार महात्मा ईसा ने कठिन से कठिन आपत्तियों का मुक़ाबला धैर्य के साथ किया, नाना प्रकार की भयङ्कर यातनाओं को हँसते हुए झेला एवं बलिदान के समय भी अपने शत्रुओं के प्रति उन्होंने कैसा प्रेम प्रदर्शित किया—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में दिव्य-ज्योति उत्पन्न हो जायगी।
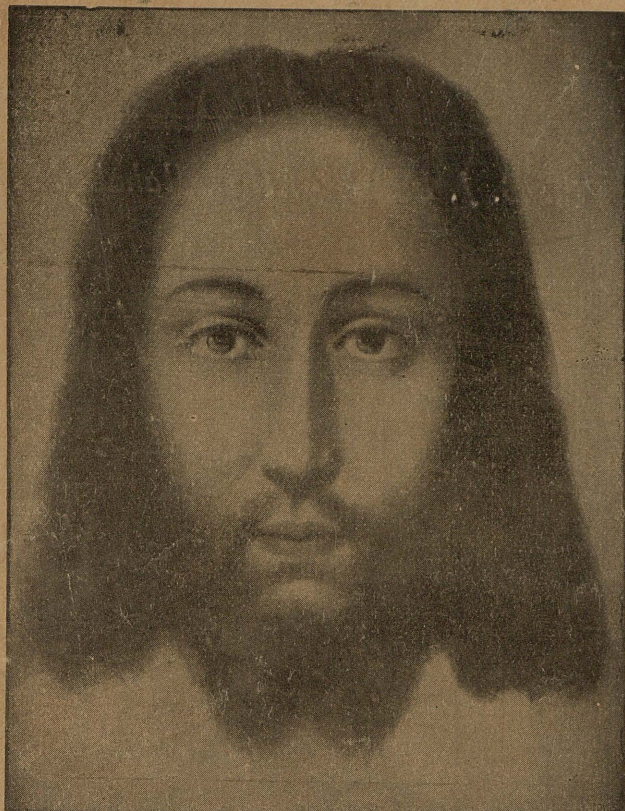
दुर्भाग्यवश आज महापुरुष ईसा का चरित्र साम्प्रदायिकता के सङ्कीर्ण वायु-मण्डल में सीमित हो रहा है। वह जिस रूप में साधारण जनता के सामने चित्रित किया जाता है, वह अलौकिक तो है, परन्तु आकर्षक नहीं। प्रस्तुत पुस्तक में सुयोग्य लेखक ने इन भावनाओं से भी दूर, ईसा के विशुद्ध चरित्र को चित्रण करने का प्रयास किया है।

पुस्तक की भाषा अत्यन्त मधुर, मुहावरेदार एवं ओजस्विनी है। भाव अत्यन्त उच्च कोटि के, सुन्दर और मँजे हुए; शैली अभिनव, आलोचनात्मक और मनोहारिणी; विषय चरम, चित्रण प्रथम श्रेणी का है। छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक, तिरङ्गे एवं सादे चित्रों से सुशोभित, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

सफल माता

यदि आपको अपने बच्चे प्यारे हैं, यदि आप उन्हें सर्वदा नीरोग और स्वस्थ रखना चाहते हैं तो आज ही इस पुस्तक की एक प्रति मँगा कर स्वयं पढ़िए और गृह-देवियों को पढ़ाइए। मूल्य के.)

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में हिन्दू-समाज की वैवाहिक कुरीतियाँ, उनके कारण अधिकांश दम्पतियों का नारकीय जीवन एवं स्त्री-समाज की करुण दशा का वर्णन बड़े ही मनोहर ढङ्ग से किया गया है। मूल्य केवल २)

Printed and Published by Mr. R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.